RNI No. [illegible]

144

CUG ખાતે સાયબર ક્રાઈમ અને સાયબર સુરક્ષા પર વર્કશોપ

ધીનગર સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે વર્કશોપનું આયોજન

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

દેશમાં સાયબર ક્રાઈમના કેસ સતત વધી રહ્યા છે. પોલીસ પ્રશાસન પણ સાયબર ગુનાઓને રોકવા માટે શ્રેષ્ઠ પ્રયાસો કરે છે આવું ગાંધીનગર સાયબર ક્રાઇમ પોલીસ અધિકારી સુશ્રી હેતલ એન વાઘેલાજીનું કહેવું છે. તેઓ ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર સ્ટડીઝ ઇન સ્ટ્રેટેજિક ટેક્નોલોજીસ, સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યુરિટી સ્ટડીઝ અને ગાંધીનગર રેન્જ સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત વર્કશોપમાં વક્તા તરીકે બોલી રહ્યા હતા. સુશ્રી વાઘેલાએ જણાવ્યું હતું કે સાયબર ગુનાઓ અટકાવવા આપણે સજાગ રહેવું પડશે. તેમણે કહ્યું કે ડિજિટલ વાતાવરણની સારી સમજ સાથે, આપણે વિવિધ સાયબર ગુનાઓને ઓળખવા માટે પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ. આવી સ્થિતિમાં જાગૃતિ વધારીને સાયબર ક્રાઈમ પર અંકુશ લાવી શકાય છે. આ દરમિયાન તેમણે CUG ના ફેકલ્ટી સભ્યો અને વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ પોલીસ કેસ સ્ટડીમાં બહાર આવેલી હકીકતો રજૂ કરી હતી અને ફિશિંગ, સોશિયલ એન્જિનિયરિંગ અને ઓનલાઈન પ્રાઈવસીને લગતી સમસ્યાઓ વિશે અધ્યાપકોને વિગતવાર માહિતી પૂરી પાડી હતી. "સાયબર સિક્યોરિટી: રોલ ઑફ ઇન્ડિવિજ્યુઅલ્સ" વિષય પર આયોજિત આ વર્કશોપમાં સ્કૂલ ઑફ નેશનલ સિક્યોરિટી સ્ટડીઝના ડીન પ્રો. સંજય કુમાર ઝાએ અધ્યક્ષ વ્યાખ્યાનમાં જણાવ્યું હતું કે, વર્તમાન સમયમાં સાયબર ક્રાઈમ આપણા માટે એક મોટો ખતરો બની ગયો છે, આપણે સાથે આવવું જોઈએ અને એકબીજાનું રક્ષણ કરવું જોઈએ. CSCT, SNSS ના સંયોજક ડો. શ્રીશકુમાર તિવારીએ જણાવ્યું હતું કે વર્તમાન પેઢી સુરક્ષાની કટોકટી અનુભવી રહી છે, આ માટે આપણે આપણા સુરક્ષા આચાર નિયમોના ઉલ્લંઘનો પર ધ્યાન આપવું પડશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

‹ PREVIOUS POST

HDFC બેંક Q2 પરિણામો

NEXT POST ›

લોકીની બીજી સીઝન હવે ડિઝની+ હોટસ્ટાર પર

RELATED POSTS

BYJU એ જૂન માટે તેના

શિક્ષણ મંત્રીએ શિક્ષણ સામગ્રી

પારુલ યુનિવર્સિટીના

जयपुर
महानगर टाइम्स
मिशन पत्रकारिता का प्रहरी
मूल्य : 2 रुपए | पृष्ठ : 12 | वर्ष : [illegible] | अंक : 318
देश और दुनिया की बड़ी खबरें देखने के लिए स्कैन करें और महानगर टाइम्स को लाइक व सब्सक्राइब करें।
Facebook YouTube X twitter
www.mahanagartimes.com
जयपुर, शनिवार, 7 अक्टूबर, 2023
जयपुर, कोटा, दौसा, अलवर, उदयपुर एवं जोधपुर से एक साथ प्रकाशित

'चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित

भविष्य की सभी संभावनाओं के लिए भारत के पास उपलब्ध है व्यापक अवसर : डॉ. सागर

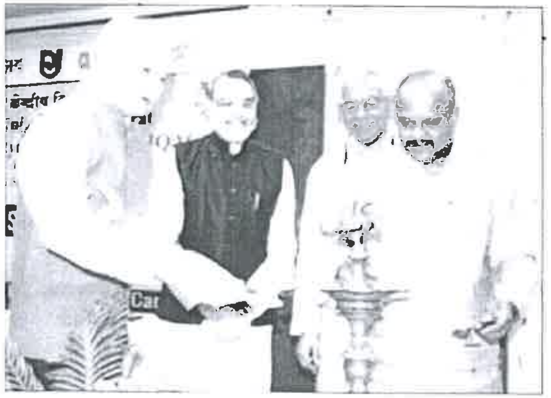

महानगर संवाददाता

गांधीनगर। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन प्रकोष्ठ की ओर से 'चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय संस्कृति पत्रिका मंच के महासचिव डॉ. चन्द्रकान्त सागर ने अतिथि वक्ता के रूप में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। चंद्रयान-3 की सफल प्रक्षेपण से इसने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास भविष्य की सभी संभावनाओं के लिए व्यापक अवसर है। उन्होंने कहा कि भारत विश्व का एकमात्र संस्कृति और कौशल सम्पन्न देश है। हमें हमारे तकनीकी कौशल, अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अद्वितीय ज्ञान को दुनिया में देने का समय है। भारतीय ज्ञान परंपरा असीम ऊर्जा का स्रोत है।

डॉ. सागर ने कहा कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक कई वैज्ञानिक है जिन्होंने हमारी सभ्यता को विश्व भर में प्रचारित किया। यही ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी प्रतिबिंबित होती दिख रही है। संस्कृत की शब्दावली का प्रभाव प्रत्येक भाषा में [illegible] है। इस दौरान कार्यक्रम पूर्व में आयोजित हुए संस्कृत संभाषण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

स्पेस साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति बनकर उभरे है हम : डॉ. पांडे

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञान में पहले हम सिर्फ नासा का ही नाम जानते थे लेकिन अब नासा के साथ इसरो भी जुड़ गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमें हमारी संस्कृति पर गौरवान्वित होने का अवसर दिया है। इस दौरान उन्होंने चंद्रयान 3 की लॉन्चिंग से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। चंद्रयान-3 के आंकड़ों पर फिलहाल काम चल रहा है। हाल ही में आदित्य एल-1 भी हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। स्पेस साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति बनकर हम उभरे है।

भारत जीता जागता राष्ट्रपुरुष : प्रो दुबे

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने कहा कि भारत जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। [illegible] के माध्यम से ही ज्ञान का प्रसार पूरे विश्व में हुआ है। [illegible] विज्ञान की शुरुआत में ही [illegible] है। हमारे यहां सभी विषयों में शिक्षा दी जाती थी। हमारे यहां [illegible] में शिक्षा देने की परंपरा भी रही है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

संस्थापक- स्व. श्री राजेंद्र के. गोधा
वर्ष : 44 अंक : 157 पेज-12 मूल्य : 2.50
विश्वास आपका, साथ हमारा...
समाचार जगत
www.samacharjagat.com
शनिवार
जयपुर, 7 अक्टूबर 2023, आश्विन कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् 2080

'सिद्ध आत्मा की प्राप्ति के लिए तप...'
पृष्ठ 10 पर

चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान

भारत में ज्ञान का अथाह भंडार : डॉ. ओम प्रकाश

142

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

एजेंसी

गांधीनगर. भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। चंद्रयान 3 की सफल प्रक्षेपण से हमने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास भविष्य की सभी संभावनाओं के लिए व्यापक अवसर है। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र की ओर से "चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में विश्व संस्कृत पत्रकारिता परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय संस्कृति पत्रिका संघ के महासचिव डॉ. बलदेवानंद सागर ने बतौर अतिथि वक्ता अपने वक्तव्य में कहा कि भारत विश्व का एकमात्र संस्कृति और कौशल सम्पन्न देश है। हमें हमारे तकनीकी कौशल, अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अद्वितीय ज्ञान को दुनिया में देने का समय है। भारतीय ज्ञान परंपरा असीम ऊर्जा का स्रोत है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक कई वैज्ञानिक हैं जिन्होंने हमारी सभ्यता को विश्व भर में प्रचारित किया। यही ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी प्रलक्षित होती दिख रही है। डॉ. सागर ने संस्कृत भाषा के बारे में कहा कि यह अद्भुत है। संस्कृत की शब्दावली का प्रभाव प्रत्येक भाषाओं में है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञान में पहले हम सिर्फ नासा का ही नाम जानते थे लेकिन अब नासा के साथ इसरो भी जुड़ गया है। कर्नाटक की धरती के बाद गुजरात की धरती भी गौरवान्वित है कि इसरो अहमदाबाद में भी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमें हमारी संस्कृति पर गौरवान्वित करने का अवसर दिया है। इस दौरान उन्होंने चंद्रयान 3 की लॉन्चिंग से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। चंद्रयान-3 के आंकड़ों पर फिलहाल काम चल रहा है। हाल ही में आदित्य एल -1 भी हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। स्पेस साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति बनकर हम उभरे है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे ने कहा कि भारत जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। भारत ने पूरे विश्व को प्रभावित और संस्कारित किया है। संस्कृत भाषा के माध्यम से ही ज्ञान का प्रवाह पूरे विश्व में हुआ है। हमारे देश में ज्ञान-विज्ञान की शुरू से ही परंपरा रही है। हमारे यहां सभी विधाओं में शिक्षा दी जाती थी। हमारे यहां 64 कलाओं में शिक्षा देने की परंपरा भी रही है। 1835 के पहले तक हमारे देश में गुरुकुल संचालित होते थे। मैकाले ने अपनी रिपोर्ट में भी इस बारे में लिखा है कि भारत एक समृद्ध और संस्कृति सम्पन्न देश है। जितने भी सूत्र हाल ही के वर्षों में जो सूत्र प्रतिपादित हुए है उन सभी के बारे में सभी व्याख्या पूर्व की जा चुकी है। आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र के निदेशक प्रो. अतानु महापात्र ने बताया कि भारतीय ज्ञान परम्परा से ही हमें हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी मिल सकती है। इस दौरान कार्यक्रम के समापन पर पूर्व में आयोजित हुए संस्कृत संभाषण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0°C
न्यूनतम तापमान: 21.0°C
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

दैनिक **संजीवनी टुडे**
समय के साथ बढ़ता अखबार

वर्ष: 10 अंक: 126 जयपुर, शनिवार, 07 अक्टूबर 2023 पृष्ठ:8 मूल्य: ` 1.50

चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में बोले एक्सपर्ट्स

भारत में ज्ञान का अथाह भंडार : डॉ. ओम प्रकाश पांडे

■ संजीवनी टुडे

गांधीनगर। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। चंद्रयान-3 को सफल प्रक्षेपण से हमने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास भविष्य की सभी संभावनाओं के लिए व्यापक अवसर है। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र की ओर से चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में विश्व संस्कृत पत्रकारिता परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय संस्कृति पत्रिका संघ के महासचिव डॉ. बलदेवानंद सागर ने बतौर अतिथि वक्ता अपने वक्तव्य में कहा कि भारत विश्व का एकमात्र संस्कृति और कौशल सम्पन्न देश है। हमें हमारे तकनीकी कौशल, अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अद्वितीय ज्ञान को दुनिया में देने का समय है। भारतीय ज्ञान परंपरा असीम ऊर्जा का स्रोत है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक कई वैज्ञानिक हैं जिन्होंने हमारी सभ्यता को विश्व भर में प्रचारित किया। यही ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी प्रलक्षित होती दिख रही है। डॉ. सागर ने संस्कृत भाषा के बारे में कहा कि यह अद्भुत है। संस्कृत की शब्दावली का प्रभाव प्रत्येक भाषाओं में है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञान में पहले हम सिर्फ नासा का ही नाम जानते थे लेकिन अब नासा के साथ इसरो भी जुड़ गया है। इस दौरान उन्होंने चंद्रयान 3 की लॉन्चिंग से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। चंद्रयान-3 के आंकड़ों पर फिलहाल काम चल रहा है। हाल ही में आदित्य एल-1 भी हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। स्पेस साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति बनकर हम उभरे हैं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने कहा कि भारत जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। भारत ने पूरे विश्व को प्रभावित और संस्कारित किया है। आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र के निदेशक प्रो. अतानु महापात्र ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा से ही हमें हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी मिल सकती है। इस दौरान कार्यक्रम के समापन पर पूर्व में आयोजित हुए संस्कृत संभाषण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

य एषु सुप्तेषु जागर्ति

राजस्थान पत्रिका

patrika.com
/rajasthanpatrika
/rpbreakingnews
/rajasthan_patrika

वर्ष 22 | पृष्ठ 12 | ₹5.00 | अहमदाबाद | शनिवार 07 अक्टूबर 2023 | आश्विन ... संवत् 2080

पत्रिका

चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा पर विशिष्ट व्याख्यान

भारतीय ज्ञान परंपरा समृद्ध विरासत : डॉ. सागर

गांधीनगर @ पत्रिका भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। चंद्रयान 3 के सफल प्रक्षेपण ने हमने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास भविष्य की नई संभावनाओं के लिए व्यापक अवसर है। गांधीनगर स्थित गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजी) में विश्व संस्कृत पत्रकारिता परिषद नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. बलदेवानंद सागर ने यह बात कही। सीयूजी के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र की ओर से 'चन्द्रयान 3 और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी परिलक्षित होती दिख रही है। संस्कृत भाषा अद्भुत है। इसकी शब्दावली का प्रभाव अन्य भाषाओं में है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञान में पहले हम सिर्फ नासा का ही नाम जानते थे लेकिन अब नासा के साथ इसरो भी जुड़ गया है। उन्होंने चंद्रयान 3 की लॉन्चिंग से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की।

गांधीनगर स्थित गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय में चंद्रयान 3 पर व्याख्यान में दीप प्रज्वलन करते अतिथि।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने कहा कि संस्कृत भाषा के माध्यम से ही ज्ञान का प्रवाह पूरे विश्व में हुआ है। हमारे देश में ज्ञान विज्ञान की शुरू से ही परम्परा रही है।

आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र के निदेशक प्रो. अतनु महापात्र ने बताया कि भारतीय ज्ञान परम्परा से ही हमें हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी मिल सकती है।

140

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

WWW.kalwadtimes.com आपणी खबर अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर

app kalwadtimes अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर आपणी अखबार

कालवाड़ टाइम्स

2 सेवा ही धर्म और सेवा ही कर्म के सिद्धांत पर .0... उल्लास और हास्य के साथ .0... 2

वर्ष: 10 अंक: 308 पृष्ठ: 8 प्रभात जयपुर, शुक्रवार, 7 अक्टूबर 2023 मूल्य : 2 रुपए प्रति

भारत में ज्ञान का अथाह भंडार: डॉ. ओम प्रकाश पांडे

चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में बोले एक्सपर्ट्स

कालवाड़ टाइम्स

गांधीनगर। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। चंद्रयान-3 की सफल प्रक्षेपण से हमने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के पास भविष्य की सभी संभावनाओं के लिए व्यापक अवसर है। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र की ओर से "चन्द्रयान-3 और भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में विश्व संस्कृत पत्रकारिता परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय संस्कृति पत्रिका संघ के महासचिव डॉ. बलदेवानंद सागर ने

बतौर अतिथि वक्ता अपने वक्तव्य में कहा कि भारत विश्व का एकमात्र संस्कृति और कौशल सम्पन्न देश है। हमें हमारे तकनीकी कौशल, अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अद्वितीय ज्ञान को दुनिया में देने का समय है। भारतीय ज्ञान परंपरा असीम ऊर्जा का स्त्रोत है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक कई वैज्ञानिक है जिन्होंने हमारी सभ्यता को विश्व भर में प्रचारित किया। यही ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी प्रलक्षित होती दिख रही है। डॉ. सागर ने संस्कृत भाषा के बारे में कहा कि यह अद्भुत है। संस्कृत की शब्दावली का प्रभाव प्रत्येक भाषाओं में है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश पांडे ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञान में पहले हम सिर्फ नासा का ही नाम जानते थे लेकिन अब नासा के साथ इसरो भी जुड़ गया है। कर्नाटक की धरती के बाद गुजरात की धरती भी गौरवान्वित है कि इसरो अहमदाबाद में भी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमें हमारी संस्कृति पर गौरवान्वित करने का अवसर दिया है। इस दौरान उन्होंने चंद्रयान 3 की लॉन्चिंग से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। चंद्रयान-3 के आंकड़ों पर फिलहाल काम चल रहा है। हाल ही में आदित्य एल-1 भी हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। स्पेस साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी शक्ति बनकर हम उभरे है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे ने कहा कि भारत जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। भारत ने पूरे विश्व को प्रभावित और संस्कारित किया है। संस्कृत भाषा के माध्यम से ही ज्ञान का प्रवाह पूरे विश्व में हुआ है। हमारे देश में ज्ञान-विज्ञान की शुरू से ही परंपरा रही है। हमारे यहां सभी विधाओं में शिक्षा दी जाती थी। हमारे यहां 64 कलाओं में शिक्षा देने की परंपरा भी रही है।1835 के पहले तक हमारे देश में गुरुकुल संचालित होते थे। मैकाले ने अपनी रिपोर्ट में भी इस बारे में लिखा है कि भारत एक समृद्ध और संस्कृति सम्पन्न देश है। जितने भी सूत्र हाल ही के वर्षों में जो सूत्र प्रतिपादित हुए है उन सभी के बारे में सभी व्याख्या पूरी की जा चुकी है। आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन केंद्र के निदेशक प्रो. अतानु महापात्र ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा से ही हमें हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी मिल सकती है। इस दौरान कार्यक्रम के समापन पर पूर्व में आयोजित हुए संस्कृत संभाषण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ભારતમાં જ્ઞાનનો અસીમ ભંડાર: ડૉ. ઓમ પ્રકાશ પાંડે

ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા અને ચંદ્રયાન-3 પર આયોજિત વિશેષ વ્યાખ્યાનમા નિષ્ણાતોએ વાત કરી હતી.

કમલમ્ ન્યુઝ,ગાંધીનગર.

ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા સમૃદ્ધ વારસો છે. ચંદ્રયાન-૩ના સફળ પ્રક્ષેપણ સાથે આપણે સાબિત કર્યું છે કે ભારત પાસે ભવિષ્યની તમામ શક્યતાઓ માટે વિશાળ તકો છે. ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર ઈન્ટરનલ ક્વોલિટી એન્ડ એશ્યોરન્સ દ્વારા "ચંદ્રયાન-૩ અને ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા" વિષય પર વિશેષ વ્યાખ્યાનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. વ્યાખ્યાનમાં વિશ્વ સંસ્કૃત પત્રકાર પરિષદ, નવી દિલ્હીના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને ભારતીય સંસ્કૃતિ પત્રિકા સંઘનાં મહામંત્રી ડૉ.બલદેવાનંદ સાગરે અતિથિ વક્તા તરીકે પોતાના વક્તવ્યમાં જણાવ્યું હતું કે ભારત વિશ્વનાં એકમાત્ર સંસ્કૃતિ અને કૌશલ્યથી સમૃદ્ધ દેશ છે. આ સમય છે કે આપણે આપણું ટેકનિકલ કૌશલ્ય અને અવકાશ સંશોધન પ્રત્યેનું અનોખું જ્ઞાન વિશ્વને આપીએ. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા અમર્યાદ ઉર્જાનો સ્રોત છે. પ્રાચીન કાળથી લઈને આધુનિક સમય સુધી, ઘણા એવા વૈજ્ઞાનિકો છે જેમણે સમગ્ર વિશ્વમાં આપણી સંસ્કૃતિનો પ્રચાર કર્યો છે. આ જ્ઞાન પરંપરા રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦માં પણ પ્રતિબિંબિત થતી જણાય છે. ડૉ.સાગરે સંસ્કૃત ભાષા વિશે કહ્યું કે તે અદ્ભુત છે. વિશ્વની દરેક ભાષામાં સંસ્કૃત શબ્દભંડોળનો પ્રભાવ છે. કાર્યક્રમના મુખ્ય અતિથિ જાણીતા અવકાશ વૈજ્ઞાનિક ડૉ.ઓમ પ્રકાશ પાંડેએ જણાવ્યું હતું કે પહેલા અવકાશ વિજ્ઞાનમાં આપણે માત્ર નાસાનું નામ જાણતા હતા, પરંતુ હવે જીઈ પણ નાસા સાથે જોડાઈ ગયું છે. કર્ણાટકની ધરતી પછી ગુજરાતની ધરતીને પણ ગૌરવ છે કે ઈસરો પણ અમદાવાદમાં છે. તેમણે કહ્યું કે વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ અમને અમારી સંસ્કૃતિ પર ગર્વ કરવાની તક આપી છે. આ દરમિયાન તેમણે ચંદ્રયાન ૩ના પ્રક્ષેપણને લગતી તમામ મહત્વપૂર્ણ માહિતી શેર કરી. હાલમાં ચંદ્રયાન-૩ના ડેટા પર કામ ચાલી રહ્યું છે. તાજેતરમાં આદિત્ય એલ-૧ પણ આપણા માટે મોટી ઉપલબ્ધિ છે. આપણે અવકાશ વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં એક મોટી ક્રાંતિ તરીકે ઉભરી આવ્યા છીએ. અધ્યક્ષીય પ્રવચનમાં યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. રમાશંકર દુબેએ કહ્યું કે ભારત જીવંત રાષ્ટ્ર છે. ભારતે સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત અને સંસ્કારી બનાવ્યું છે. સંસ્કૃત ભાષા દ્વારા જ સમગ્ર વિશ્વમાં જ્ઞાનનો ફેલાવો થયો છે. આપણા દેશમાં શરૂઆતથી જ જ્ઞાન અને વિજ્ઞાનની પરંપરા રહી છે. અહીં તમામ વિષયોમાં શિક્ષણ આપવામાં આવતું હતું. આપણી પાસે પણ ૬૪ કળામાં શિક્ષણ આપવાની પરંપરા છે. આપણા દેશમાં ૧૮૩૫ સુધી ગુરુકુલો કાર્યરત હતા. મેકાલેએ પોતાના અહેવાલમાં આ વિશે પણ લખ્યું છે કે ભારત એક સમૃદ્ધ અને સાંસ્કૃતિક દેશ છે. તાજેતરના વર્ષોમાં સૂચવેલા તમામ સૂત્રોને લગતી તમામ સ્પષ્ટતાઓ પૂર્ણ થઈ ગઈ છે. આઈક્યુએસીના નિયામક પ્રો. અતનુ મહાપાત્રાએ જણાવ્યું હતું કે ભારતીય જ્ઞાન પરંપરામાંથી જ આપણે આપણી પ્રાચીન શિક્ષણ પદ્ધતિ વિશે માહિતી મેળવી શકીએ છીએ. આ દરમિયાન, કાર્યક્રમના સમાપન સમયે, અગાઉ આયોજિત સંસ્કૃત સંભાષણ વર્ગમાં ભાગ લેનાર તમામને પ્રમાણપત્ર આપીને સન્માનિત કરવામાં આવ્યા હતા.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

•Printer/Publisher/Owner & Editor : Mahesh N. Patel. •Printed At :-Captial Offset 801/1, G.i.d.c.,Sector-28 Gandhinagar, Gujarat- 382028 •Published - At A-

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

સીયૂજી ખાતે સાયબર ક્રાઈમ અને સાયબર સુરક્ષા પર વર્કશોપ

કમલમ્ ન્યુઝ, ગાંધીનગર

દેશમાં સાયબર ક્રાઈમના કેસ સતત વધી રહ્યા છે. પોલીસ પ્રશાસન પણ સાયબર ગુનાઓને રોકવા માટે શ્રેષ્ઠ પ્રયાસો કરે છે. આવું ગાંધીનગર સાયબર ક્રાઈમ પોલીસ અધિકારી સુશ્રી હેતલ એન વાઘેલાજીનું કહેવું છે. તેઓ ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર સ્ટડીઝ ઈન સ્ટ્રેટેજિક ટેક્નોલોજીસ, સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યુરિટી સ્ટડીઝ અને ગાંધીનગર રેન્જ સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત વર્કશોપમાં વક્તા તરીકે બોલી રહ્યા હતા. સુશ્રી વાઘેલાએ જણાવ્યું હતું કે સાયબર ગુનાઓ અટકાવવા આપણે સજાગ રહેવું પડશે. તેમણે કહ્યું કે ડિજિટલ વાતાવરણની સારી સમજ સાથે, આપણે વિવિધ સાયબર ગુનાઓને ઓળખવા માટે પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ. આવી સ્થિતિમાં જાગૃતિ વધારીને સાયબર ક્રાઈમ પર અંકુશ લાવી શકાય છે. આ દરમિયાન તેમણે cug ના ફેકલ્ટી સભ્યો અને વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ પોલીસ કેસ સ્ટડીમાં બહાર આવેલી હકીકતો રજૂ કરી હતી અને ફિશિંગ, સોશિયલ એન્જિનિયરિંગ અને ઓનલાઈન પ્રાઈવસીને લગતી સમસ્યાઓ વિશે અધ્યાપકોને વિગતવાર માહિતી પૂરી પાડી હતી. "સાયબર સિક્યોરિટીઃ રોલ ઓફ ઈન્ડિવિજ્યુઅલ્સ" વિષય પર આયોજિત આ વર્કશોપમાં સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યોરિટી સ્ટડીઝના ડીન પ્રો. સંજય કુમાર ઝાએ અધ્યક્ષ વ્યાખ્યાનમાં જણાવ્યું હતું કે, વર્તમાન સમયમાં સાયબર ક્રાઈમ આપણા માટે એક મોટો ખતરો બની ગયો છે, આપણે સાથે આવવું જોઈએ અને એકબીજાનું રક્ષણ કરવું જોઈએ. ષ્જષ્ઠ, જહજજ ના સંયોજક ડો. શ્રીશકુમાર તિવારીએ જણાવ્યું હતું કે વર્તમાન પેઢી સુરક્ષાની કટોકટી અનુભવી રહી છે, આ માટે આપણે આપણા સુરક્ષા આચાર નિયમોના ઉલ્લંઘનો પર ધ્યાન આપવું પડશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

સીયૂજી ખાતે સાયબર ક્રાઈમ અને સાયબર સુરક્ષા પર વર્કશોપ

કમલમ્ ન્યુઝ,ગાંધીનગર

દેશમાં સાયબર ક્રાઈમના કેસ સતત વધી રહ્યા છે. પોલીસ પ્રશાસન પણ સાયબર ગુનાઓને રોકવા માટે શ્રેષ્ઠ પ્રયાસો કરે છે. આવું ગાંધીનગર સાયબર ક્રાઈમ પોલીસ અધિકારી સુશ્રી હેતલ એન વાઘેલાજીનું કહેવું છે. તેઓ ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર સ્ટડીઝ ઈન સ્ટ્રેટેજિક ટેક્નોલોજીસ, સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યુરિટી સ્ટડીઝ અને ગાંધીનગર રેન્જ સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત વર્કશોપમાં વક્તા તરીકે બોલી રહ્યા હતા. સુશ્રી વાઘેલાએ જણાવ્યું હતું કે સાયબર ગુનાઓ અટકાવવા આપણે સજાગ રહેવું પડશે. તેમણે કહ્યું કે ડિજિટલ વાતાવરણની સારી સમજ સાથે, આપણે વિવિધ સાયબર ગુનાઓને ઓળખવા માટે પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ. આવી સ્થિતિમાં જાગૃતિ વધારીને સાયબર ક્રાઈમ પર અંકુશ લાવી શકાય છે. આ દરમિયાન તેમણે cug ના ફેકલ્ટી સભ્યો અને વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ પોલીસ કેસ સ્ટડીમાં બહાર આવેલી હકીકતો રજૂ કરી હતી અને ફિશિંગ, સોશિયલ એન્જિનિયરિંગ અને ઓનલાઈન પ્રાઈવસીને લગતી સમસ્યાઓ વિશે અધ્યાપકોને વિગતવાર માહિતી પૂરી પાડી હતી. "સાયબર સિક્યોરિટી: રોલ ઓફ ઈન્ડિવિજ્યુઅલ્સ" વિષય પર આયોજિત આ વર્કશોપમાં સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યોરિટી સ્ટડીઝના ડીન પ્રો. સંજય કુમાર ઝાએ અધ્યક્ષ વ્યાખ્યાનમાં જણાવ્યું હતું કે, વર્તમાન સમયમાં સાયબર ક્રાઈમ આપણા માટે એક મોટો ખતરો બની ગયો છે, આપણે સાથે આવવું જોઈએ અને એકબીજાનું રક્ષણ કરવું જોઈએ. ષ્જષ્ઠ, જહજજ ના સંયોજક ડો. શ્રીશકુમાર તિવારીએ જણાવ્યું હતું કે વર્તમાન પેઢી સુરક્ષાની કટોકટી અનુભવી રહી છે, આ માટે આપણે આપણા સુરક્ષા આચાર નિયમોના ઉલ્લંઘનો પર ધ્યાન આપવું પડશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

CUG ખાતે ગાંધીનગર સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે સાયબર ક્રાઈમ અને સાયબર સુરક્ષા પર વર્કશોપનું આયોજન

ગાંધીનગર

દેશમાં સાયબર ક્રાઈમના કેસ સતત વધી રહ્યા છે. પોલીસ પ્રશાસન પણ સાયબર ગુનાઓને રોકવા માટે શ્રેષ્ઠ પ્રયાસો કરે છે. આવું ગાંધીનગર સાયબર ક્રાઈમ પોલીસ અધિકારી સુશ્રી હેતલ એન વાઘેલાજીનું કહેવું છે. તેઓ ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર સ્ટડીઝ ઇન સ્ટ્રેટેજિક ટેક્નોલોજીસ, સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યુરિટી સ્ટડીઝ અને ગાંધીનગર રેન્જ સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત વર્કશોપમાં વક્તા તરીકે બોલી રહ્યા હતા. સુશ્રી વાઘેલાએ જણાવ્યું હતું કે સાયબર ગુનાઓ અટકાવવા આપણે સજાગ રહેવું પડશે. તેમણે કહ્યું કે ડિજિટલ વાતાવરણની સારી સમજ સાથે, આપણે વિવિધ સાયબર ગુનાઓને ઓળખવા માટે પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ. આવી સ્થિતિમાં જાગૃતિ વધારીને સાયબર ક્રાઈમ પર અંકુશ લાવી શકાય છે. આ દરમિયાન તેમણે CUG ના ફેકલ્ટી સભ્યો અને વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ પોલીસ કેસ સ્ટડીમાં બહાર આવેલી હકીકતો રજૂ કરી હતી અને ફિશિંગ, સોશિયલ એન્જિનિયરિંગ અને ઓનલાઈન પ્રાઈવસીને લગતી સમસ્યાઓ વિશે અધ્યાપકોને વિગતવાર માહિતી પૂરી પાડી હતી. "સાયબર સિક્યોરિટી: રોલ ઓફ ઈન્ડિવિજ્યુઅલ્સ" વિષય પર આયોજિત આ વર્કશોપમાં સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યોરિટી સ્ટડીઝના ડીન પ્રો. સંજય કુમાર ઝાએ અધ્યક્ષ વ્યાખ્યાનમાં જણાવ્યું હતું કે, વર્તમાન સમયમાં સાયબર ક્રાઈમ આપણા માટે એક મોટો ખતરો બની ગયો છે, આપણે સાથે આવવું જોઈએ અને એકબીજાનું રક્ષણ કરવું જોઈએ. CSCT, SNSS ના સંયોજક ડૉ. શ્રીશકુમાર તિવારીએ જણાવ્યું હતું કે વર્તમાન પેઢી સુરક્ષાની કટોકટી અનુભવી રહી છે, આ માટે આપણે આપણા સુરક્ષા આચાર નિયમોના ઉલ્લંઘનો પર ધ્યાન આપવું પડશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

CUG ખાતે ગાંધીનગર સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે સાયબર ક્રાઈમ અને સાયબર સુરક્ષા પર વર્કશોપનું આયોજન

ગાંધીનગર

દેશમાં સાયબર ક્રાઈમના કેસ સતત વધી રહ્યા છે. પોલીસ પ્રશાસન પણ સાયબર ગુનાઓને રોકવા માટે શ્રેષ્ઠ પ્રયાસો કરે છે. આવું ગાંધીનગર સાયબર ક્રાઈમ પોલીસ અધિકારી સુશ્રી હેતલ એન વાઘેલાજીનું કહેવું છે. તેઓ ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર સ્ટડીઝ ઇન સ્ટ્રેટેજિક ટેક્નોલોજીસ, સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યુરિટી સ્ટડીઝ અને ગાંધીનગર રેન્જ સાયબર સેલના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત વર્કશોપમાં વક્તા તરીકે બોલી રહ્યા હતા. સુશ્રી વાઘેલાએ જણાવ્યું હતું કે સાયબર ગુનાઓ અટકાવવા આપણે સજાગ રહેવું પડશે. તેમણે કહ્યું કે ડિજિટલ વાતાવરણની સારી સમજ સાથે, આપણે વિવિધ સાયબર ગુનાઓને ઓળખવા માટે પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ. આવી સ્થિતિમાં જાગૃતિ વધારીને સાયબર ક્રાઈમ પર અંકુશ લાવી શકાય છે. આ દરમિયાન તેમણે CUG ના ફેકલ્ટી સભ્યો અને વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ પોલીસ કેસ સ્ટડીમાં બહાર આવેલી હકીકતો રજૂ કરી હતી અને ફિશિંગ, સોશિયલ એન્જિનિયરિંગ અને ઓનલાઈન પ્રાઈવસીને લગતી સમસ્યાઓ વિશે અધ્યાપકોને વિગતવાર માહિતી પૂરી પાડી હતી. "સાયબર સિક્યોરિટી: રોલ ઓફ ઈન્ડિવિજ્યુઅલ્સ" વિષય પર આયોજિત આ વર્કશોપમાં સ્કૂલ ઓફ નેશનલ સિક્યોરિટી સ્ટડીઝના ડીન પ્રો. સંજય કુમાર ઝાએ અધ્યક્ષ વ્યાખ્યાનમાં જણાવ્યું હતું કે, વર્તમાન સમયમાં સાયબર ક્રાઈમ આપણા માટે એક મોટો પડકાર બની ગયો છે, આપણે સાથે આવવું જોઈએ અને એકબીજાનું રક્ષણ કરવું જોઈએ. CSCT, SNSS ના સંયોજક પ્રો. શ્રીશકુમાર તિવારીએ જણાવ્યું હતું કે વર્તમાન પેઢી સુરક્ષાની કટોકટી અનુભવી રહી છે, આ માટે આપણે આપણા સુરક્ષા આચાર નિયમોના ઉલ્લંઘનો પર ધ્યાન આપવું પડશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी : रोल ऑफ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उल्लंघनों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

135

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी : रोल ऑफ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उल्लंघनों का ध्यान रखना होगा।

13K

वर्ष 22 | अंक 66 | पृष्ठ 12 | मूल्य 5.00 | अहमदाबाद, मंगलवार, 17 अक्टूबर, 2023 | आश्विन शुक्ल पक्ष तृतीया, संवत 2080

पत्रिका

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

बढ़ते साइबर क्राइम को रोकने के लिए जागरूकता जरूरी

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. देश में साइबर क्राइम के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए गुजरात पुलिस प्रशासन भी प्रयासरत हैं। यह बात गांधीनगर साइबर क्राइम के पुलिस अधिकारी हेतल वाघेला ने सोमवार को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजी) के सेंटर फॉर स्टडीज इन स्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही।

वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं। हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

WWW.kalwadtimes.com अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर
आपणी खबर
app kalwadtimes अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर
आपणों अखबार

कालवाड़ टाइम्स

2 दूसरी लिस्ट से पहले जेपी नड्डा का राजस्थान दौरा

कांग्रेस ने बारां से किया चुनावों का शंखनाद 2

वर्ष: 10 अंक: 318 पृष्ठ: 8 प्रभात जयपुर, मंगलवार, 17 अक्टूबर 2023 मूल्य : 2 रुपए प्रति

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

कालवाड़ टाइम्स

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजीज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंटस को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। "साइबर सिक्योरिटी: रोल ऑफ इंडिविजुअल्स" विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम के संयोजक सीएसएसटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उपायों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

राज्य सरकार से विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त | जयपुर, मंगलवार, 17 अक्टूबर, 2023 | राजस्थान का तेजी से लोकप्रिय होता अखबार

हमारा समाचार

अंक: 175 hamarasamachar02@gmail.com दैनिक प्रातः मूल्य: 2.50 रुपए पृष्ठ: 8

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

हमारा समाचार

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमे विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने

शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी: रोल ऑफ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा आंगनों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

www.samacharjagat.com
समाचार जगत
जयपुर, 17 अक्टूबर 2023, आश्विन शुक्ल पक्ष तृतीया संवत् 2080

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

समाचार जगत ब्यूरो

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरान उन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। "साइबर सिक्योरिटी : रोल ऑफ़ इंडिविजुअल्स" विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

गुजरात वैभव

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

गुजरात वैभव

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला आयोजित

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने

के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी-रोल ऑफ़ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उल्लंघनों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

133

गुजरात वैभव

भारत देश मात्र एक भूमि नहीं अपितु एक सांस्कृतिक इकाई : प्रो इंदुमति काटदरे

पं. दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म दर्शन को साकार करने के लिए मंदिर, श्मशान एवं पानी की अवधारणा पर कार्य करना जरूरी : प्रो. नीरजा गुप्ता

गांधीनगर। भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनो है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम एवं 'विराट में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रीयता है, चित्ति है। यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध

का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थीं। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर, 'श्मशान एवं 'पानी की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में विश्व उपभोगवाद, अज्ञान, असंस्कारिता, आत्मविश्वास एवं आत्मीयता के अभाव से ग्रस्त है। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय संस्कृति के मूल को आत्मसात किया जाए। यह मूल संस्कृति एवं समृद्धि दोनों को साथ रखकर ही प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने विषय परवर्तन करते हुए बताया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। इस दौरान प्रो. एस के अग्रवाल ने सभी आगंतुक अतिथियों का परिचय दिया।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

email : nayapadkar@gmail.com (માત્ર જાહેરખબર માટે)
(માત્ર સમાચાર માટે)
email : samacharsathi@gmail.com

નયા પડકાર
ટેલિફોન નં. ૨૫૨૮૪૦, ૨૫૩૪૪૦,૨૯૬૬૯૪
સાથી એસ્ટેટ, આણંદ

email : nayapadkar@gmail.com (માત્ર જાહેરખબર માટે)
email : samacharsathi@gmail.com (માત્ર સમાચાર માટે)

સત્ય માટે, સહુની સાથે

નયા પડકાર

(માત્ર જાહેરખબર માટે)
email : nayapadkar@gmail.com
(માત્ર સમાચાર માટે)
email : samacharsathi@gmail.com

નયા પડકાર
ટેલિફોન નં. ૨૫૨૮૪૦, ૨૫૩૪૪૦,૨૯૬૬૯૪
સાથી એસ્ટેટ, આણંદ

R.N.I. Reg. No. 43431/84 P.O. Regd. No. AND/ 39/ 2021-23 email : nayapadkar@gmail.com website : nayapadkar.in

વર્ષ : ૩૯ અંક ૧૮૮, ૧૭ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૩ રવિવાર ભાદરવા સુદ ૨ વિક્રમ સંવત ૨૦૭૯ મુદ્રક પ્રકાશક મેનેજિંગ તંત્રી : દીપકભાઈ પટેલ, ગુજરાત સાથી પ્રકાશન પ્રા.લિ. સાથી એસ્ટેટ, આણંદ Published from ANAND ટેલિફોન નં. ૨૫૨૮૪૦, ૨૫૩૪૪૦,૨૯૬૬૯૪ કિંમત : રૂ. ૨.૦૦ પાનાં : ૮

કોઈપણ ભાષામાં દેશનું નામ ભારત જ હોવું અને રહેવું જોઈએ

વિચાર

■પ્રો. રમાશંકર દુબે
કુલપતિ, ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
ગાંધીનગર

ભારત પ્રાચીન સમયથી એક સમૃદ્ધ સભ્યતા અને આધ્યાત્મિકતાલક્ષી સંસ્કૃતિ ધરાવતા રાષ્ટ્ર તરીકે જાણીતું છે. જેણે સતત સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત કર્યું છે. ભારત પોતાની પ્રજાનું પોષણ કરનાર અમૃતદાયીની 'ભારતાગ્નિ'નો પ્રદેશ છે. (ઋગ્વેદ ૫/૧૧/૧), જ... 'ભારતાગ્નિ'ના પ્રભાવથી છ... અલગ-અલગ ઋતુઓ અને ઋ... સમશિતુ, વિશાળ નદીઓ જુદી... જુદી દિશામાં વહે છે. એના કારણે... આ શસ્ય શ્યામલા કલ્પદ્રુપ ભૂમિ પર લોકો પોતાનું ભરણપોષણ મેળવે છે.

'ભારતાગ્નિ' દ્વારા પોષાયેલી પ્રાકૃતિક સંપદાથી ભરપૂર આ ભૂમિમાં સદા જ્ઞાન પ્રાપ્તિમાં લીન રહેતા મનુષ્યોની આ ભૂમિ 'ભારત' નામથી સંબોધાવા લાગી. જે ભારતાગ્નિનો પર્યાય શબ્દ છે. (વિશ્વામિત્રસ્ય રક્ષતિ બ્રહ્મેદં ભારતં જનમ-ઋગ્વેદ ૩/૫૩/૧૨).

વિષ્ણુ પુરાણમાં દેશની પ્રાદેશિક સીમાઓનો ઉલ્લેખ આ આવી રીતે કરવામાં આવ્યો છે : ' સમુદ્રસ્ય હિમાદ્રેશ્ચૈવ દક્ષિણમ્ । તદ્ ભારતં નામ ભારતી યત્ર સન્તતિઃ' એટલે કે સમુદ્રની ઉત્તરે અને હિમાલયની દક્ષિણે આવેલ પ્રદેશનું નામ ભારત છે અને એના સંતાનોને ભારતીય કહેવામાં આવે છે. સ્કંદપુરાણના અધ્યાય ૩૭ મુજબ ઋષભદેવના ભરત નામના પુત્ર હતા. જેના નામ પરથી આ ભૂમિનું નામ ભારત પડ્યું. આ ઉપરાંત ભારત નામ મહાભારતના પ્રથમ ભાગમાં શકુંતલા અને રાજા દુષ્યંતના પુત્ર ભરતના નામથી પડ્યું છે એવી પણ એક વાત માનવામાં આવે છે. ભરતના જન્મ પછી, ઋષિ કણ્વ તેમને આશીર્વાદ આપે છે કે તેઓ ચક્રવર્તી સમ્રાટ બનશે અને તેમના નામ પર આ ભૂમિ ભારતના નામે ઓળખાશે. મત્સ્ય પુરાણ (૧૧૪/૫.૬) અનુસાર લોકોનું ભરણપોષણ કરનાર આ દેશના શાસક (મનુ)ને ભારત કહેવામાં આવે છે. નાટ્યશાસ્ત્રના રચનાર ભરતમુનિ, રાજર્ષિ ભરત, દશરથના પુત્ર ભરત અને મહાભારતમાં તો ભારત નામનો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ મળે છે.

એ કહેવું તદ્દન વાજબી છે કે ભારત આપણી પ્રજામાનસનો અભિન્ન અંગ છે. ભારત માત્ર એક શબ્દ નથી, પરંતુ એક મંત્ર છે જેનું માત્ર ઉચ્ચારણ, 'ભા+ર+ત', પ્રકૃતિના ત્રણ ગુણ એટલે કે 'ભા' સત્વ (પ્રકાશ, જ્ઞાન), 'ર' એટલે રાજસ અને 'ત' એટલે તમસ, એટલે કે ત્રિવિધ શક્તિ. આના પરથી સ્પષ્ટ થાય છે કે ભારતીયોએ પોતાના દેશનું નામ ભારત રાખ્યું છે. આ બાબતમાં નોંધનીય છે કે 'ઈન્ડિયા' શબ્દ લગભગ અઢી હજાર વર્ષ પહેલા ભૌગોલિક સંદર્ભમાં વિદેશીઓ દ્વારા વપરાયેલ શબ્દ છે.

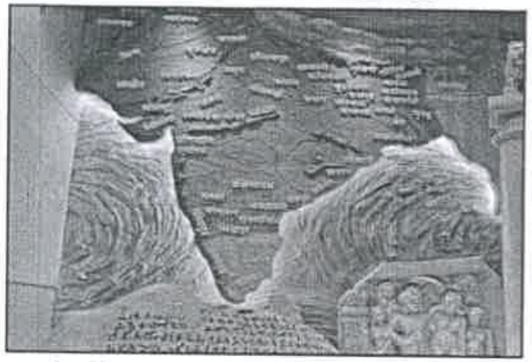

જે અંગ્રેજી શાસન દરમિયાન અંગ્રેજોએ ભારતમાં પ્રચલિત કર્યો. 'ઈન્ડિયા' શબ્દ આપણને ગુલામી માનસિકતાની સાથે અંગ્રેજો દ્વારા ભારતીય લોકોના શોષણની યાદ અપાવે છે. અંગ્રેજી શબ્દ 'મધર' ક્યારેય એ લાગણી વ્યક્ત કરી શકતો નથી જે આપણી ભાષામાં 'માં' શબ્દ દ્વારા વ્યક્ત થાય છે. 'ઈન્ડિયા' શબ્દનો ભારતની ભાષા અને સંસ્કૃતિ સાથે કોઈ સંબંધ નથી અને ન તો ઈતિહાસ સાથે કોઈ વૈચારિક સંબંધ છે. આપણા દેશનું સૌથી વધારે પ્રચલિત નામ ભારત જ રહ્યું છે. જ્યારે સિન્ધુ શબ્દ પશ્ચિમમાં ગયો ત્યારે તે ગ્રીક ભાષામાં અપભ્રંશ થઈને ઈન્દુ બની ગયો.

ચંદ્રગુપ્ત મૌર્યના સમયમાં, ગ્રીક રાજદૂત મેગસ્થનીજ પાટલીપુત્ર આવ્યા હતા, ત્યારે તેમણે ભા... વિષય પર એક પુસ્તક લખ્યું હતું, જેનું નામ ઈન્ડિકા હતું. ત્યારથી પશ્ચિમી દેશો તેને ઈન્ડિકા અથવા ઈન્ડિયા નામથી સંબોધિત કરે છે. ૨૦૦૪માં એક રાજકીય પક્ષે તેના ઘોષણાપત્રમાં ઈન્ડિયા નામ બદલીને ભારત રાખવાનું વચન આપ્યું હતું. વર્ષ ૨૦૧૫ અને ૨૦૨૦માં આ અંગે સુપ્રીમ કોર્ટમાં અરજી પણ દાખલ કરવામાં આવી ચૂકી છે.

આખરે સુપ્રીમ કોર્ટે કહ્યું કે આ મુદ્દાનો નિર્ણય સંસદ એ લેવો પડશે. આમ પણ દેશોના નામ બદલવાની પરંપરા નવી નથી. હમણાંજ ટર્કીનું નામ બદલીને તુર્કીએ કરવામાં આવ્યું. વર્ષ ૧૯૭૨માં સિલોનનું નામ બદલી ને શ્રીલંકા કરવામાં આવ્યું. બર્માનું નામ બદલીને મ્યાનમાર કરવામાં આવ્યું. એવા ઘણા ઉદાહરણો છે

જ્યાં દેશોએ વસાહતી માનસિકતામાંથી બહાર આવવા માટે પોતાના દેશના નામમાં બદલાવ કર્યા. તાજેતરમાં, G20ની કંટ્રોલ શીટ પર પ્રેસીડન્ટ ઓફ ઈન્ડિયાની જગ્યાએ પ્રેસીડન્ટ ઓફ ભારત લખવામાં આવ્યું તે દર્શાવે છે કે ભારતના મૂળ ઊંડા છે.

આ એક આવકારદાયક પગલું છે. વર્તમાન સમયની જરૂરિયાત એ છે કે વિદેશી શબ્દ ઈન્ડિયાનો ઉપયોગ કરવાને બદલે આપણે ગુલામીની માનસિકતામાંથી બહાર આવીને ભારત શબ્દનો ઉપયોગ કરીએ અને ભારત શબ્દને સત્તાવાર ઉપયોગમાં લાવવા માટે તમામ યોગ્ય પગલાં લઈએ.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

दैनिक नवज्योति Jaipur City - 04 Oct 2023 - Page 14

समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला गांधी के सिद्धांतों का अनुसरण

जी-20 की अध्यक्षता एवं मेजबानी भी गांधी के विचारों से प्रेरित

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। आज विश्व के अनेक देशों में आंतरिक अशांति, द्वंद, आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी समस्याएं एवं चुनौतियां खड़ी है और युद्ध के हालात बने हुए हैं या प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संघर्ष जारी है।

ऐसे हालातों में गांधीजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है और उन समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला गांधी के सिद्धांतों का अनुसरण करके किया जा सकता है। महात्मा गांधी के सर्वोदय के सिद्धांत की बात करें तो प्रतीत होता है, कि वे सभी का उदय करना चाहते थे। उन्होंने विकेंद्रीकरण की बात करते हुए कहा कि जब तक शासन-प्रशासन में अंतिम व्यक्ति की सहभागिता नहीं होगी तब तक देश का विकास संभव नहीं है। वे सभी धर्म का आदर करते थे और देश की आन, बान और शान के लिए उन्होंने अपनी अंतिम सांसों तक प्रयास किया। महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता का दर्जा देने के पीछे यह अवधारणा है, कि उन्होंने देशभक्ति राष्ट्रीयता की भावना से जुड़ते हुए प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान में रखकर के अपना सब कुछ न्योछावर किया।

मानव के साथ ही पर्यावरण प्रेमी थे गांधीजी

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के गांधीवादी विचार एवं शांति अध्ययन केन्द्र के विभागाध्यक्ष प्रो.(डॉ.) जनक सिंह मीना ने कहा कि मोहनदास करमचंद गांधी से महात्मा गांधी बनने की साधना बहुत लंबी रही है।

यह किसी उत्परिवर्तन का परिणाम नहीं है, अपितु ऐसे सदमार्ग, सदाआचरण, सद व्यवहार, नैतिकता और सत्य पर सतत चलने का प्रतिफल है। गांधी के जीवन को प्रारंभ से लेकर अंत तक देखते हैं तो हमें ऐसे अनेक पड़ाव देखने को मिलते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि सरल व्यक्तित्व, व्यापक एवं दूर दृष्टिकोण, मानवतावादी दृष्टिकोण, सत्य और अहिंसा की दृढ़ताभरी हुई थी। वे न केवल मनुष्य तक सीमित थे, अपितु जीव जंतु, पेड़ पौधे और पर्यावरण के लिए भी उतने ही प्रयासरत थे, जितने मानव कल्याण के लिए थे।

गांधीजी आध्यात्मिक होने के साथ-साथ इसकी व्यावहारिकता की क्रियान्वित पर जोर देते थे। उनकी सोच में संपूर्ण विश्व ही एक परिवार था। हाल ही में भारत ने जी-20 की अध्यक्षता एवं मेजबानी करते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की थीम को विश्व के समक्ष रखते हुए एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का नारा दिया, जो की गांधी के विचारों से प्रेरित है।

131

समर्पण, टीम वर्क और उत्कृष्टता की खोज जैसे विशेषताओं को दर्शाता है, जो डीबीएस बैंक के उद्देश्य-संचालित, संबंध-नेतृत्व

तक पहुंचने का प्रयास रहेगा।

इस साझेदारी पर शोमा नारायणन, मैनेजिंग डायरेक्टर - ग्रुप स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग एंड

पूरे भारत में लोकप्रियता हासिल कर रहा है, और यह साझेदारी हमें पांच युवा एथलीटों को अपना समर्थन देने का एक

सबसे महत्वपूर्ण मिताग का अपने साथ जोड़ने में बैंक की मदद करने के लिए उत्साहित है। हमें विश्वास है कि डीबीएस बैंक इंडिया के

में उल्लेखनीय प्रदर्शन के साथ सीनियर रैंकिंग में शीर्ष -10 खिलाड़ियों में स्थान अर्जित किया है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय ...
Central Uni...

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता एवं पूरे भूमंडल को प्रभावित करने वाले **अध्यात्म-प्रधान संस्कृति वाले सनातन राष्ट्र के रूप में विख्यात रहा है । भारत प्रजा का भरण-**पोषण करनेवाली अमृतदायनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र है (ऋग्वेद 5/11/1), जिस भारताग्नि के प्रभाव से छः विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होनेवाली तीन समसिन्धुओं, विशाल नद और नदियों के कारण इस शस्य श्यामला उर्वरा भूमि पर प्रजा का भरण पोषण होता रहा है। भारताग्नि द्वारा पोषित प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस क्षेत्र में ज्ञानार्जन में सदा लीन रहने वाले मानवों सहित इस भूभाग को भारताग्नि **के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने** लगा (विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् - ऋग्वेद 3/53/12)।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' अर्थात समुद्र के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है, उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कन्द पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस भूभाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुन्तला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम का वर्णन मिलता है। भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते है कि वो आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखण्ड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। मत्स्यपुराण (114/5,6) के अनुसार लोगों को भरण पोषण करने के कारण इस देश के शासक (मनु) को भारत कहा जाता है। नाट्यशास्त्र में वर्णित भरतमुनि, राजर्षि भरत, दशरथ पुत्र भरत और महाभारत में भारत शब्द का उल्लेख है। यह कहा जाना सर्वथा उचित है कि भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत महिमा पुस्तक में वर्णित है कि 'इयं निर्मला वत्सला मातृभूमिः प्रसिद्धं सदा भारतं वर्षमेतत्। विभिन्ना जना धर्मजातिप्रभेदैः, रिक्तस्वभावं वहन्तो वसन्ति।' अर्थात यह भारतवर्ष की भूमि सर्वदा पवित्र और ममतामयी रही है। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मन्त्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा-र-त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है।

हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' - इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है। इस तरह के अनेक उद्धरण हैं जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का स्वरूप दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत देश में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ

प्रो. रमाशंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया। इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग ढाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रचलित किया गया। इंडिया शब्द दासता भरे गुलामी मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों के द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा प्रणीत ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा अनायास प्रवाहित होने लगती है । हमारे अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म **को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही** सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द **कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नहीं कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके** सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है। भावनाओं के आलोक में प्रेरणामयी समझकर हमने सदा **भारत माता का उद्घोष किया है, वंदन किया है, क्योंकि इंडिया शब्द के** साथ वह मातृ **भाव आ ही नहीं** सकता। इंडिया **नाम का भारत देश की भाषा और संस्कृति से कोई मेल नहीं और ना ही इतिहास के साथ कोई वैचारिक संबंध है। भारतीयों के लिए राष्ट्रीय संवेदना और राष्ट्रप्रेम से जुड़ा यह मौलिक प्रश्न हमारी पीढ़ियों और पौराणिक संस्कृति का प्रतीक है। हमारी पहचान, हमारा संदर्भ, हमारा अस्तित्व और हमारी अस्मिता भारत से है। इंडिया और भारत को लेकर आज भी कई देश असमंजस में है। हमारे देश का गौरवशाली इतिहास और यहां की संस्कृति, सभ्यता की असली पहचान भारत नाम में ही छिपी है। हालांकि भारतभूमि को जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिमवर्ष, आर्यावर्त और हिन्दुस्तान जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है,** लेकिन वैविध्यपूर्ण **संस्कृति से** ओत-प्रोत हमारे **देश का सर्वाधिक प्रचलित नाम भारत ही रहा है । किसी भी देश के नाम में उस देश का संपूर्ण इतिहास और उसकी सफलता समाहित होती है। जैसे किसी व्यक्ति के नाम का अनुवाद नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार भारत को चाहे किसी भी भाषा में, किसी भी लिपि में लिखा जाय, वह भारत ही रहना चाहिए।**

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मेगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत **विषय पर** किताब लिखी थी, **जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश इसे इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे है।** वास्तविकता में भारत शब्द का मूल तत्व गौण **कर दिया। ऐसे में भारत की छवि का वैश्विक स्तर पर प्रभाव भी इंडिया नाम के अनुरूप ही हो सका।** हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके है। 2004 में एक राजनीतिक पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में इंडिया का नाम भारत करने का वादा किया था। वर्ष 2015 और 2020 में इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका डाली जा चुकी है। आखिरकार **सुप्रीम कोर्ट ने कहा** कि इस मुद्दे **पर फैसला संसद में** लेना होगा। **वैसे भी देशों का नाम बदलने की परंपरा नयी नहीं है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया ।** ऐसे कई उदाहरण है जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से **निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।**

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में **जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है ।**

021

ભારતમાં જ્ઞાનનો અસીમ ભંડાર: ડૉ. ઓમ પ્રકાશ પાંડે

ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા અને ચંદ્રયાન-૩ પર આયોજિત વિશેષ વ્યાખ્યાનમા નિષ્ણાતોએ વાત કરી હતી.

કમલમ્ ન્યુઝ,ગાંધીનગર.

ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા સમૃદ્ધ વારસો છે. ચંદ્રયાન-૩ના સફળ પ્રક્ષેપણ સાથે આપણે સાબિત કર્યું છે કે ભારત પાસે ભવિષ્યની તમામ શક્યતાઓ માટે વિશાળ તકો છે. ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર ઈન્ટરનલ ક્વોલિટી એન્ડ એશ્યોરન્સ દ્વારા "ચંદ્રયાન-૩ અને ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા" વિષય પર વિશેષ વ્યાખ્યાનનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતુ. વ્યાખ્યાનમાં વિશ્વ સંસ્કૃત પત્રકાર પરિષદ, નવી દિલ્હીના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને ભારતીય સંસ્કૃતિ પત્રિકા સંઘના મહામંત્રી ડૉ.બલદેવાનંદ સાગરે અતિથિ વક્તા તરીકે પોતાના વક્તવ્યમાં જણાવ્યું હતું કે ભારત વિશ્વનો એકમાત્ર સંસ્કૃતિ અને કૌશલ્યથી સમૃદ્ધ દેશ છે. આ સમય છે કે આપણે આપણું ટેકનિકલ કૌશલ્ય અને અવકાશ સંશોધન પ્રત્યેનું અનોખું જ્ઞાન વિશ્વને આપીએ. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા અમર્યાદ ઉર્જાનો સ્રોત છે. પ્રાચીન કાળથી લઈને આધુનિક સમય સુધી, ઘણા એવા વૈજ્ઞાનિકો છે જેમણે સમગ્ર વિશ્વમાં આપણી સંસ્કૃતિનો પ્રચાર કર્યો છે. આ જ્ઞાન પરંપરા રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ-૨૦૨૦માં પણ

પ્રતિબિંબિત થતી જણાય છે. ડૉ.સાગરે સંસ્કૃત ભાષા વિશે કહ્યું કે તે અદ્ભુત છે. વિશ્વની દરેક ભાષામાં સંસ્કૃત શબ્દભંડોળનો પ્રભાવ છે. કાર્યક્રમના મુખ્ય અતિથિ જાણીતા અવકાશ વૈજ્ઞાનિક ડૉ.ઓમ પ્રકાશ પાંડેએ જણાવ્યું હતું કે પહેલા અવકાશ વિજ્ઞાનમા આપણે માત્ર નાસાનું નામ જાણતા હતા, પરંતુ હવે જોઈ પણ નાસા સાથે જોડાઈ ગયું છે. કર્ણાટકની ધરતી પછી ગુજરાતની ધરતીને પણ ગૌરવ છે કે ઈસરો પણ અમદાવાદમાં છે. તેમણે કહ્યું કે વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ અમને અમારી સંસ્કૃતિ પર ગર્વ કરવાની તક આપી છે. આ દરમિયાન તેમણે ચંદ્રયાન ૩ના પ્રક્ષેપણને લગતી તમામ મહત્વપૂર્ણ માહિતી શેર કરી. હાલમાં ચંદ્રયાન-૩ના ડેટા પર કામ ચાલી રહ્યું છે. તાજેતરમાં આદિત્ય એલ-૧ પણ આપણા માટે મોટી ઉપલબ્ધિ છે. આપણે અવકાશ વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં એક મોટી ક્રાંતિ તરીકે ઉભરી આવ્યા છીએ.

અધ્યક્ષીય પ્રવચનમાં યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. રમાશંકર દુબેએ કહ્યું કે ભારત જીવંત રાષ્ટ્ર છે. ભારતે સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત અને સંસ્કારી બનાવ્યું છે. સંસ્કૃત ભાષા દ્વારા જ સમગ્ર વિશ્વમાં જ્ઞાનનો ફેલાવો થયો છે. આપણા દેશમાં શરૂઆતથી જ જ્ઞાન અને વિજ્ઞાનની પરંપરા રહી છે. અહીં તમામ વિષયોમાં શિક્ષણ આપવામાં આવતું હતું. આપણી પાસે પણ ૬૪ કળામાં શિક્ષણ આપવાની પરંપરા છે. આપણા દેશમાં ૧૮૩૫ સુધી ગુરુકુલો કાર્યરત હતા. મેકાલેએ પોતાના અહેવાલમાં આ વિશે પણ લખ્યું છે કે ભારત એક સમૃદ્ધ અને સાંસ્કૃતિક દેશ છે. તાજેતરના વર્ષોમાં સૂચવેલા તમામ સૂત્રોને લગતી તમામ સ્પષ્ટતાઓ પૂર્ણ થઈ ગઈ છે. આઈક્યુએસીના નિયામક પ્રો. અતનુ મહાપાત્રાએ જણાવ્યું હતું કે ભારતીય જ્ઞાન પરંપરામાંથી જ આપણે આપણી પ્રાચીન શિક્ષણ પદ્ધતિ વિશે માહિતી મેળવી શકીએ છીએ. આ દરમિયાન, કાર્યક્રમના સમાપન સમયે, અગાઉ આયોજિત સંસ્કૃત સંભાષણ વર્ગમાં ભાગ લેનાર તમામને પ્રમાણપત્ર આપીને સન્માનિત કરવામાં આવ્યા હતા.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

•Printer/Publisher/Owner & Editor : Mahesh N. Patel. •Printed At :-Captial Offset 801/1, G.i.d.c.,Sector-28 Gandhinagar, Gujarat- 382028 •Published - At A-

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

समाजशास्त्र, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र की पुनर्व्यवस्था है एकात्म दर्शन : इंदुमति काटदरे

समाचार जगत ब्यूरो

गांधीनगर। भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनो है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम' एवं 'विराट' में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है यह राष्ट्रियता है, चित्ति है।र यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता' का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चिति या चैतन्य है। मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा जो व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चिति है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थी। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर', 'श्मशान' एवं 'पानी' की अवधारणा पर काम करना होगा।

वर्ष 22 | अंक 66 | पृष्ठ 12 | मूल्य 5.00 | अहमदाबाद, मंगलवार, 17 अक्टूबर, 2023 | आश्विन शुक्ल पक्ष तृतीया संवत् 2080

॥ शुभ नवरात्र ॥

राजस्थान पत्रिका

मां दुर्गा का तीसरा स्वरूप — माता चन्द्रघण्टा

पत्रिका

बढ़ते साइबर क्राइम को रोकने के लिए जागरुकता जरूरी

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. देश में साइबर क्राइम के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए गुजरात पुलिस प्रशासन भी प्रयासरत है। यह बात गांधीनगर साइबर क्राइम के पुलिस अधिकारी हेतल वाघेला ने सोमवार को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजी) के सेंटर फॉर स्टडीज इन स्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही।

वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं। हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

गुजरात वैभव

गुजरात वैभव

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला आयोजित

गांधीनगर । देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने

के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी-रोल ऑफ़ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है. हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उल्लंघनों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

समाचार जगत
जयपुर, 17 अक्टूबर 2023

125

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

समाचार जगत ब्यूरो

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज

इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरान उन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। "साइबर सिक्योरिटी : रोल ऑफ़ इंडिविजुअल्स" विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

राज्य सरकार से विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त | जयपुर, मंगलवार, 17 अक्टूबर, 2023 | राजस्थान का तेजी से लोकप्रिय होता अखबार

हमारा समाचार

अंक: 175 hamarasamachar02@gmail.com दैनिक प्रातः मूल्य: 2.50 रुपए पृष्ठ: 8

12H

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

हमारा समाचार

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे है। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटजिक टेक्नोलॉजिज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमे विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने

शिक्षकों को फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। साइबर सिक्योरिटी: रोल ऑफ इंडिविजुअल्स विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान मे साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं, हमे मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएससीटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है, हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा आयामों का ध्यान रखना होगा।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

www.kalwadtimes.com अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर
आपणी खबर
app kalwadtimes अब दुनिया पढ़ेगी आपणी खबर
आपणो अखबार

कालवाड़ टाइम्स

2 दूसरी लिस्ट से पहले जेपी नड्डा का राजस्थान दौरा

कांग्रेस ने बारां से किया चुनावों का शंखनाद 2

वर्ष: 10 अंक: 318 पृष्ठ: 8 प्रभात जयपुर, मंगलवार, 17 अक्टूबर 2023 मूल्य : 2 रुपए प्रति

साइबर क्राइम और सुरक्षा पर सीयूजी में कार्यशाला

गांधीनगर साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन

कालवाड़ टाइम्स

गांधीनगर। देश में लगातार साइबर क्राइम के मामले बढ़ते जा रहे हैं। साइबर अपराधों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन भी अपनी पूरी कोशिश करता है। ये कहना है, गांधीनगर साइबर क्राइम पुलिस अधिकारी हेतल एन वाघेला का। वे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर स्टडीज इनस्ट्रेटेजिक टेक्नोलॉजीज, स्कूल ऑफ नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज और गांधीनगर रेंज साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुई कार्यशाला में बतौर वक्ता बोल रही थी। वाघेला ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाव के लिए हमें सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल वातावरण को बेहतर तरीके से समझने के साथ ही हमें विभिन्न साइबर अपराधों की पहचान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे में जागरूकता बढ़ाने से साइबर क्राइम पर अंकुश लगाया जा सकेगा। इस दौरानउन्होंने सीयूजी के संकाय सदस्यों और स्टूडेंट्स को पुलिस केस स्टडी में सामने आए तथ्यों को पेश करते हुए उन्होंने फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, और ऑनलाइन गोपनीयता से संबंधित समस्याओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। 'साइबर सिक्योरिटी: रोल ऑफ इंडिविजुअल्स' विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में स्कूल ऑफ नेशनल

सिक्योरिटी स्टडीज के अधिष्ठाता प्रो.संजय कुमार झा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान में साइबर अपराध हमारे लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं. हमें मिलकर एक-दूसरे की मदद करनी होगी। कार्यक्रम केसंयोजक सीएसएसटी, एसएनएसएस के समन्वयक डॉ.श्रीश कुमार तिवारी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सुरक्षा के संकट को महसूस कर रही है. हमें इसके लिए हमारे सुरक्षा उपायों का ध्यान रखना होगा।

pro[illegible].ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

122

प्रो. रमाशंकर दूबे
कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

भारत अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता एवं पूरे भूमंडल को प्रभावित करने वाले अध्यात्म-प्रधान संस्कृति वाले सनातन राष्ट्र के रूप में विख्यात रहा है । भारत प्रजा का भरण-पोषण करनेवाली अमृतदायनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र है (ऋग्वेद 5/11/1), जिस भारताग्नि के प्रभाव से छः विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होनेवाली तीन सप्तसिन्धुओं, विशाल नद और नदियों के कारण इस शस्य श्यामला उर्वरा भूमि पर प्रजा का भरण पोषण होता रहा है । भारताग्नि द्वारा पोषित प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस क्षेत्र में ज्ञानार्जन में सदा लीन रहने वाले मानवों सहित इस भूभाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने लगा (विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् - ऋग्वेद 3/53/12) ।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् , वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' अर्थात समुद्र के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है, उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कन्द पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस भूभाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुन्तला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम को बल मिलता है। भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते है कि वो आगे चलकर चक्र वर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखण्ड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। मत्स्यपुराण (114/5,6) के अनुसार लोगों को भरण पोषण करने के कारण इस देश के शासक (मनु) को भारत कहा जाता है । नाट्यशास्त्र में वर्णित भरतमुनि, राजर्षि भरत, दशरथ पुत्र भरत और महाभारत में भारत शब्द का उल्लेख है। यह कहा जाना सर्वथा उचित है कि भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत महिमा पुस्तक में वर्णित है -'इयं निर्मला वत्सला मातृभूमिः, प्रसिद्ध सदा भारतं वर्षमेतत्। विभिन्ना जना धर्मजातिप्रभेदे, रिहैकत्वभावं वहन्तो वसन्ति।' अर्थात यह भारतवर्ष की भूमि सर्वदा पवित्र और ममतामयी रही है। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मन्त्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा +र+त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता'-इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है । इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है। इस तरह के अनेक उद्धरण है जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का संदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत देश में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया । इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग ढाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रचलित किया गया । इंडिया शब्द दासता भरे गुलामी मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों के द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा प्रणीत ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा अनायास प्रवाहित होने लगती है । हमारे अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नही कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है। भावनाओं के आलोक में प्रेरणामयी समझकर हमने सदा भारत माता का उद्घोष किया है, वंदन किया है, क्योंकि इंडिया शब्द के साथ वह मातृ भाव आ ही नहीं सकता। इंडिया नाम का भारत देश की भाषा और संस्कृति से कोई मेल नहीं और ना ही इतिहास के साथ कोई वैचारिक संबंध है। भारतीयों के लिए राष्ट्रीय संवेदना और राष्ट्रप्रेम से जुड़ा यह मौलिक प्रश्न हमारी पीढ़ियों और पौराणिक संस्कृति का प्रतीक है। हमारी पहचान, हमारा संदर्भ, हमारा अस्तित्व और हमारी अस्मिता भारत में है। इंडिया और भारत को लेकर आज भी कई देश असमंजस में है। हमारे देश का गौरवशाली इतिहास और यहां की संस्कृति, सभ्यता की असली पहचान भारत नाम में ही छिपी है। हालांकि भारतभूमि को जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिमवर्ष, आर्यावर्त और हिन्दुस्तान जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है, लेकिन वैविध्यपूर्ण संस्कृति से ओत-प्रोत हमारे देश का सर्वाधिक प्रचलित नाम भारत ही रहा है । किसी भी देश के नाम में उस देश का संपूर्ण इतिहास और उसकी संप्रभुता समाहित होती है। जैसे किसी व्यक्ति के नाम का अनुवाद नही हो सकता, ठीक उसी प्रकार भारत को चाहे किसी भी भाषा में, किसी भी लिपि में लिखा जाय, वह भारत ही रहना चाहिए।

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल-पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मेगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत विषय पर किताब लिखी थी, जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश इसे इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे हैं। वास्तविकता में भारत शब्द का मूल तत्व गौण कर दिया गया ऐसे में भारत की छवि को वैश्विक स्तर पर प्रभाव भी इंडिया नाम के अनुरूप ही हो सका। हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके है। 2004 में एक राजनीतिक पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में इंडिया का नाम भारत करने का वादा किया था। वर्ष 2015 और 2020 में इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका डाली जा चुकी है। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस मुद्दे पर फैसला संसद में लेना होगा। वैसे भी देशों का नाम बदलने की परंपरा नयी नही है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया । ऐसे कई उदाहरण है जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है । वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि हम विदेशी शब्द इंडिया का प्रयोग न करते हुए गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर भारत शब्द का प्रयोग करें तथा भारत शब्द को अधिकारिक रूप से प्रयोग में लाने के लिए सभी उपयुक्त कदम उठाये जाएं ।

એકાત્મદર્શન એ સમાજશાસ્ત્ર, શિક્ષણ અને અર્થશાસ્ત્રની પુનઃરચના છેઃ ઈન્દુમતિ કાટધરે

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૭

ગાંધીનગર. "ભારત પ્રાચીન અને અર્વાચીન બંને છે - આજનું ભારત વૈદિક કાળની સંસ્કૃતિનું વાહક છે. ભારત પ્રાચીન સાંસ્કૃતિક સ્વરૂપ સાથે જીવંત છે. દરેક રાષ્ટ્રનો પોતાનો સ્વભાવ હોય છે, જેને ચિતિ કહેવામાં આવે છે. આ રાષ્ટ્રીય ચિતિ 'ચિતિ' છે. તે રાષ્ટ્રની 'વીરતા' અને 'વિરાટ' માં પ્રતિબિંબિત થાય છે.એ મૂળ સ્વભાવ કે જેનાથી લોકો વર્તે છે, તે રાષ્ટ્રવાદ અને ચિતિ છે'. આ વિચાર પુનરુત્થાન યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. ઈન્દુમતિ કાટધરેએ વ્યક્ત કર્યા હતા . પ્રો. કાટધરે સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત દ્વારા પં. દીનદયાળ ઉપાધ્યાયની જન્મજયંતિ નિમિત્તે આયોજિત સેમિનારમાં બોલી રહ્યા હતા. તેમણે કહ્યું કે ચીન 'અર્વાચીનતા'નો દાવો કરી શકે નહીં, કારણ કે ભગવાન બુદ્ધનું ચીન હવે સામ્યવાદી બનીને અમેરિકન સામ્યવાદ તરફ આગળ વધી રહ્યું છે. ભારત રાષ્ટ્ર માત્ર એક ભૂમિ નથી પરંતુ એક સાંસ્કૃતિક એકતા છે. આ સાંસ્કૃતિક એકતાનો મૂળ સ્વભાવ ચિતિ અથવા ચેતના છે. તેમના મૂળ સ્વભાવથી પ્રેરિત થઇ લોકો જે વર્તન કરે છે તે રાષ્ટ્રીયતા છે ચિતિ છે. આ પ્રસંગે મુખ્ય મહેમાન તરીકે ગુજરાત યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. નીરજા અરુણ ગુપ્તા હતા . પ્રો. ગુપ્તાએ તેમના વક્તવ્યમાં કહ્યું હતું કે દીનદયાલ ઉપાધ્યાયની એકાત્મ દર્શનને અમલમાં મૂકવા માટે આપણે 'મંદિર', 'સ્મશાન' અને 'પાણી'ની વિભાવના પર કામ કરવું પડશે. આના દ્વારા જ દીનદયાલ ઉપાધ્યાયનાં એકાત્મ માનવવાદને ભારતમાં અમલમાં મૂકી શકાશે . તેમણે કહ્યું કે આપણો ઈતિહાસ પશ્ચિમથી પ્રભાવિત છે. હમણાંસુધી આપણો 'વિમર્શ' સંસ્થાનવાદી શક્તિઓ દ્વારા નક્કી કરવામાં આવ્યો છે. આમાં ફેરફાર થવો જોઈએ. વર્તમાન સંદર્ભમાં જ્યારે વિશ્વ વિવિધ પ્રકારની મુસીબતોથી પીડિત છે ત્યારે એકાત્મ માનવવાદની ઉપયોગીતા વધુ છે, કારણ કે એકાત્મ માનવાવાદનો પાયાનો સિદ્ધાંત છે જગતનો વિચાર કરો સૌનું કલ્યાણ થાય ,.

ભારત સંકટગ્રસ્ત વિશ્વને મજબૂત બનાવશે

અત્યારે વિશ્વ ઉપભોક્તાવાદ, અજ્ઞાનતા, અસંસ્કારિતા , આત્મવિશ્વાસ અને આત્મીયતાના અભાવથી પીડાઈ રહ્યું છે. આ માટે ભારતીય સંસ્કૃતિના મૂળને આત્મસાત કરવું જરૂરી છે. મૂળ સંસ્કૃતિ અને સમૃદ્ધિ બંનેને સાથે રાખીને જ આ પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. કાર્યક્રમના સંયોજક ડો. બાલુદાન બારહઠે વિષય બદલતા જણાવ્યું હતું કે પંડિત દીનદયાલ ઉપાધ્યાયનું એકાત્મ માનવ તત્વજ્ઞાનનું ચિંતન વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં સર્વસમાવેશક માર્ગ છે. પ્રો. એસ.કે.અગ્રવાલે આવનાર તમામ મહેમાનોનો પરિચય કરાવ્યો હતો. કાર્યક્રમમાં સીયુજી રજીસ્ટ્રાર પ્રો. એચ.બી.પટેલ, ફેકલ્ટી ઓફ સોશિયલ સાયન્સના ડીન પ્રો. તાપસ દલપતિ, સેન્ટર ફોર ગાંધી થોટ એન્ડ પીસ સ્ટડીઝના અધ્યક્ષ પ્રો. જનકસિંહ મીણા, ઊીછઝ ના ડાયરેક્ટર પ્રો. અતનુ મહાપાત્રા, ફેકલ્ટી સભ્યો, સંશોધકો અને વિદ્યાર્થીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

રાષ્ટ્રીય કવિ રામધારી સિંહ દિનકરની જન્મજયંતિ ઉજવાઈ

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૭

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતના રાજભાષા સેલ દ્વારા

121

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

हर भाषा में देश का नाम भारत

प्रो. रमाशंकर दुबे
कुलपति,
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

हमारा देश 'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता एवं पूरे भूमंडल को प्रभावित करनेवाले अध्यात्म-प्रधान संस्कृति वाले सनातन राष्ट्र के रूप में विख्यात रहा है। भारत प्रजा का भरण-पोषण करनेवाली अमृतत्वयिनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र है (ऋग्वेद 5/11/1), जिस भारताग्नि के प्रभाव से छह विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होनेवाली तीन सप्तसिंधुओं, विशाल नद और नदियों के कारण इस शस्य श्यामला उर्वरा भूमि पर प्रजा का भरण पोषण होता रहा है। भारताग्नि द्वारा पोषित प्राकृतिक संपदा से भरपूर इस क्षेत्र में ज्ञानार्जन में लीन रहने वाले मानवों सहित इस भूभाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' नाम से संबोधित किया जाने लगा (विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्- ऋग्वेद 3/53/12)।

भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे जनमानस में रचा बसा है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भारत' से प्रकृति के तीनों गुण यानी 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानी त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है। इस तरह के अनेक उदाहरण हैं जिनमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का संदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत देश में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया।

भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही उपयुक्त रहता है। इंडिया नाम का भारत की भाषा और संस्कृति से कोई मेल नहीं और न ही इतिहास के साथ कोई वैचारिक संबंध है। भारतीयों के लिए राष्ट्रीय संवेदना और राष्ट्रप्रेम से जुड़ा यह मौलिक प्रश्न हमारी पीढ़ियों और पौराणिक संस्कृति का प्रतीक है। हमारी पहचान, हमारा संदर्भ, हमारा अस्तित्व और हमारी अस्मिता भारत में है। इंडिया और भारत को लेकर आज भी कई देश असमंजस में हैं। हमारे देश का गौरवशाली इतिहास और यहां की संस्कृति, सभ्यता की असली पहचान भारत नाम में ही छिपी है। हालांकि भारतभूमि को जंबूद्वीप, आर्यावर्त जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है, परंतु वैविध्यपूर्ण संस्कृति से ओत-प्रोत हमारे देश का सर्वाधिक प्रचलित नाम भारत ही रहा है। किसी भी देश के नाम में उस देश का संपूर्ण इतिहास और उसकी संप्रभुता समाहित होती है। जैसे किसी व्यक्ति के नाम का अनुवाद नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार भारत को चाहे किसी भी भाषा में, किसी भी लिपि में लिखा जाय, वह भारत ही रहना चाहिए।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया। अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम 'इंडिया' का प्रयोग न करते हुए गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर 'भारत' शब्द का प्रयोग करें। साथ ही भारत शब्द को आधिकारिक रूप से प्रयोग में लाने के लिए सभी उपयुक्त कदम उठाए जाएं।

120

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

समाजशास्त्र, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र की पुनर्व्यवस्था है एकात्म दर्शन : इंदुमति काटदरे

जयपुर टाइम्स

गांधीनगर। "भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनो है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम' एवं 'विराट' में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चित्ति है।" यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता' का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा जो व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चित्ति है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थी। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर' , 'श्मशान' एवं 'पानी' की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारा इतिहास पश्चिम से प्रभावित रहा है। हमारा 'विमर्श' औपनिवेशिक शक्तियों के द्वारा तय किया जाता रहा है। इसमें परिवर्तन लाना होगा। वर्तमान संदर्भ में एकात्म मानव दर्शन की उपादेयता ओर बढ़ जाती है जबकि विश्व विभिन्न प्रकार के संतापों से त्रस्त है, क्योंकि एकात्म मानव दर्शन का मूल है सबका कल्याण हो, विश्व का चिंतन करो।

संकटग्रस्त विश्व को भारत बनाएगा सामर्थ्यवान

वर्तमान में विश्व उपभोगवाद, अज्ञान, असंस्कारिता, आत्मविश्वास एवं आत्मीयता के अभाव से ग्रस्त है। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय संस्कृति के मूल को आत्मसात किया जाए। यह मूल संस्कृति एवं समृद्धि दोनों को साथ रखकर ही प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने विषय परवर्तन करते हुए बताया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। इस दौरान प्रो. एस के अग्रवाल ने सभी आगंतुक अतिथियों का परिचय दिया। कार्यक्रम में सीयूजी के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल, समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. तापस दलपति, गांधी विचार एवं शांति अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. जनक सिंह मीना, आईक्यूएसी निदेशक प्रो. अतानु महापात्र उपस्थित संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

કોઈપણ ભાષામાં દેશનું નામ ભારત જ હોવું અને રહેવું જોઈએ

વિચાર
■પ્રો. રમાશંકર દુબે
કુલપતિ, ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
ગાંધીનગર

ભારત પ્રાચીન સમયથી એક સમૃદ્ધ સભ્યતા અને આધ્યાત્મિકતાલક્ષી સંસ્કૃતિ ધરાવતા રાષ્ટ્ર તરીકે જાણીતું છે. જેણે સતત સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત કર્યું છે. ભારત પોતાની પ્રજાનું પોષણ કરનાર અમૃતદાયીની 'ભારતાગ્નિ'નો પ્રદેશ છે. (ઋગ્વેદ ૫/૧૧/૧), જે 'ભારતાગ્નિ'ના પ્રભાવથી છ અલગ-અલગ ઋતુઓ અને અપ સમશિતુ, વિશાળ નદીઓ જુદી જુદી દિશામાં વહે છે. એના કારણે આ શસ્ય શ્યામલા ફળદ્રુપ ભૂમિ પર લોકો પોતાનું ભરણપોષણ મેળવે છે.

'ભારતાગ્નિ' દ્વારા પોષાયેલી પ્રાકૃતિક સંપદાથી ભરપૂર આ ભૂમિમાં સદા જ્ઞાન પ્રાપ્તિમાં લીન રહેતા મનુષ્યોની આ ભૂમિ 'ભારત' નામથી સંબોધાવા લાગી. જે ભારતાગ્નિના પર્યાય શબ્દ છે. (વિશ્વામિત્રસ્ય રક્ષતિ બ્રહ્મેદં ભારતં જનમ-ઋગ્વેદ ૩/૫૩/૧૨).

વિષ્ણુ પુરાણમાં દેશની પ્રાદેશિક સીમાઓનો ઉલ્લેખ આ આવી રીતે કરવામાં આવ્યો છે : ઉત્તરં યત્ સમુદ્રસ્ય હિમાદ્રેશ્ચૈવ દક્ષિણમ । વર્ષં તદ્ ભારતં નામ ભારતી યત્ર સન્તતિઃ' એટલે કે સમુદ્રની ઉત્તરે અને હિમાલયની દક્ષિણે આવેલ પ્રદેશનું નામ ભારત છે અને એના સંતાનોને ભારતીય કહેવામાં આવે છે. સ્કંદપુરાણના અધ્યાય ૩૭ મુજબ ઋષભદેવને ભરત નામનો પુત્ર હતો. જેના નામ પરથી આ ભૂમિનું નામ ભારત પડ્યું. આ ઉપરાંત ભારત નામ મહાભારતના પ્રથમ ભાગમાં શકુંતલા અને રાજા દુષ્યંતના પુત્ર ભરતના નામથી પડ્યું છે એવી પણ એક વાત માનવામાં આવે છે. ભરતના જન્મ પછી, ઋષિ કણ્વ તેમને આશીર્વાદ આપે છે કે તેઓ ચક્રવર્તી સમ્રાટ બનશે અને તેમના નામ પર આ ભૂમિ ભારતના નામે ઓળખાશે. મત્સ્ય પુરાણ (૧૧૪/૫.૬) અનુસાર લોકોનું ભરણપોષણ કરનાર આ દેશના શાસક (મનુ)ને ભારત કહેવામાં આવે છે. નાટ્યશાસ્ત્રના રચનાર ભરતમુનિ, રાજર્ષિ ભરત, દશરથના પુત્ર ભરત અને મહાભારતમાં ના ભારત નામના સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ મળે છે.

એ કહેવું તદ્દન વાજબી છે કે ભારત આપણી પ્રજામાનસનો અભિન્ન અંગ છે. ભારત માત્ર એક શબ્દ નથી, પરંતુ એક મંત્ર છે જેનું માત્ર ઉચ્ચારણ, 'ભા+ર+ત', પ્રકૃતિના ત્રણ ગુણ એટલે કે 'ભા' સત્ત્વ (પ્રકાશ, જ્ઞાન), 'ર' એટલે રાજસ અને 'ત' એટલે તમસ, એટલે કે ત્રિવિધ શક્તિ. આના પરથી સ્પષ્ટ થાય છે કે ભારતીયોએ પોતાના દેશનું નામ ભારત રાખ્યું છે. આ બાબતમાં નોંધનીય છે કે 'ઇન્ડિયા' શબ્દ લગભગ અઢી હજાર વર્ષ પહેલા ભૌગોલિક સંદર્ભમાં વિદેશીઓ દ્વારા વપરાયેલ શબ્દ છે.

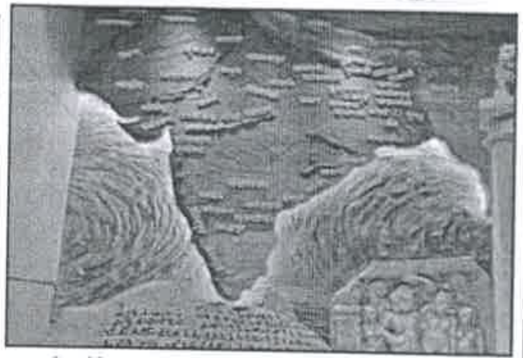

જ અંગ્રેજ શાસન દરમિયાન અંગ્રેજોએ ભારતમાં પ્રચલિત કર્યો. 'ઇન્ડિયા' શબ્દ આપણને ગુલામી માનસિકતાની સાથે અંગ્રેજો દ્વારા ભારતીય લોકોના શોષણની યાદ અપાવે છે. અંગ્રેજી શબ્દ 'મધર' ક્યારેય એ લાગણી વ્યક્ત કરી શકતો નથી જે આપણી ભાષામાં 'માં' શબ્દ દ્વારા વ્યક્ત થાય છે. 'ઇન્ડિયા' શબ્દનો ભારતની ભાષા અને સંસ્કૃતિ સાથે કોઈ સંબંધ નથી અને ન તો ઇતિહાસ સાથે કોઈ વૈચારિક સંબંધ છે. આપણા દેશનું સૌથી વધારે પ્રચલિત નામ ભારત જ રહ્યું છે. જ્યારે હિન્દુ શબ્દ પશ્ચિમમાં ગયો ત્યારે તે ગ્રીક ભાષામાં અપભ્રંશ થઈને ઇન્ડુ બની ગયો.

ચંદ્રગુપ્ત મૌર્યના સમયમાં, ગ્રીક રાજદૂત મેગેસ્થનીજ પાટલીપુત્ર આવ્યા હતા, ત્યારે તેમણે ભારતના વિષય પર એક પુસ્તક લખ્યું હતું. જેનું નામ ઇન્ડિકા હતું ત્યારથી પશ્ચિમી દેશો તેને ઇન્ડિકા અથવા ઇન્ડિયા નામથી સંબોધિત કરે છે. ૨૦૦૪માં એક રાજકીય પક્ષે તેના ઘોષણાપત્રમાં ઇન્ડિયા નામ બદલીને ભારત રાખવાનું વચન આપ્યું હતું. વર્ષ ૨૦૧૫ અને ૨૦૨૦માં આ અંગે સુપ્રીમ કોર્ટમાં અરજી પણ દાખલ કરવામાં આવી ચૂકી છે.

આખરે સુપ્રીમ કોર્ટે કહ્યું કે આ મુદ્દાનો નિર્ણય સંસદ એ લેવો પડશે. આમ પણ દેશોના નામ બદલવાની પરંપરા નવી નથી. હમણાંજ ટર્કીનું નામ બદલીને તુર્કીએ કરવામાં આવ્યુ. વર્ષ ૧૯૭૨માં સિલોનનું નામ બદલી ને શ્રીલંકા કરવામાં આવ્યું. બર્માનું નામ બદલીને મ્યાનમાર કરવામાં આવ્યું. એવા ઘણા ઉદાહરણો છે

ઘણાં દેશોએ વસાહતી માનસિકતામાંથી બહાર આવવા માટે પોતાના દેશના નામમાં બદલાવ કર્યા. તાજેતરમાં, G20ની કંટ્રોલ શીટ પર પ્રેસીડેન્ટ ઓફ ઇન્ડિયાની જગ્યાએ પ્રેસીડેન્ટ ઓફ ભારત લખવામાં આવ્યું તે દર્શાવે છે કે ભારતના મૂળ ઊંડા છે.

આ એક આવકારદાયક પગલું છે. વર્તમાન સમયની જરૂરિયાત એ છે કે વિદેશી શબ્દ ઇન્ડિયાનો ઉપયોગ કરવાને બદલે આપણે ગુલામીની માનસિકતામાંથી બહાર આવીને ભારત શબ્દનો ઉપયોગ કરીએ અને ભારત શબ્દને સત્તાવાર ઉપયોગમાં લાવવા માટે તમામ યોગ્ય પગલાં લઈએ.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

पत्रिका

सीयूजी में पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर संगोष्ठी

आज का भारत वैदिक काल की संस्कृति का वाहक: इंदुमति काटदरे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों है। आज का भारत वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के पराक्रम एवं विराट में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रीयता है, चित्ति है। पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने गांधीनगर स्थित गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में यह विचार व्यक्त किए।

गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में अतिथि।

उन्होंने कहा कि चीन अर्वाचीनता का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमरीका साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। इस अवसर पर गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थी। प्रो. गुप्ता ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें मंदिर, श्मशान एवं पानी की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। कार्यक्रम में सीयूजी के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल, समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. तापस दलपति, गांधी विचार एवं शांति अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. जनक सिंह मीना, प्रो. अतानु महापात्र व अन्य संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

National Education Policy-2020

Focuses on Critical Thinking

Prof. S. K. Agrawal

(Writer is the Professor at Centre for Comparative Literature & Translation Studies, School of Language, Literature & Culture Studies, Central University of Gujarat, Gandhinagar)

With its vision to improve the overall quality of education, National Education Policy- 2020 released on July 29, 2020 after a gap of thirty years, brings a paradigm shift in the education system of India. The NEP-2020 has sought to overhaul the whole spectrum of the Indian Education System by restructuring the contours of education. The Policy aims at fostering creativity, critical thinking, and the spirit of innovation in the students. Creativity and Critical Thinking play a vital role in bringing about transformation by generating new knowledge in varied areas. Critical Thinking is a way to improve thinking; the art of critical thinking involves an approach to thinking-more significantly learning- that embraces changing how one thinks about thinking. Critical thinking incorporates how learners develop and apply thoughts to understand how thinking can be improved. The basic idea undergirding the discipline of Critical Thinking is to determine strengths and weaknesses in one's thinking to maintain the strengths and make improvements by targeting the weaknesses.

Problem solving is the ultimate intent of critical thinking. Skills in problem solving, issue analyses and decision making are increasingly expected of employees. Evidence is growing that critical thinking is "expected" in the workplace. Recently more than 4000 senior HR professionals were asked in a survey to name the most important skills that their employees will need in the next five years. Critical Thinking ranked the highest, more than innovation or the application of information technology.

Advanced way of thinking : Critical thinkers are those who can move beyond "typical" thinking models to an advanced way of thinking. They produce both more ideas, and improved ideas; they become more adept in their thinking by using a variety of probing techniques which enable them to discover new and often improved ideas. Besides, critical thinkers tend to see the problem from many perspectives. Critical thinkers are also more willing to take intellectual risks.

NEP-2020 with its focus on critical thinking intends to develop in our learners the capacity to test their first impressions, make important discussions among choices and base their conclusion on evidence rather than their own feelings. Sensitive to their own limitations and predispositions, the learners double check the logic of their thinking and the workability of their solutions, identify imperfections and complications, anticipate negative responses, and generally refine their ideas. Our learners must learn to focus.

Critical thinking relates to acknowledging personal limitations, seeing problems as exciting challenges, using evidence to make judgements, thinking before acting, avoiding emotionalism, keeping an open mind, engaging in active listening, having comprehension as a goal. They are interested in others' ideas and are skeptical of extreme views.

Leading to success : Critical thinking is applicable whenever people are called to decide or resolve a problem. Working people make decisions. Good decisions move the business forward and increase profits. On the other hand, poor decisions hurt the business and reduce profits. Our learners who enter the field of Management and become upper- level executives shall not be having the responsibility of making decisions only; rather it shall accompany the problem solving also. Each person in an organization, no matter what their position is, makes hundreds of decisions every day, and each one has an opportunity for success or failure.

The practice of critical thinking encourages employees and managers to observe various situations, weigh all possible solutions, then decide a course of action. Using critical thinking proves advantageous, when it is modelled and promoted from top to the bottom of the organizational hierarchy. Advancing critical thinking is not merely a nice thing to do. It can literally improve profits and capabilities of employees. When enhanced critical thinking is applied, the organizations can witness a more qualitative corporate culture. The improved culture may translate into dollars or more revenue in the long run or improved personal communication, cooperation, and collaboration in the short run.

Critical thinking brings new ideas and processes both to the classroom and the workplace. For instance, when approaching problem solving, the issue surfaces in the classroom/ workplace is that it falls into a predetermined category. It does not make any assumptions and therefore, using the process of critical thinking in the workplace removes the temptation to immediately classify every issue under something that has happened in the past. Students/ employees can look beyond conventional solutions, search for new ideas, and contemplate alternatives to address the problem. Applying critical thinking as an approach to problem solving, issue resolution or new products or processes can liberate thinking in many ways. In addition, critical thinking looks at the impact beyond a specific step in the decision process; i.e., if step-1 changes into a decision, then the follow-on steps need to be examined critically as well. Thus, critical thinking opens avenues of possibilities that otherwise would have remained closed.

Critical thinking skills learned in the classroom have an impact on future learning at the workplace as well. Once learned, these skills enable students to think deeply and critically about problems and issues and their individual role in their resolution. NEP-2020 encourages the students to bring forth critical thinking and creative skills. PM Modi has rightly said, "The education system for the future requires skilling, reskilling and upskilling and the new NEP which has been rolled out is addressing these requirements." He also advised the students to work out of the box ideas in diverse areas. As a matter of fact, critical thinking in NEP-2020 is directly related to developing innovative, progressive, and prosperous 'Atmanirbhar' Bharat (Self-Reliant India).

116

CUG PhD scholar alleges harassment by his guide

Says he was treated like a bonded-labour; guide says false allegation

| Niyati.Rana
@ahmedabadmirror.in

TWEETS @NiyatiMIRROR

FILE PHOTO

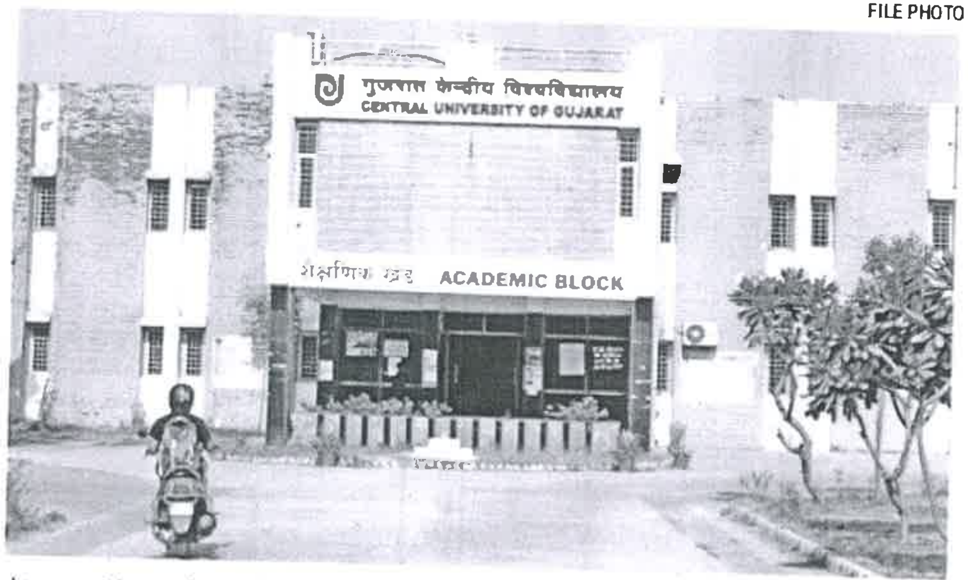

A PhD student of the School of Chemical Science at Central University of Gujarat (CUG) has lodged a complaint to the Vice Chancellor against his guide alleging that he was subject to mental harassment, misbehavior, and being scolded over the matter of his research.

The student, Siddharth Saurabh has alleged that his guide Dr Lenin Dandamudi not only mental harassed him but also did not allow him to pursue research on organocatalyst and green chemistry in his laboratory. Siddharth said the lab's usage was restricted to Bayliss-Hillman or nitrostyrene research work, leaving him little scope to pursue research of his choice.

Disappointed, frightened and de-motivated, the student is believed to have decided to quit the PhD at CUG. In a last ditch effort, he wrote to the CUG authorities to change his guide. The student also alleged that his guide's behavior makes him feel like a 'bonded-labour'.

Siddharth who shot an email to the CUG Vice Chancellor and others said that before joining Lenin as a research student, he had made it clear that he would pursue organocatalyst and Green chemistry or Asymmetric synthesis. But in the last eight months, the guide only scolded and humiliated him rather than helping him with his research work.

The student has alleged that even after giving him a verbal nod to make a poster presentation in an international conference in Rajasthan University in March, the faculty scolded him and forced him to work on a topic which the guide had assigned. "I was completely broken down," Siddharth wrote in his email. He continued "Additionally, because of the way you behaved with me, I decided to discontinue my PhD under your supervision," the student wrote in the email, a copy of which is with Mirror.

In response to Mirror's email query, Lenin said, "whatever he claimed was false allegation. VC sir and Dean sir (have) already talked to him. They suggested that he work in the lab for his PhD work. But he is not coming to the lab and trying to defame the University." CUG Registrar HB Patel confirmed having received the response. "The application is referred to the Dean, School of Chemical Science to conduct the probe in the incident."

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

કોઈપણ ભાષામાં દેશનું નામ ભારત જ હોવું અને રહેવું જોઈએ

વિચાર
■પ્રો. રમાશંકર દુબે
કુલપતિ, ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
ગાંધીનગર

ભારત પ્રાચીન સમયથી એક સમૃદ્ધ સભ્યતા અને આધ્યાત્મિકતાસભર સંસ્કૃતિ પરાયણ રાષ્ટ્ર તરીકે જાણીતું છે. જેણે સતત સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત કર્યું છે. ભારત પોતાની પ્રજાનું પોષણ કરનાર અમૃતદાયીની 'ભારતાગ્નિ'નો પ્રદેશ છે. (ઋગ્વેદ ૫.૧૧.૧), જે 'ભારતાગ્નિ'ના પ્રભાવથી છ અલગ-અલગ ઋતુઓ અને ત્રણ સમસિંધુ, વિશાળ નદીઓ જુદી જુદી દિશામાં વહે છે. એના કારણે આ શસ્ય શ્યામલા સ્વરૂપ ભૂમિ પર લોકો પોતાનું ભરણપોષણ મેળવે છે.

'ભારતાગ્નિ' દ્વારા પોષાયેલી પ્રાકૃતિક સંપદાથી ભરપૂર આ ભૂમિમાં સદા જ્ઞાન પ્રાપ્તિમાં લીન રહેતા મનુષ્યોની આ ભૂમિ 'ભારત' નામથી સંબોધાવા લાગી. જે ભારતાગ્નિનો પર્યાય શબ્દ છે. (વિશ્વામિત્રસ્ય રક્ષતિ બ્રહ્મેદં ભારતં જનમ-ઋગ્વેદ ૩/૫૩/૧૨).

વિષ્ણુ પુરાણમાં દેશની પ્રાદેશિક સીમાઓનો ઉલ્લેખ આ આવી રીતે કરવામાં આવ્યો છે : ઉત્તરં યત્ સમુદ્રસ્ય હિમાદ્રેશ્ચૈવ દક્ષિણમ્ । વર્ષં તદ્ ભારતં નામ ભારતી યત્ર સન્તતિઃ અર્થાત્ કે સમુદ્રની ઉત્તરે અને હિમાલયની દક્ષિણે આવેલ પ્રદેશનું નામ ભારત છે અને એના સંતાનોને ભારતીય કહેવામાં આવે છે. સ્કંદપુરાણના અધ્યાય ૩૭ મુજબ ઋષભદેવને ભરત નામનો પુત્ર હતો. જેના નામ પરથી આ ભૂમિનું નામ ભારત પડ્યું. આ ઉપરાંત ભારત નામ મહાભારતના પ્રથમ ભાગમાં શકુંતલા અને રાજા દુષ્યંતના પુત્ર ભરતના નામથી પડ્યું છે એવી પણ એક વાત માનવામાં આવે છે. ભરતના જન્મ પછી, ઋષિ કણ્વ તેમને આશીર્વાદ આપે છે કે તેઓ ચક્રવર્તી સમ્રાટ બનશે અને તેમના નામ પર આ ભૂમિ ભારતના નામે ઓળખાશે. મત્સ્ય પુરાણ (૧૧૪/૫.૬) અનુસાર લોકોનું ભરણપોષણ કરનાર આ દેશના શાસક (મનુ)ને ભરત કહેવામાં આવે છે. નાટ્યશાસ્ત્રના રચનાર ભરતમુનિ, રાજર્ષિ ભરત, દશરથના પુત્ર ભરત અને મહાભારતમાં તો ભારત નામનો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ મળે છે.

એ કહેવું તદ્દન વાજબી છે કે ભારત આપણી પ્રજામાનસનો અભિન્ન અંગ છે. ભારત માત્ર એક શબ્દ નથી, પરંતુ એક મંત્ર છે જેનું માત્ર ઉચ્ચારણ, 'ભા+ર+ત', પ્રકૃતિના ત્રણ ગુણ એટલે કે 'ભા' સત્વ (પ્રકાશ, જ્ઞાન), 'ર' એટલે રાજસ અને 'તા' એટલે તમસ, એટલે કે ત્રિવિધ શક્તિ. આના પરથી સ્પષ્ટ થાય છે કે ભારતીયોએ પોતાના દેશનું નામ ભારત રાખ્યું છે. આ બાબતમાં નોંધનીય છે કે 'ઇન્ડિયા' શબ્દ લગભગ અઢી હજાર વર્ષ પહેલા ભૌગોલિક સંદર્ભમાં વિદેશીઓ દ્વારા વપરાયેલ શબ્દ છે.

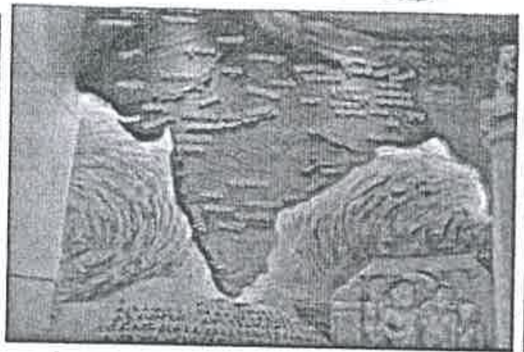

જે અંગ્રેજી શાસન દરમિયાન અંગ્રેજોએ ભારતમાં પ્રચલિત કર્યો. 'ઇન્ડિયા' શબ્દ આપણને ગુલામી માનસિકતાની સાથે અંગ્રેજો દ્વારા ભારતીય લોકોના શોષણની યાદ અપાવે છે. અંગ્રેજી શબ્દ 'મધર' ક્યારેય એ લાગણી વ્યક્ત કરી શકતો નથી જે આપણી ભાષામાં 'માં' શબ્દ દ્વારા વ્યક્ત થાય છે. 'ઇન્ડિયા' શબ્દનો ભારતની ભાષા અને સંસ્કૃતિ સાથે કોઈ સંબંધ નથી અને ન તો ઇતિહાસ સાથે કોઈ વૈચારિક સંબંધ છે. આપણા દેશનું સૌથી વધારે પ્રચલિત નામ ભારત જ રહ્યું છે. જ્યારે હિન્દુ શબ્દ પશ્ચિમમાં ગયો ત્યારે તે ગ્રીક ભાષામાં અપભ્રંશ થઈને ઇન્દુ બની ગયો.

ચંદ્રગુપ્ત મૌર્યના સમયમાં, ગ્રીક રાજદૂત મેગસ્થનીજ પાટલીપુત્ર આવ્યા હતા, ત્યારે તેમણે ભારતના વિષય પર એક પુસ્તક લખ્યું હતું, જેનું નામ ઇન્ડિકા હતું. ત્યારથી પશ્ચિમી દેશો તેને ઇન્ડિકા અથવા ઇન્ડિયા નામથી સંબોધિત કરે છે. ૨૦૦૪માં એક રાજકીય પક્ષે તેના ઘોષણાપત્રમાં ઇન્ડિયા નામ બદલીને ભારત રાખવાનું વચન આપ્યું હતું. વર્ષ ૨૦૧૫ અને ૨૦૨૦માં આ અંગે સુપ્રીમ કોર્ટમાં અરજી પણ દાખલ કરવામાં આવી ચૂકી છે.

આખરે સુપ્રીમ કોર્ટે કહ્યું કે આ મુદ્દાનો નિર્ણય સાંસદ એ લેવો પડશે. આમ પણ દેશોના નામ બદલવાની પરંપરા નવી નથી. હમણાંજ ટર્કીનું નામ બદલીને તુર્કીએ કરવામાં આવ્યું. વર્ષ ૧૯૭૨માં સિલોનનું નામ બદલી ને શ્રીલંકા કરવામાં આવ્યું. બર્માનું નામ બદલીને મ્યાનમાર કરવામાં આવ્યું. એવા ઘણા ઉદાહરણો છે

જ્યાં દેશોએ વસાહતી માનસિકતામાંથી બહાર આવવા માટે પોતાના દેશના નામમાં બદલાવ કર્યા. તાજેતરમાં, G20ની કંટ્રોલ શીટ પર પ્રેસીડન્ટ ઓફ ઇન્ડિયાની જગ્યાએ પ્રેસીડન્ટ ઓફ ભારત લખવામાં આવ્યું તે દર્શાવે છે કે ભારતના મૂળ પ્રિય છે.

આ એક આવકારદાયક પગલું છે. વર્તમાન સમયની જરૂરિયાત એ છે કે વિદેશી શબ્દ ઇન્ડિયાનો ઉપયોગ કરવાને બદલે આપણે ગુલામીની માનસિકતામાંથી બહાર આવીને ભારત શબ્દનો ઉપયોગ કરીએ અને ભારત શબ્દને સત્તાવાર ઉપયોગમાં લાવવા માટે તમામ યોગ્ય પગલાં લઈએ.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

email : nayapadkar@gmail.com (માત્ર જાહેરખબર માટે)
email : samacharsathi@gmail.com (માત્ર સમાચાર માટે)

સત્ય માટે, સહુની સાથે

નયા પડકાર

(માત્ર જાહેરખબર માટે)
email : nayapadkar@gmail.com
(માત્ર સમાચાર માટે)
email : samacharsathi@gmail.com

ટેલિફોન નં. ૨૫૨૮૪૦, ૨૫૩૪૪૦,૨૯૬૬૯૪
સાથી એસ્ટેટ, આણંદ

R.N.I. Reg. No. 43431/84 P.O. Regd. No. AND/ 39/ 2021-23 email : nayapadkar@gmail.com website : nayapadkar.in

વર્ષ : ૩૯ અંક ૧૮૮, ૧૭ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૩ રવિવાર ભાદરવા સુદ ૨ વિક્રમ સંવત ૨૦૭૯ મુદ્રક પ્રકાશક મેનેજિંગ તંત્રી : દીપકભાઈ પટેલ, ગુજરાત સાથી પ્રકાશન પ્રા.લિ. સાથી એસ્ટેટ, આણંદ Published from ANAND ટેલિફોન નં. ૨૫૨૮૪૦, ૨૫૩૪૪૦,૨૯૬૬૯૪ કિંમત : રૂ. ૨.૦૦ પાનાં : ૮

કોઈપણ ભાષામાં દેશનું નામ ભારત જ હોવું અને રહેવું જોઈએ

વિચાર

■પ્રો. રમાશંકર દુબે
કુલપતિ, ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
ગાંધીનગર

ભારત પ્રાચીન સમયથી એક સમૃદ્ધ સભ્યતા અને આધ્યાત્મિકતાવાળી સંસ્કૃતિ ધરાવતા રાષ્ટ્ર તરીકે જાણીતું છે. જેણે સતત સમગ્ર વિશ્વને પ્રભાવિત કર્યું છે. ભારત પોતાની પ્રજાનું પોષણ કરનાર અમૃતદાયીની 'ભારતાગ્નિ'નો પ્રદેશ છે. (ઋગ્વેદ ૫/૧૧/૧), જે 'ભારતાગ્નિ'ના પ્રભાવથી છ... અલગ-અલગ ઋતુઓ અને ... સમસિંધુ, વિશાળ નદીઓ જુદી જુદી દિશામાં વહે છે. એના કારણે આ શસ્ય શ્યામલા ફળદ્રુપ ભૂમિ પર લોકો પોતાનું ભરણપોષણ મેળવે છે.

'ભારતાગ્નિ' દ્વારા પોષાયેલી પ્રાકૃતિક સંપદાથી ભરપૂર આ ભૂમિમાં સદા જ્ઞાન પ્રાપ્તિમાં લીન રહેતા મનુષ્યોની આ ભૂમિ 'ભારત' નામથી સંબોધાવા લાગી. જે ભારતાગ્નિનો પર્યાય શબ્દ છે. (વિશ્વામિત્રસ્ય રક્ષતિ બ્રહ્મેદં ભારતં જનમ-ઋગ્વેદ ૩/૫૩/૧૨).

વિષ્ણુ પુરાણમાં દેશની પ્રાદેશિક સીમાઓનો ઉલ્લેખ આ આવી રીતે કરવામાં આવ્યો છે : ' સમુદ્રસ્ય હિમાદ્રેશ્ચૈવ દક્ષિણમ । તદ ભારતં નામ ભારતી યત્ર સન્તતિઃ' એટલે કે સમુદ્રની ઉત્તરે અને હિમાલયની દક્ષિણે આવેલ પ્રદેશનું નામ ભારત છે અને એના સંતાનોને ભારતીય કહેવામાં આવે છે. સ્કંદપુરાણના અધ્યાય ૩૭ મુજબ ઋષભદેવને ભરત નામનો પુત્ર હતો. જેના નામ પરથી આ ભૂમિનું નામ ભારત પડ્યું. આ ઉપરાંત ભારત નામ મહાભારતના પ્રથમ ભાગમાં શકુંતલા અને રાજા દુષ્યંતના પુત્ર ભરતના નામથી પડ્યું છે એવી પણ એક વાત માનવામાં આવે છે. ભરતના જન્મ પછી, ઋષિ કણ્વ તેમને આશીર્વાદ આપે છે કે તેઓ ચક્રવર્તી સમ્રાટ બનશે અને તેમના નામ પર આ ભૂમિ ભારતના નામે ઓળખાશે. મત્સ્ય પુરાણ (૧૧૪/૫.૬) અનુસાર લોકોનું ભરણપોષણ કરનાર આ દેશના શાસક (મનુ)ને ભારત કહેવામાં આવે છે. નાટ્યશાસ્ત્રના રચનાર ભરતમુનિ, રાજર્ષિ ભરત, દશરથના પુત્ર ભરત અને મહાભારતમાં તો ભારત નામનો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ મળે છે.

એ કહેવું તદ્દન વાજબી છે કે ભારત આપણી પ્રજામાનસનો અભિન્ન અંગ છે. ભારત માત્ર એક શબ્દ નથી, પરંતુ એક મંત્ર છે જેનું માત્ર ઉચ્ચારણ, 'ભા+ર+ત', પ્રકૃતિના ત્રણ ગુણ એટલે કે 'ભા' સત્વ (પ્રકાશ, જ્ઞાન), 'ર' એટલે રાજસ અને 'તા' એટલે તમસ, એટલે કે ત્રિવિધ શક્તિ. આના પરથી સ્પષ્ટ થાય છે કે ભારતીયોએ પોતાના દેશનું નામ ભારત રાખ્યું છે. આ બાબતમાં નોંધનીય છે કે 'ઇન્ડિયા' શબ્દ લગભગ અઢી હજાર વર્ષ પહેલા ભૌગોલિક સંદર્ભમાં વિદેશીઓ દ્વારા વપરાયેલ શબ્દ છે.

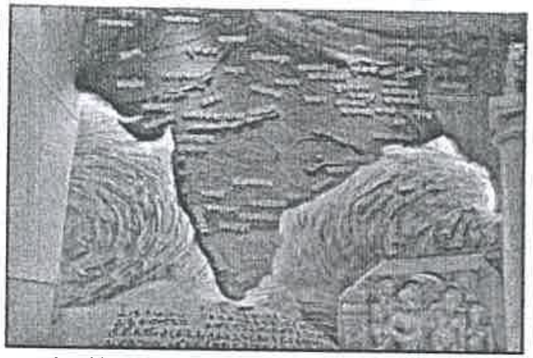

જે અંગ્રેજી શાસન દરમિયાન અંગ્રેજોએ ભારતમાં પ્રચલિત કર્યો. 'ઇન્ડિયા' શબ્દ આપણને ગુલામી માનસિકતાની સાથે અંગ્રેજો દ્વારા ભારતીય લોકોના શોષણની યાદ અપાવે છે. અંગ્રેજી શબ્દ 'મધર' ક્યારેય એ લાગણી વ્યક્ત કરી શકતો નથી જે આપણી ભાષામાં 'માં' શબ્દ દ્વારા વ્યક્ત થાય છે. 'ઇન્ડિયા' શબ્દનો ભારતની ભાષા અને સંસ્કૃતિ સાથે કોઈ સંબંધ નથી અને ન તો ઇતિહાસ સાથે કોઈ વૈચારિક સંબંધ છે. આપણા દેશનું સૌથી વધારે પ્રચલિત નામ ભારત જ રહ્યું છે. જ્યારે હિન્દુ શબ્દ પશ્ચિમમાં ગયો ત્યારે તે ગ્રીક ભાષામાં અપભ્રંશ થઈને ઇન્દુ બની ગયો.

ચંદ્રગુપ્ત મૌર્યના સમયમાં, ગ્રીક રાજદૂત મેગસ્થનીજ પાટલીપુત્ર આવ્યા હતા, ત્યારે તેમણે ભારતના વિષય પર એક પુસ્તક લખ્યું હતું, જેનું નામ ઇન્ડિકા હતું. ત્યારથી પશ્ચિમી દેશો તેને ઇન્ડિકા અથવા ઇન્ડિયા નામથી સંબોધિત કરે છે. ૨૦૦૪માં એક રાજકીય પક્ષે તેના ઘોષણાપત્રમાં ઇન્ડિયા નામ બદલીને ભારત રાખવાનું વચન આપ્યું હતું. વર્ષ ૨૦૧૫ અને ૨૦૨૦માં આ અંગે સુપ્રીમ કોર્ટમાં અરજી પણ દાખલ કરવામાં આવી ચૂકી છે.

આખરે સુપ્રીમ કોર્ટે કહ્યું કે આ મુદ્દાનો નિર્ણય સાંસદ એ લેવો પડશે. આમ પણ દેશોના નામ બદલવાની પરંપરા નવી નથી. હમણાંજ ટર્કીનું નામ બદલીને તુર્કીયે કરવામાં આવ્યું. વર્ષ ૧૯૭૨માં સિલોનનું નામ બદલી ને શ્રીલંકા કરવામાં આવ્યું. બર્માનું નામ બદલીને મ્યાનમાર કરવામાં આવ્યું. એવા ઘણા ઉદાહરણો છે

જ્યાં દેશોએ વસાહતી માનસિકતામાંથી બહાર આવવા માટે પોતાના દેશના નામમાં બદલાવ કર્યા. તાજેતરમાં, G20ની કંટ્રોલ શીટ પર પ્રેસીડન્ટ ઓફ ઇન્ડિયાની જગ્યાએ પ્રેસીડન્ટ ઓફ ભારત લખવામાં આવ્યું તે દર્શાવે છે કે ભારતના મૂળ ઊંડા છે.

આ એક આવકારદાયક પગલું છે. વર્તમાન સમયની જરૂરિયાત એ છે કે વિદેશી શબ્દ ઇન્ડિયાનો ઉપયોગ કરવાને બદલે આપણે ગુલામીની માનસિકતામાંથી બહાર આવીને ભારત શબ્દનો ઉપયોગ કરીએ અને ભારત શબ્દને સત્તાવાર ઉપયોગમાં લાવવા માટે તમામ યોગ્ય પગલાં લઈએ.

112

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

दैनिक नवज्योति Jaipur City - 04 Oct 2023 - Page 14

समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला गांधी के सिद्धांतों का अनुसरण

जी-20 की अध्यक्षता एवं मेजबानी भी गांधी के विचारों से प्रेरित

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। आज विश्व के अनेक देशों में आंतरिक अशांति, द्वंद, आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी समस्याएं एवं चुनौतियां खड़ी है और युद्ध के हालात बने हुए हैं या प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संघर्ष जारी है।

ऐसे हालातों में गांधीजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है और उन समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला गांधी के सिद्धांतों का अनुसरण करके किया जा सकता है। महात्मा गांधी के सर्वोदय के सिद्धांत की बात करें तो प्रतीत होता है, कि वे सभी का उदय करना चाहते थे। उन्होंने विकेंद्रीकरण की बात करते हुए कहा कि जब तक शासन-प्रशासन में अंतिम व्यक्ति की सहभागिता नहीं होगी तब तक देश का विकास संभव नहीं है। वे सभी धर्म का आदर करते थे और देश की आन, बान और शान के लिए, उन्होंने अपनी अंतिम सांसों तक प्रयास किया। महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता का दर्जा देने के पीछे यह अवधारणा है, कि उन्होंने देशभक्ति राष्ट्रीयता की भावना से जुड़ते हुए प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान में रखकर के अपना सब कुछ न्योछावर किया।

मानव के साथ ही पर्यावरण प्रेमी थे गांधीजी

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के गांधीवादी विचार एवं शांति अध्ययन केन्द्र के विभागाध्यक्ष प्रो.(डॉ.) जनक सिंह मीना ने कहा कि मोहनदास करमचंद गांधी से महात्मा गांधी बनने की साधना बहुत लंबी रही है।

यह किसी उत्परिवर्तन का परिणाम नहीं है, अपितु ऐसे सदमार्ग, सदाआचरण, सद व्यवहार, नैतिकता और सत्य पर सतत चलने का प्रतिफल है। गांधी के जीवन को प्रारंभ से लेकर अंत तक देखते हैं तो हमें ऐसे अनेक पड़ाव देखने को मिलते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि सरल व्यक्तित्व, व्यापक एवं दूर दृष्टिकोण, मानवतावादी दृष्टिकोण, सत्य और अहिंसा की दृढ़ताभरी हुई थी। वे न केवल मनुष्य तक सीमित थे, अपितु जीव जंतु, पेड़ पौधे और पर्यावरण के लिए भी उतने ही प्रयासरत थे, जितने मानव कल्याण के लिए थे।

गांधीजी आध्यात्मिक होने के साथ-साथ इसकी व्यावहारिकता की क्रियान्विति पर जोर देते थे। उनकी सोच में संपूर्ण विश्व ही एक परिवार था। हाल ही में भारत ने जी-20 की अध्यक्षता एवं मेजबानी करते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की थीम को विश्व के समक्ष रखते हुए एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का नारा दिया, जो की गांधी के विचारों से प्रेरित है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

National Education Policy-2020

Focuses on Critical Thinking

Prof. S. K. Agrawal

(Writer is the Professor at Centre for Comparative Literature & Translation Studies, School of Language, Literature & Culture Studies, Central University of Gujarat, Gandhinagar)

With its vision to improve the overall quality of education, National Education Policy- 2020 released on July 29, 2020 after a gap of thirty years, brings a paradigm shift in the education system of India. The NEP-2020 has sought to overhaul the whole spectrum of the Indian Education System by restructuring the contours of education. The Policy aims at fostering creativity, critical thinking, and the spirit of innovation in the students. Creativity and Critical Thinking play a vital role in bringing about transformation by generating new knowledge in varied areas. Critical Thinking is a way to improve thinking; the art of critical thinking involves an approach to thinking- more significantly learning- that embraces changing how one thinks about thinking. Critical thinking incorporates how learners develop and apply thoughts to understand how thinking can be improved. The basic idea undergirding the discipline of Critical Thinking is to determine strengths and weaknesses in one's thinking to maintain the strengths and make improvements by targeting the weaknesses.

Problem solving is the ultimate intent of critical thinking. Skills in problem solving, issue analyses and decision making are increasingly expected of employees. Evidence is growing that critical thinking is "expected" in the workplace. Recently more than 4000 senior HR professionals were asked in a survey to name the most important skills that their employees will need in the next five years. Critical Thinking ranked the highest, more than innovation or the application of information technology.

Advanced way of thinking : Critical thinkers are those who can move beyond "typical" thinking models to an advanced way of thinking. They produce both more ideas, and improved ideas; they become more adept in their thinking by using a variety of probing techniques which enable them to discover new and often improved ideas. Besides, critical thinkers tend to see the problem from many perspectives. Critical thinkers are also more willing to take intellectual risks.

NEP-2020 with its focus on critical thinking intends to develop in our learners the capacity to test their first impressions, make important discussions among choices and base their conclusion on evidence rather than their own feelings. Sensitive to their own limitations and predispositions, the learners double check the logic of their thinking and the workability of their solutions, identify imperfections and complications, anticipate negative responses, and generally refine their ideas. Our learners must learn to focus.

Critical thinking relates to acknowledging personal limitations, seeing problems as exciting challenges, using evidence to make judgements, thinking before acting, avoiding emotionalism, keeping an open mind, engaging in active listening, having comprehension as a goal. They are interested in others' ideas and are skeptical of extreme views.

Leading to success : Critical thinking is applicable whenever people are called to decide or resolve a problem. Working people make decisions. Good decisions move the business forward and increase profits. On the other hand, poor decisions hurt the business and reduce profits. Our learners who enter the field of Management and become upper- level executives shall not be having the responsibility of making decisions only; rather it shall accompany the problem solving also. Each person in an organization, no matter what their position is, makes hundreds of decisions every day, and each one has an opportunity for success or failure.

The practice of critical thinking encourages employees and managers to observe various situations, weigh all possible solutions, then decide a course of action. Using critical thinking proves advantageous, when it is modelled and promoted from top to the bottom of the organizational hierarchy. Advancing critical thinking is not merely a nice thing to do. It can literally improve profits and capabilities of employees. When enhanced critical thinking is applied, the organizations can witness a more qualitative corporate culture. The improved culture may translate into dollars or more revenue in the long run or improved personal communication, cooperation, and collaboration in the short run.

Critical thinking brings new ideas and processes both to the classroom and the workplace. For instance, when approaching problem solving, the issue surfaces in the classroom/ workplace is that it falls into a predetermined category. It does not make any assumptions and therefore, using the process of critical thinking in the workplace removes the temptation to immediately classify every issue under something that has happened in the past. Students, employees can look beyond conventional solutions, search for new ideas, and contemplate alternatives to address the problem. Applying critical thinking as an approach to problem solving, issue resolution or new products or processes can liberate thinking in many ways. In addition, critical thinking looks at the impact beyond a specific step in the decision process; i.e., if step-1 changes into a decision, then the follow-on steps need to be examined critically as well. Thus, critical thinking opens avenues of possibilities that otherwise would have remained closed.

Critical thinking skills learned in the classroom have an impact on future learning at the workplace as well. Once learned, these skills enable students to think deeply and critically about problems and issues and their individual role in their resolution. NEP-2020 encourages the students to bring forth critical thinking and creative skills. PM Modi has rightly said, "The education system for the future requires skilling, reskilling and upskilling and the new NEP which has been rolled out is addressing these requirements." He also advised the students to work out of the box ideas in diverse areas. As a matter of fact, critical thinking in NEP-2020 is directly related to developing innovative, progressive, and prosperous 'Atmanirbhar' Bharat (Self-Reliant India)

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

पत्रिका

110

सीयूजी में पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर संगोष्ठी

आज का भारत वैदिक काल की संस्कृति का वाहक : इंदुमति काटदरे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों है। आज का भारत वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के पराक्रम एवं विराट में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रीयता है, चित्ति है। पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने गांधीनगर स्थित गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में यह विचार व्यक्त किए।

गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में अतिथि ।

उन्होंने कहा कि चीन अर्वाचीनता का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमरीका साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। इस अवसर पर गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थी। प्रो. गुप्ता ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें मंदिर , श्मशान एवं पानी की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। कार्यक्रम में सीयूजी के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल, समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. तापस दलपति, गांधी विचार एवं शांति अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. जनक सिंह मीना, प्रो. अतानु महापात्र व अन्य संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

की खोज जैसे विशेषताओं को दर्शाता है, जो डीबीएस बैंक के उद्देश्य-संचालित, संबंध-नेतृत्व

तक पहुंचने का प्रयास रहा। इस साझेदारी पर सीमा नारायणन, मैनेजिंग डायरेक्टर - ग्रुप स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग एंड

पूरे भारत में लोकप्रियता हासिल कर रहा है, और यह साझेदारी हमें पाथ पुत्रा एथलीटों को अपना समर्थन देने का एक

को अपने साथ जोड़ने में बैंक की मदद करने के लिए उत्साहित है। हमें विश्वास है कि डीबीएस बैंक इंडिया

में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के साथ सीनियर रैंकिंग में शीर्ष -10 खिलाड़ियों में स्थान अर्जित किया है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat
109

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता एवं पूरे भूमडल को प्रभावित करने वाले अध्यात्म-प्रधान संस्कृति वाले सनातन राष्ट्र के रूप में विख्यात रहा है। भारत प्रजा का भरण-पोषण करनेवाली अमृतदायनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र है (ऋग्वेद 5/11/1), जिस भारताग्नि के प्रभाव से छः विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होनेवाली तीन समसिन्धुओं, विशाल नद और नदियों के कारण इस शस्य श्यामला उर्वरा भूमि पर प्रजा का भरण पोषण होता रहा है। भारताग्नि द्वारा पोषित प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस क्षेत्र में ज्ञानार्जन में सदा लीन रहने वाले मानवों सहित इस भूभाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने लगा (विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् - ऋग्वेद 3/53/12)।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' अर्थात समुद्र के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है, उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कन्द पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस भूभाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुन्तला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम को यश मिलता है। भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते है कि वो आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखण्ड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। मत्स्यपुराण (114/5,6) के अनुसार लोगों को भरण पोषण करने के कारण इस देश के शासक (मनु) को भारत कहा जाता है। नाट्यशास्त्र में वर्णित भरतमुनि, राजर्षि भरत, दशरथ पुत्र भरत और महाभारत में भारत शब्द का उल्लेख है। यह कहा जाना सर्वथा उचित है कि भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत महिमा पुस्तक में वर्णित है कि 'इयं निर्मला वत्सला मातृभूमिः, प्रसिद्धं सदा भारतं वर्षमेतत्। विभिन्ना जना धर्मजातिप्रभेदैः, रिहैकत्वभावं वहन्तो वसन्ति।' अर्थात यह भारतवर्ष की भूमि सर्वदा पवित्र और ममतामयी रही है। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मन्त्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा+र+त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है।

हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' - इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है। इस तरह के अनेक उदाहरण है जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का सदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत देश में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ

प्रो. रमाशंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया। इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग ढाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रचलित किया गया। इंडिया शब्द दासता भरे गुलामी मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों के द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा प्रणीत ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा अनायास प्रवाहित होने लगती है। हमारे अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नहीं कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है। भावनाओं के आलोक में प्रेरणामयी साकार हमने सदा भारत माता का उद्घोष किया है, वंदन किया है, क्योंकि इंडिया शब्द के साथ वह मातृ भाव आ ही नहीं सकता। इंडिया नाम का भारत देश की भाषा और संस्कृति से कोई मेल नहीं और ना ही इतिहास के साथ कोई वैचारिक संबंध है। भारतीयों के लिए राष्ट्रीय संवेदना और राष्ट्रप्रेम से जुड़ा यह मौलिक प्रश्न हमारी पीढ़ियों और पौराणिक संस्कृति का प्रतीक है। हमारी पहचान, हमारा संदर्भ, हमारा अस्तित्व और हमारी अस्मिता भारत में है। इंडिया और भारत को लेकर आज भी कई देश असमंजस में है। हमारे देश का गौरवशाली इतिहास और यहां की संस्कृति, सभ्यता की असली पहचान भारत नाम में ही छिपी है। हालांकि भारतभूमि को जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिमवर्ष, आर्यावर्त और हिन्दुस्तान जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है, लेकिन वैविध्यपूर्ण संस्कृति से ओत-प्रोत हमारे देश का सर्वाधिक प्रचलित नाम भारत ही रहा है। किसी भी देश के नाम में उस देश का संपूर्ण इतिहास और उसकी सभ्यता समाहित होती है। जैसे किसी व्यक्ति के नाम का अनुवाद नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार भारत को चाहे किसी भी भाषा में, किसी भी लिपि में लिखा जाय, वह भारत ही रहना चाहिए।

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मेगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत विषय पर किताब लिखी थी, जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश इसे इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे है। वास्तविकता में भारत शब्द का मूल तत्व गौण कर दिया गया ऐसे में भारत की छवि का वैश्विक स्तर पर प्रभाव भी इंडिया नाम के अनुरूप ही हो सका। हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके है। 2004 में एक राजनीतिक पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में इंडिया का नाम भारत करने का वादा किया था। वर्ष 2015 और 2020 में इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका डाली जा चुकी है। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस मुद्दे पर फैसला संसद में लेना होगा। वैसे भी देशों का नाम बदलने की परंपरा नयी नहीं है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया। ऐसे कई उदाहरण है जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

108

गुजरात वैभव

भारत देश मात्र एक भूमि नहीं अपितु एक सांस्कृतिक इकाई : प्रो इंदुमति काटदरे

पं. दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म दर्शन को साकार करने के लिए मंदिर श्मशान एवं पानी की अवधारणा पर कार्य करना जरूरी : प्रो. नीरजा गुप्ता

गांधीनगर। भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनो है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम एवं 'विराट में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है यह राष्ट्रीयता है, चित्ति है। यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध

का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थीं। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर, 'श्मशान एवं 'पानी की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में विश्व उपभोगवाद, अज्ञान, असंस्कारिता, आत्मविश्वास एवं आत्मीयता के अभाव से ग्रस्त है। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय संस्कृति के मूल को आत्मसात किया जाए। यह मूल संस्कृति एवं समृद्धि दोनों को साथ रखकर ही प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने विषय परवर्तन करते हुए बताया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। इस दौरान प्रो. एस के अग्रवाल ने सभी आगंतुक अतिथियों का परिचय दिया।

107

એકાત્મદર્શન એ સમાજશાસ્ત્ર, શિક્ષણ અને અર્થશાસ્ત્રની પુનઃરચના છેઃ ઈન્દુમતિ કાટધરે

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૭ ગાંધીનગર. "ભારત પ્રાચીન અને અર્વાચીન બંને છે - આજનું ભારત વૈદિક કાળની સંસ્કૃતિનું વાહક છે. ભારત પ્રાચીન સાંસ્કૃતિક સ્વરૂપ સાથે જીવંત છે. દરેક રાષ્ટ્રનો પોતાનો સ્વભાવ હોય છે, જેને ચિતિ કહેવામાં આવે છે. આ રાષ્ટ્રીય ચિતિ 'ચિતિ' છે. તે રાષ્ટ્રની 'વીરતા' અને 'વિરાટ' માં પ્રતિબિંબિત થાય છે.એ મૂળ સ્વભાવ કે જેનાથી લોકો વર્તે છે, તે રાષ્ટ્રવાદ અને ચિતિ છે'. આ વિચાર પુનરુત્થાન યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. ઈન્દુમતિ કાટધરેએ વ્યક્ત કર્યા હતા. પ્રો. કાટધરે સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત દ્વારા પં. દીનદયાળ ઉપાધ્યાયની જન્મજયંતિ નિમિત્તે આયોજિત સેમિનારમાં બોલી રહ્યા હતા. તેમણે કહ્યું કે ચીન 'અર્વાચીનતા'નો દાવો કરી શકે નહીં, કારણ કે ભગવાન બુદ્ધનું ચીન હવે સામ્યવાદી બનીને અમેરિકન સામ્યવાદ તરફ આગળ વધી રહ્યું છે. ભારત રાષ્ટ્ર માત્ર એક ભૂમિ નથી પરંતુ એક સાંસ્કૃતિક એકતા છે. આ સાંસ્કૃતિક એકતાનો મૂળ સ્વભાવ ચિતિ અથવા ચેતના છે. તેમના મૂળ સ્વભાવથી પ્રેરિત થઇ લોકો જે વર્તન કરે છે તે રાષ્ટ્રીયતા છે ચિતિ છે. આ પ્રસંગે મુખ્ય મહેમાન તરીકે ગુજરાત યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. નીરજા અરુણ ગુપ્તા હતા. પ્રો. ગુપ્તાએ તેમના વક્તવ્યમાં કહ્યું હતું કે દીનદયાલ ઉપાધ્યાયની એકાત્મ દર્શનને અમલમાં મૂકવા માટે આપણે 'મંદિર', 'સ્મશાન' અને 'પાણી'ની વિભાવના પર કામ કરવું પડશે. આના દ્વારા જ દીનદયાલ ઉપાધ્યાયનાં એકાત્મ માનવવાદને ભારતમાં અમલમાં મૂકી શકાશે . તેમણે કહ્યું કે આપણો ઈતિહાસ પશ્ચિમથી પ્રભાવિત છે. હમણાંસુધી આપણો 'વિમર્શ' સંસ્થાનવાદી શક્તિઓ દ્વારા નક્કી કરવામાં આવ્યો છે. આમાં ફેરફાર થવો જોઈએ. વર્તમાન સંદર્ભમાં જ્યારે વિશ્વ વિવિધ પ્રકારની મુસીબતોથી પીડિત છે ત્યારે એકાતીમ માનવવાદની ઉપયોગીતા વધુ છે, કારણ કે એકાત્મ માનવાવાદનો પાયાનો સિદ્ધાંત છે જગતનો વિચાર કરો સૌનું કલ્યાણ થાવ ,.

ભારત સંકટગ્રસ્ત વિશ્વને મજબૂત બનાવશે

અત્યારે વિશ્વ ઉપભોક્તાવાદ, અજ્ઞાનતા, અસંસ્કારિતા , આત્મવિશ્વાસ અને આત્મીયતાના અભાવથી પીડાઈ રહ્યું છે. આ માટે ભારતીય સંસ્કૃતિના મૂળને આત્મસાત કરવું જરૂરી છે. મૂળ સંસ્કૃતિ અને સમૃદ્ધિ બંનેને સાથે રાખીને જ આ પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. કાર્યક્રમના સંયોજક ડો. બાલુદાન બારહઠે વિષય બદલતા જણાવ્યું હતું કે પંડિત દીનદયાલ ઉપાધ્યાયનું એકાત્મ માનવ તત્વજ્ઞાનનું ચિંતન વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં સર્વસમાવેશક માર્ગ છે. પ્રો. એસ.કે.અગ્રવાલે આવનાર તમામ મહેમાનોનો પરિચય કરાવ્યો હતો. કાર્યક્રમમાં સીયુજી રજીસ્ટ્રાર પ્રો. એચ.બી.પટેલ, ફેકલ્ટી ઓફ સોશિયલ સાયન્સના ડીન પ્રો. તાપસ દલપતિ, સેન્ટર ફોર ગાંધી થોટ એન્ડ પીસ સ્ટડીઝના અધ્યક્ષ પ્રો. જનકસિંહ મીણા, ઊછઝ ના ડાયરેક્ટર પ્રો. અતનુ મહાપાત્રા, ફેકલ્ટી સભ્યો, સંશોધકો અને વિદ્યાર્થીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

રાષ્ટ્રીય કવિ રામધારી સિંહ દિનકરની જન્મજયંતિ ઉજવાઈ

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૭ સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતના રાજભાષા સેલ દ્વારા

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

समाजशास्त्र, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र की पुनर्व्यवस्था है एकात्म दर्शन : इंदुमति काटदरे

समाचार जगत ब्यूरो

गांधीनगर। भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम' एवं 'विराट' में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है,

चिति है।र यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता' का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चिति या चैतन्य है। मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा जो व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चिति है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थीं। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर', 'श्मशान' एवं 'पानी' की अवधारणा पर काम करना होगा।

समाजशास्त्र, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र की पुनर्व्यवस्था है एकात्म दर्शन : इंदुमति काटदरे

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

जयपुर टाइम्स

गांधीनगर। "भारत प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनो है- वैदिक काल की संस्कृति का वाहक है आज का भारत। भारत पुराने सांस्कृतिक स्वरूप को लेकर जीवित है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है इसे ही चिति कहा जाता है। यह राष्ट्र चिति उस राष्ट्र के 'पराक्रम' एवं 'विराट' में परिलक्षित होती है जिस मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चित्ति है।" यह विचार पुनरुत्थान विद्यापीठ की कुलपति प्रो. इंदुमति काटधरे ने व्यक्त किये। प्रो. काटधरे गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि चीन 'अर्वाचीनता' का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि भगवान बुद्ध का चीन अब साम्यवादी होकर अमेरिकी साम्यवाद की ओर बढ़ रहा है। भारत राष्ट्र मात्र एक भूमि नहीं है अपितु एक सांस्कृतिक इकाई है। इस सांस्कृतिक इकाई का मूल स्वभाव ही चित्ति या चैतन्य है। मूल स्वभाव से प्रेरित होकर प्रजा जो व्यवहार करती है वह राष्ट्रियता है, चित्ति है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता थी। प्रो. गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को क्रियान्वित करने के लिए हमें 'मंदिर' , 'श्मशान' एवं 'पानी' की अवधारणा पर काम करना होगा। इसके माध्यम से ही दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को भारत में लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारा इतिहास पश्चिम से प्रभावित रहा है। हमारा 'विमर्श' औपनिवेशिक शक्तियों के द्वारा तय किया जाता रहा है। इसमें परिवर्तन लाना होगा। वर्तमान संदर्भ में एकात्म मानव दर्शन की उपादेयता ओर बढ़ जाती है जबकि विश्व विभिन्न प्रकार के संतापों से त्रस्त है, क्योंकि एकात्म मानव दर्शन का मूल है सबका कल्याण हो, विश्व का चिंतन करो।

संकटग्रस्त विश्व को भारत बनाएगा सामर्थ्यवान

वर्तमान में विश्व उपभोगवाद, अज्ञान, असंस्कारिता, आत्मविश्वास एवं आत्मीयता के अभाव से ग्रस्त है। इसके लिए जरूरी है कि भारतीय संस्कृति के मूल को आत्मसात किया जाए। यह मूल संस्कृति एवं समृद्धि दोनों को साथ रखकर ही प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. बालुदान बारहठ ने विषय परवर्तन करते हुए बताया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन का चिंतन वैश्विक दृष्टिकोण से सर्वसमावेशी मार्ग है। इस दौरान प्रो. एस के अग्रवाल ने सभी आगंतुक अतिथियों का परिचय दिया। कार्यक्रम में सीयूजी के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल, समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. तापस दलपति, गांधी विचार एवं शांति अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. जनक सिंह मीना, आईक्यूएसी निदेशक प्रो. अतानु महापात्र उपस्थित संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता के साथ पूरे भू-मंडल को प्रभावित करने वाला एक आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में प्रसिद्ध रहा है। भारत प्रजा का भरण-पोषण करने वाला एक अमृतदायिनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र रहा है।

ऋग्वेद के 5/11/1 में उल्लेखित है कि जिस भारताग्नि के प्रभाव से 6 विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होने वाली 3 सप्त सिंधुओं और नदियों के कारण इस भारत भूमि पर प्रजा का भरण-पोषण होता रहा है, प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस भू-भाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने लगा।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' इसका अर्थ है कि समुद्र के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है, उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कंद पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस भू भाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुंतला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम को बल मिलता है।

भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते हैं कि वह आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखंड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा हुआ है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा-र-त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है।

प्रो. रमाशंकर दूबे
(कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अनेकता में एकता का संदेश देता हमारा भारत: इस तरह के अनेक उद्धरण हैं जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का संदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया।

इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रचलित किया गया। इंडिया शब्द गुलाम मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा दिया गया ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा प्रवाहित होती है। हमारी अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

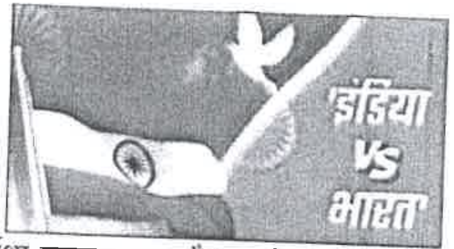

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नहीं कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है।

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मेगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत विषय पर किताब लिखी थी, जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश इसे इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे हैं।

हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके हैं। वैसे भी देशों का नाम वास्तविक अर्थ के साथ बदलने की परंपरा नई नहीं है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है।

वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि हम विदेशी शब्द इंडिया का प्रयोग न करते हुए गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर भारत शब्द का प्रयोग करें तथा भारत शब्द को आधिकारिक रूप से प्रयोग में लाने के लिए सभी उपयुक्त कदम उठाए जाएं।

पंजाब केसरी
FRI, 15 SEPTEMBER 2023
EDITION: JALANDHAR, PAGE NO. 4

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता के साथ पूरे भू-मंडल को प्रभावित करने वाली एक आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में प्रसिद्ध रहा है। भारत प्रजा का भरण-पोषण करने वाला एक अनुप्रदायिनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र रहा है।

ऋग्वेद के 5/11/1 में उल्लेखित है कि जिस भारताग्नि के प्रभाव से 6 विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होने वाली 3 सप्त सिंधुओं और नदियों के कारण इस भारत भूमि पर प्रजा का भरण-पोषण होता रहा है. प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस भू-भाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने लगा।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' इसका अर्थ है कि समुद्र के उत्तर में, हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है, उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कंद पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस भू भाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुंतला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम को बल मिलता है।

भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते हैं कि वह आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखंड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा हुआ है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा+र+त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है।

प्रो. रमाशंकर दूबे
(कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अनेकता में एकता का संदेश देता हमारा भारत: इस तरह के अनेक उद्धरण हैं जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का संदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया।

इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रचलित किया गया। इंडिया शब्द गुलाम मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा दिया गया ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा प्रवाहित होती है। हमारी अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नहीं कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है।

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मैगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत विषय पर किताब लिखी थी, जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश इसे इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे हैं।

हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके हैं। वैसे भी देशों का नाम वास्तविक अर्थ के साथ बदलने की परंपरा नई नहीं है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है।

वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि हम विदेशी शब्द इंडिया का प्रयोग न करते हुए गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर भारत शब्द का प्रयोग करें तथा भारत शब्द को आधिकारिक रूप से प्रयोग में लाने के लिए सभी उपयुक्त कदम उठाए जाएं।

करेंगे। भारत को जी-20 की अध्यक्षता भ-राजनीतिक

اسے اور 19 دیگر شیرپاؤں کو پریشان کردیا تھا۔ سیمکس کی مدد سے ایک اتفاق رائے حاصل کرنا تھا۔ اس میں 20 شیرپاؤں اور متعلقہ ریاستوں کی وزارت خارجہ

چین نے اس لوتاہی کا فائدہ اٹھاتے ہوئے افرادی افریقی ممالک کو نازک وقت میں مدد کی پیشکش کی ہے۔ دوسرا بڑا فیصلہ جس پر ابھی تک عمل درآمد نہیں ہوا ہے اور

میں پنجاب میں میرے قیام کے دوران کینیڈین پارلیمنٹیرینز کے ایک وفد نے امرتسر کا دورہ کیا۔
(jfr5529@gmail.com)

کانت ہمارے ملک کی نمائندگی کرنے والے سرکاری شیرپا تھے جو میٹنگ کی تیاریوں میں تمام کاموں میں مصروف تھے۔ان کا بھی دن دھوپ میں گزرا۔

ورچونکہ وہ
۔عدالت
۔پی۔پتی
زندگی میں
مالہ بوڑھی
ری کیا۔
نے اپنے
لیا کرنے
داس شرما
ینے والے
گزارے
زرگ مبلا
بضہ کرنے
لوٹانے کا
کو بے دخل
بٹ نے کہا
۔
کو ہردوار
بس کی ٹیم
کے حکم کے

ہر زبان میں ملک کا نام 'بھارت' ہی رہنا چاہیے

'بھارت' اناوی کال سے ایک خوشحال تہذیب کے ساتھ پورے بھو منڈل کو متاثر کرنے والی ایک روحانی سنسکرتی کی شکل میں مشہور رہا ہے۔ بھارت پرجا کا بھرن۔پوشن کرنے والا ایک امرت دایکنی' بھارت اگنی' کا خطہ رہا ہے۔ رگ وید میں ذکر ہے کہ جس بھارت اگنی کے اثر سے 6 مختلف موسموں اور مختلف سمتوں میں پرواہت ہونے والی تین سپت سندھوؤں اور ندیوں کی وجہ سے اس بھارت بھومی پر پرجا کا بھرن پوشن ہوتا رہا ہے۔ قدرتی سمپدا سے بھرپور اس بھو بھاگ کو بھارت اگنی کے ساتارتمی لفظ 'بھارت' کے نام سے مخاطب کیا جانے لگا۔ وشنو پران میں ملک کی علاقائی سرحدوں کا ذکر کرتے ہوئے بتایا گیا ہے کہ سمندر کے شمال میں ہمالیہ کے جنوب میں جو ورش (خطہ) ہے، اس کا نام بھارت ہے۔ یہاں کی پرجا کو بھارتیہ پرجا کہتے ہیں۔ وہیں سکند پران میں ادھیائے 37 کے مطابق رشبھ دیو کے بیٹے بھرت ہوئے جن کے نام پر اس بھو بھاگ کا نام بھارت پڑا۔ اس کے علاوہ مہابھارت کے آدی پرب میں شکنتلا اور راجہ دشینت کے بیٹے بھرت کے نام سے بھارت نام کو بل ملتا ہے۔ بھرت کے جنم کے بعد رشی کنو انہیں آشیرواد دیتے ہیں کہ وہ آگے چل کر چکرورتی سمراٹ بنیں گے اور ان کے نام پر اس بھوکھنڈ کا نام بھارت مشہور ہوگا۔ متسیہ پران کے مطابق لوگوں کو بھرن پوشن کرنے کی وجہ سے اس ملک کے شاسک (منو کو) بھارت کہا جاتا ہے۔ بھارت ہمارے جن مانس کا اٹوٹ انگ ہے۔ بھارت لفظ کا مطلب ہی ہے لوک پال اور وشو رکشک۔ بھارت مہا پستک میں ذکر ہے۔ یہ بھارت ورش کی بھومی سرودا پوتر اور ممتا مئی رہی ہے۔ بھارت نام کا پورا تک مہتو ہمارے بھارتیہ جن مانس میں رچا بسا ہوا ہے۔ بھارت صرف لفظ نہیں ہے بلکہ ایسا منتر ہے جس کے تلفظ سے 'بھا+ر+ت' سے پرکرتی کے تینوں گن یعنی 'بھا' سے ستو (پرکاش، گیان)، 'ر' سے رجس اور 'ت' تمس یعنی ترگی شکتی کا آہوان ہوجاتا ہے۔

پروفیسر رما شنکر دوبے
(وائس چانسلر، گجرات سینٹرل یونیورسٹی)

ہمارے راشٹر گان میں بھارت کی مہم کا ذکر فخر کے ساتھ کیا گیا ہے۔ 'جن گن من ادھینایک جے ہے، بھارت بھاگیہ ودھاتا' اس لائن میں بھارت کی تعریف ایک پرم دویہ شکتی کے طور پر کی گئی ہے۔ اس میں بھارت کی سماجی اور جغرافیائی تنوع کے ساتھ قدرتی خوبصورتی کا ذکر بھی کیا گیا ہے۔ انیکتا میں ایکتا کا پیغام دیتا ہمارا بھارت: اس طرح کی بہت ساری مثالیں ہیں جس میں ہمیں وسودھا شالی بھارت ورش کا حوالہ دکھائی پڑتا ہے۔ انیکتا میں ایکتا کا پیغام دینے والے بھارت میں مختلف طرح کی سنسکرتی، زبان، پنتھ اور پہچان والے لوگوں کو ایک ساتھ ایک جھنڈے کے نیچے ایکتا کے سوتر میں پرویا گیا ہے۔ اس سے یہ واضح ہے کہ بھارتیوں نے اپنے ملک کیلئے 'بھارت' نام دیا۔ اس بارے میں قابل ذکر ہے کہ 'انڈیا' لفظ ایک جغرافیائی تناظر میں بدیشیوں کے ذریعے تقریباً ڈھائی ہزار سال پہلے استعمال کیا گیا لفظ ہے جو انگریزی حکومت کے دوران انگریزوں کے ذریعے بھارت میں پرچلت کیا گیا۔

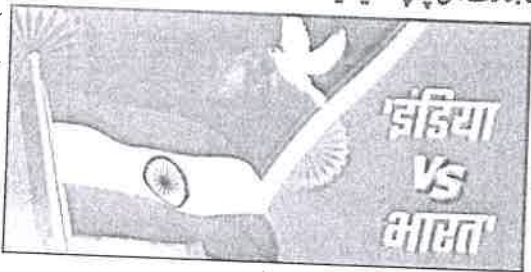

انڈیا لفظ داستان بھری غلامی ذہنیت کی یاد دلاتا ہے۔ انگریزوں کے ذریعے بھارتیہ جن مانس کے استحصال کی یاد دلاتا ہے جبکہ 'بھارت' لفظ اس ملک کی ثقافتی وراثت ہے۔ جس کے تلفظ سے ہمارے دل و دماغ میں ویدک رشیوں کے ذریعے دیا گیا گیان۔ وگیان اور سنسکاروں کی دھارا پرواہت ہوتی ہے۔ ہمارے زیادہ تر بھارتیہ بھاشاؤں میں بھی بھارت لفظ کا ہی ذکر کیا گیا ہے۔ یہاں یہ ذکر کرنا بھی ضروری ہے کہ جذباتی سطح پر کئی لفظوں کے حقیقی مراہم کو سمجھنے کیلئے غیر ملکی زبان نہیں بلکہ اپنی ماٹی سے اپجی ہوئی زبان کا استعمال بھی سب سے زیادہ مناسب رہتا ہے۔ مثال کے طور پر انگریزی کا مدر لفظ کبھی بھی وہ جذبہ ظاہر نہیں کرسکتا جو 'ماں' لفظ کے ذریعے سے ظاہر ہوتا ہے۔ کسی بھی ملک کا نام اس کے ثقافتی اور پہچان کی عکاسی کرتا ہے۔ جذبات کے تناظر میں پریرنا مئی سمجھ کر ہم نے ہمیشہ بھارت ماتا کا ادگھوش کیا ہے، وندن کیا ہے، کیونکہ انڈیا لفظ کے ساتھ وہ ماتر بھاو آ ہی نہیں سکتا۔ انڈیا نام کا بھارت ملک کی زبان اور سنسکرتی سے کوئی میل نہیں اور نہ ہی اتہاس کے ساتھ کوئی نظریاتی تعلق ہے۔ بھارتیوں کیلئے تو ہمدردی اور راشٹر پریم سے جڑا یہ مولک سوال ہماری نسلوں اور پورا سنسکرتی کی علامت ہے۔ ہماری پہچان، ہمارا تناظر، ہمارا وجود اور ہماری عصمت بھارت میں ہے۔ اور بھارت کو لے کر آج بھی کئی ممالک کشمکش میں ہیں۔ انڈیا لفظ سے ہمارے ملک کی اصل پہچان ہی ممکن نہیں ہے۔ ہندو لفظ جب مغرب میں گیا تو گریک زبان میں اپ بھرنش ہوکر اندو بن گیا۔ چندرگپت موریہ کے وقت گریس کا راج دوت میگستھنیز پاٹلی پتر آیا تھا تب اس نے بھارت کے موضوع پر کتاب لکھی تھی جس کا نام انڈیکا تھا۔ تب سے مغرب کے ممالک اسے انڈیا یا انڈیکا نام سے ہی مخاطب کرتے رہے ہیں۔

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

ਹਰ ਭਾਸ਼ਾ 'ਚ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਂ 'ਭਾਰਤ' ਹੀ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦ

'ਭਾਰਤ' ਆਦਿਕਾਲ ਤੋਂ ਇਕ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਸੱਭਿਅਤਾ ਨਾਲ ਪੂਰੇ ਭੂ-ਮੰਡਲ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਇਕ ਅਧਿਆਤਮਕ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਤੌਰ 'ਤੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਪਰਜਾ ਦਾ ਭਰਨ-ਪੋਸ਼ਣ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਇਕ ਅੰਮ੍ਰਿਤਦਾਈ 'ਭਾਰਤਅਗਨੀ' ਦਾ ਖੇਤਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਰਿਗਵੇਦ ਦੇ 5/11/1 'ਚ ਜ਼ਿਕਰ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਭਾਰਤਅਗਨੀ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨਾਲ 6 ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰੁੱਤਾਂ ਅਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ 'ਚ ਪ੍ਰਵਾਹਿਤ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ 3 ਸਪਤ ਸਿੰਧੂਆਂ ਅਤੇ ਨਦੀਆਂ ਕਾਰਨ ਇਸ ਭਾਰਤ ਭੂਮੀ 'ਤੇ ਪਰਜਾ ਦਾ ਭਰਨ-ਪੋਸ਼ਣ ਹੁੰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੁਦਰਤੀ ਸੰਪਦਾ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਇਸ ਭੂ-ਭਾਗ ਨੂੰ ਭਾਰਤਅਗਨੀ ਦੇ ਸਮਾਨਾਰਥਕ ਸ਼ਬਦ 'ਭਾਰਤ' ਦੇ ਨਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਣ ਲੱਗਾ।

ਵਿਸ਼ਨੂੰ ਪੁਰਾਣ 'ਚ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਖੇਤਰੀ ਹੱਦਾਂ ਦਾ ਵਰਨਣ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਸਮੁੰਦਰ ਦੇ ਉੱਤਰ 'ਚ, ਹਿਮਾਲਿਆ ਦੇ ਦੱਖਣ 'ਚ ਜੋ ਸਾਲ (ਖੇਤਰ) ਹੈ, ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਭਾਰਤ ਹੈ। ਇੱਥੋਂ ਦੀ ਪਰਜਾ ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਪਰਜਾ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਧਰ ਸਕੰਦ ਪੁਰਾਣ 'ਚ ਅਧਿਆਏ 37 ਅਨੁਸਾਰ ਰਿਸ਼ਭਦੇਵ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਭਰਤ ਹੋਏ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਂ 'ਤੇ ਇਸ ਭੂ-ਭਾਗ ਦਾ ਨਾਂ ਭਾਰਤ ਪਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਮਹਾਭਾਰਤ ਦੇ ਆਦਿਪਰਵ 'ਚ ਸ਼ਕੁੰਤਲਾ ਅਤੇ ਰਾਜਾ ਦੁਸ਼ਯੰਤ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਭਰਤ ਦੇ ਨਾਂ ਤੋਂ ਭਾਰਤ ਨਾਂ ਨੂੰ ਬਲ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

ਭਰਤ ਦੇ ਜਨਮ ਪਿੱਛੋਂ ਰਿਸ਼ੀ ਕਣਵ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਅੱਗੇ ਚੱਲ ਕੇ ਚੱਕਰਵਰਤੀ ਸਮਰਾਟ ਬਣਨਗੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਂ 'ਤੇ ਇਸ ਭੂ-ਖੰਡ ਦਾ ਨਾਂ ਭਾਰਤ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੋਵੇਗਾ। ਭਾਰਤ ਸਾਡੇ ਜਨਮਾਨਸ ਦਾ ਅਨਿੱਖੜਵਾਂ ਅੰਗ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਹੀ ਹੈ ਲੋਕਪਾਲ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਵਰੱਖਿਅਕ।

ਭਾਰਤ ਨਾਂ ਦਾ ਪੌਰਾਣਿਕ ਮਹੱਤਵ ਸਾਡੇ ਭਾਰਤੀ ਜਨਮਾਨਸ 'ਚ ਰਚਿਆ-ਵਸਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਸਿਰਫ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਅਜਿਹਾ ਮੰਤਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਉਚਾਰਨ ਨਾਲ ਹੀ 'ਭਾ-ਰ-ਤ' ਨਾਲ ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਤਿੰਨੋਂ ਗੁਣ ਭਾਵ 'ਭਾ' ਤੋਂ ਸਤਵ (ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਗਿਆਨ), 'ਰ' ਤੋਂ ਰਜਸ ਅਤੇ 'ਤ' ਤੋਂ ਤਮਸ ਭਾਵ ਤੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦਾ ਬੋਧ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਰਾਸ਼ਟਰਗਾਨ 'ਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਦਾ ਵਰਨਣ ਮਾਣ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। 'ਜਨ ਗਣ ਮਨ ਅਧਿਆਨਾਇਕ ਜਯ ਹੇ, ਭਾਰਤ ਭਾਗਯ ਵਿਧਾਤਾ' ਇਸ ਸਤਰ 'ਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਸਿਫਤ ਇਕ ਪਰਮ ਦਿਵਯ ਸ਼ਕਤੀ ਵਜੋਂ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ 'ਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਭੂਗੋਲਿਕ ਵੱਖਰਤਾ ਨਾਲ ਕੁਦਰਤੀ

ਪ੍ਰੋ. ਰਮਾਸ਼ੰਕਰ ਦੂਬੇ
(ਚਾਂਸਲਰ, ਗੁਜਰਾਤ ਕੇਂਦਰੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ)

ਸੁੰਦਰਤਾ ਦਾ ਵੀ ਚਿੱਤਰਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਅਨੇਕਤਾ 'ਚ ਏਕਤਾ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੰਦਾ ਸਾਡਾ ਭਾਰਤ : ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਈ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ 'ਚ ਸਾਨੂੰ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਭਾਰਤਵਰਸ਼ ਦਾ ਸੰਦਰਭ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਅਨੇਕਤਾ 'ਚ ਏਕਤਾ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਭਾਰਤ 'ਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ, ਭਾਸ਼ਾ, ਪੰਥ ਅਤੇ ਪਛਾਣ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠੇ ਇਕ ਝੰਡੇ ਹੇਠਾਂ ਏਕਤਾ ਦੇ ਸੂਤਰ 'ਚ ਪਿਰੋਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਹ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਭਾਰਤੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਲਈ 'ਭਾਰਤ' ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ।

ਇਸ ਵਿਸ਼ੇ 'ਚ ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਹੈ ਕਿ 'ਇੰਡੀਆ' ਸ਼ਬਦ ਇਕ ਭੂਗੋਲਿਕ ਸੰਦਰਭ 'ਚ ਵਿਦੇਸ਼ੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਲਗਭਗ ਢਾਈ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਵਰਤਿਆ ਗਿਆ ਸ਼ਬਦ ਹੈ ਜੋ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਸ਼ਾਸਨ ਦੌਰਾਨ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਵੱਲੋਂ ਭਾਰਤ 'ਚ ਪ੍ਰਚੱਲਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇੰਡੀਆ ਸ਼ਬਦ ਦਾਸਤਾਂ ਭਰੀ ਗੁਲਾਮ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਦੀ ਯਾਦ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਵੱਲੋਂ ਭਾਰਤੀ ਜਨਮਾਨਸ ਦੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦੀ ਯਾਦ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹੈ ਜਦਕਿ 'ਭਾਰਤ' ਸ਼ਬਦ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਵਿਰਾਸਤ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਉਚਾਰਨ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਮਨ-ਮਸਤਕ 'ਚ ਵੈਦਿਕ ਰਿਸ਼ੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਗਿਆਨ-ਵਿਗਿਆਨ ਤੇ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਦੀ ਧਾਰਾ ਪ੍ਰਵਾਹਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸਾਡੀਆਂ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਭਾਰਤੀ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ 'ਚ ਵੀ ਭਾਰਤ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਹੀ ਵਰਨਣ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਇੱਥੇ ਇਹ ਵਰਨਣ ਕਰਨਾ ਵੀ ਸਹੀ ਹੈ ਕਿ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਕਈ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਸਲ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਆਪਣੀ ਮਿੱਟੀ ਤੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਹੀ ਸਭ ਤੋਂ ਢੁੱਕਵੀਂ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਉਦਾਹਰਣ ਲਈ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਮਦਰ ਸ਼ਬਦ ਕਦੀ ਵੀ ਉਹ ਭਾਵ ਪ੍ਰਗਟ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਜੋ 'ਮਾਂ' ਸ਼ਬਦ ਲਈ ਪ੍ਰਗਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਂ ਉਸ ਦੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸਕ ਪਛਾਣ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਬਿੰਬ ਹੈ।

ਇੰਡੀਆ ਸ਼ਬਦ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਅਸਲ ਪਛਾਣ ਹੀ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਹਿੰਦੂ ਸ਼ਬਦ ਜਦੋਂ ਪੱਛਮ 'ਚ ਗਿਆ ਤਾਂ ਗ੍ਰੀਕ ਭਾਸ਼ਾ 'ਚ ਅਪਭ੍ਰੰਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਇੰਦੂ ਬਣ ਗਿਆ। ਚੰਦਰਗੁਪਤ ਮੌਰਿਆ ਦੇ ਸਮੇਂ ਯੂਨਾਨ ਦਾ ਰਾਜਦੂਤ ਮੈਗਸਥਨੀਜ਼, ਪਾਟਲੀਪੁੱਤਰ ਆਇਆ ਸੀ, ਉਦੋਂ ਉਸ ਨੇ ਭਾਰਤ ਵਿਸ਼ੇ 'ਤੇ ਕਿਤਾਬ ਲਿਖੀ ਸੀ, ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਂ ਇੰਡੀਕਾ ਸੀ। ਉਦੋਂ ਤੋਂ ਪੱਛਮ ਦੇ ਦੇਸ਼ ਇਸ ਨੂੰ ਇੰਡੀਕਾ ਜਾਂ ਇੰਡੀਆ ਨਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਸੰਬੋਧਨ ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਹਨ।

ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਂ ਮੁੜ ਭਾਰਤ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਨੂੰ
ਕਈ ਯਤਨ ਹੋ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਉਂਝ ਵੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦਾ ਨਾਂ
ਅਰਥ ਦੇ ਨਾਲ ਬਦਲਣ ਦੀ ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਨਵੀਂ ਨਹੀਂ ਹੈ।
ਹੀ 'ਚ ਤੁਰਕੀ (ਟਰਕੀ) ਦਾ ਨਾਂ ਬਦਲ ਕੇ ਤੁਰਕੀਏ ਕ
ਗਿਆ, ਸਾਲ 1972 'ਚ ਸੀਲੋਨ ਦਾ ਨਾਂ ਬਦਲ ਕੇ ਸ਼੍ਰੀ
ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਬਰਮਾ ਦਾ ਨਾਂ ਬਦਲ ਕੇ ਮਿਆਂਮਾਰ ਕ
ਗਿਆ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਕਈ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਹਨ ਜਿੱਥੇ ਦੇਸ਼
ਬਸਤੀਵਾਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤ
ਨਿਕਲਣ ਲਈ ਆਪਣੇ
ਦਾ ਨਾਂ ਬਦਲ ਦਿੱਤਾ।

ਸਾਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੀ
ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਨੂੰ ਕਾ
ਬਣਾਉਣ ਤੇ ਇਸ ਦੇ
ਨੂੰ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਦੇਣ ਲਈ ਭ
ਨਾਂ ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਸਮੇਤ ਮੁੜ
ਵਿਸ਼ਵ 'ਚ ਸਥਾਪਿਤ ਕ
ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਗੁਲਾਮੀ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਬ
ਆਉਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਹਾਲ ਹੀ 'ਚ ਜੀ-20 ਦੇ ਸੱਦ
'ਪ੍ਰੈਜ਼ੀਡੈਂਟ ਆਫ ਇੰਡੀਆ' ਦੀ ਥਾਂ 'ਪ੍ਰੈਜ਼ੀਡੈਂਟ ਆਫ ਭਾ
ਲਿਖਿਆ ਹੋਣਾ ਇਹ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਭਾਰਤ ਆ
ਮੂਲ 'ਚ ਡੂੰਘਾਈ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਇਹ
ਸਵਾਗਤਯੋਗ ਕਦਮ ਹੈ।

ਵਰਤਮਾਨ ਸਮੇਂ ਦੀ ਇਹ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਵਿ
ਸ਼ਬਦ ਇੰਡੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਗੁਲਾਮੀ
ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਕੇ ਭਾਰਤ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਵ
ਕਰੀਏ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਸ਼ਬਦ ਨੂੰ ਅਧਿਕਾਰਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਵ
'ਚ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਸਾਰੇ ਢੁੱਕਵੇਂ ਕਦਮ ਉਠਾਏ ਜਾਣ

ਜਗ ਬਾਣੀ ਈ-ਪੇਪਰ
Fri, 15 September 2023
Edition: jalandhar main, Page no. 6

नवोदय टाइम्स
नई दिल्ली
NAVODAYA TIMES, New Delhi
ABC से प्रमाणित 1,27,752 प्रतियां प्रतिदिन (औसत: जनवरी-जून 2022)
..., 2023 तदनुसार 30 भाद्रपद, विक्रमी सम्वत 2080 | www.navodayatimes.in | facebook.com/navodayatimes | twitter.com/navodayatimes | तापमान अधिकतम 34° न्यूनतम 27° | सूर्योदय 06:06 सूर्यास्त 06:27 | AQI 53 | मौसम पूर्वानुमान आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे | वर्ष 11, अंक 49

हर भाषा में देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए

प्रो. रमाशंकर दूबे
(कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

'भारत' अनादिकाल से एक समृद्ध सभ्यता के साथ पूरे भू-मंडल को प्रभावित करने वाली एक आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में प्रसिद्ध रहा है। भारत प्रजा का भरण-पोषण करने वाला एक अमृतदायनी 'भारताग्नि' का क्षेत्र रहा है।

ऋग्वेद के 5.11.1 में उल्लेखित है कि जिस भारताग्नि के प्रभाव से 6 विविध ऋतुओं तथा विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होने वाली 3 सम सिन्धुओं और नदियों के कारण इस भारत भूमि पर प्रजा का भरण-पोषण होता रहा है, प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस भू-भाग को भारताग्नि के समानार्थी शब्द 'भारत' के नाम से संबोधित किया जाने लगा।

विष्णु पुराण में देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।' इसका अर्थ है कि समुद्र के उत्तर में हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष (क्षेत्र) है उसका नाम भारत है। यहां की प्रजा को भारतीय प्रजा कहते हैं। वहीं स्कंद पुराण में अध्याय 37 के अनुसार ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए, जिनके नाम पर इस भू-भाग का नाम भारत पड़ा। इसके अलावा महाभारत के आदिपर्व में शकुंतला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत नाम का वर्णन मिलता है।

भरत के जन्म के बाद ऋषि कण्व उन्हें आशीर्वाद देते हैं कि वह आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखंड का नाम भारत प्रसिद्ध होगा। भारत हमारे जनमानस का अभिन्न अंग है। भारत शब्द का अर्थ ही है लोकपाल और विश्वरक्षक। भारत नाम का पौराणिक महत्व हमारे भारतीय जनमानस में रचा बसा हुआ है। भारत केवल शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण मात्र से, 'भा-र-त' से प्रकृति के तीनों गुण यानि 'भा' से सत्व (प्रकाश, ज्ञान), 'र' से रजस और 'त' से तमस, यानि त्रयी शक्ति का आह्वान हो जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भारत की महिमा का वर्णन गर्व के साथ किया गया है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' इस पंक्ति में भारत की स्तुति एक परम दिव्य शक्ति के रूप में की गई है। इसमें भारत की सामाजिक और भौगोलिक विविधता के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है।

अनेकता में एकता का संदेश देता हमारा भारत: इस तरह के अनेक उदाहरण हैं जिसमें हमें वैभवशाली भारतवर्ष का संदर्भ दिखाई पड़ता है। अनेकता में एकता का संदेश देने वाले भारत में विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, पंथ और पहचान वाले लोगों को एक साथ एक ध्वज के नीचे एकता के सूत्र में पिरोया गया है। इसमें यह स्पष्ट है कि भारतीयों ने अपने देश के लिए 'भारत' नाम दिया।

इस विषय में उल्लेखनीय है कि 'इंडिया' शब्द एक भौगोलिक संदर्भ में विदेशियों द्वारा लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पहले प्रयोग किया गया शब्द है, जो अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारत [illegible] प्रचलित किया गया। इंडिया शब्द गुलाम मानसिकता की याद दिलाता है, अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनमानस के शोषण की याद दिलाता है, जबकि 'भारत' शब्द इस देश की सांस्कृतिक विरासत है जिसके उच्चारण से हमारे मन-मस्तिष्क में वैदिक ऋषियों द्वारा दिया गया ज्ञान-विज्ञान और संस्कारों की धारा प्रवाहित होती है। हमारी अधिकांश भारतीय भाषाओं में भी भारत शब्द का ही उल्लेख किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना भी समीचीन है कि भावनात्मक स्तर पर कई शब्दों के वास्तविक मर्म को समझने के लिए विदेशी भाषा नहीं, अपितु अपनी माटी से उपजी हुई भाषा का प्रयोग ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का मदर शब्द कभी भी वह भाव अभिव्यक्त नहीं कर सकता जो 'मां' शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। किसी भी देश का नाम उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतिबिंब है।

इंडिया शब्द से हमारे देश की असल पहचान ही संभव नहीं है। हिंदू शब्द जब पश्चिम में गया तो ग्रीक भाषा में अपभ्रंश होकर इंदु बन गया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय ग्रीस का राजदूत मेगस्थनीज, पाटलीपुत्र आया था तब उसने भारत विषय पर किताब लिखी थी, जिसका नाम इंडिका था। तब से पश्चिम के देश हमें इंडिका या इंडिया नाम से ही संबोधन करते रहे हैं।

हमारे देश का नाम पुनः भारत किए जाने को लेकर कई प्रयास हो चुके हैं। वैसे भी देशों का नाम वास्तविक अर्थ के साथ बदलने की परंपरा नई नहीं है। हाल ही में टर्की का नाम बदलकर तुर्किए किया गया, वर्ष 1972 में सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका किया गया, बर्मा का नाम बदलकर म्यांमार किया गया। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां देशों ने औपनिवेशिक मानसिकता से निकलने के लिए अपने देश का नाम परिवर्तित किया।

हमें भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने और इसके गौरव को समृद्धि देने के लिए भारत नाम को भारत सहित संपूर्ण विश्व में स्थापित करने की आवश्यकता है। गुलामी की मानसिकता से हमें बाहर आने की आवश्यकता है। हाल ही में जी-20 के निमंत्रण पत्र पर 'प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया' की जगह 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' लिखा होना यह दर्शाता है कि यह भारत अपने मूल में गहराई से जुड़ा हुआ है, यह एक स्वागत योग्य कदम है।

वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि हम विदेशी शब्द इंडिया का प्रयोग न करते हुए गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर भारत शब्द का प्रयोग करें तथा भारत शब्द को आधिकारिक रूप से प्रयोग में लाने के लिए सभी उपयुक्त कदम उठाए जाएं।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Mafia Weekly 21.0823

રેગિંગ વિરોધી સપ્તાહ અંતર્ગત વિદ્યાર્થીઓને જાગૃત કર્યા

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતમાં એન્ટી રેગીંગ વીક અંતર્ગત યોજાઈ સ્પર્ધાઓ

માફીયા, તા.૨૦

ગાંધીનગર. કોઈપણ શૈક્ષણિક સંસ્થાનો ઉદ્દેશ્ય વિદ્યાર્થીઓના સરળ અભ્યાસની વ્યવસ્થા તેમજ તેમની સુરક્ષાની જવાબદારી નિભાવવાનો હોય છે. ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી રેગિંગ જેવી ખરાબ પ્રથાઓને ડામવા અને કેમ્પસને રેગિંગ મુક્ત બનાવવા સતત પ્રયાસો કરી રહી છે. ૧૨ ઓગસ્ટથી શરૂ થયેલ સાત દિવસીય એન્ટી રેગિંગ વીક શુક્રવારે સમાપ્ત થયું. સીયુજીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ જણાવ્યું હતું કે CUG નવા વિદ્યાર્થીઓને કુટુંબ જેવું વાતાવરણ પૂરું પાડે છે. યુનિવર્સિટીમાં એન્ટિ રેગિંગ સેલ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને શક્ય તમામ મદદ પૂરી પાડવામાં આવે છે. એન્ટી રેગીંગ અવેરનેસ વીક અંતર્ગત પોસ્ટર, લોગો, સ્લોગન, નિબંધ લેખન સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમમાં ભાગ લેનાર વિદ્યાર્થીઓ અને તેમાં વધુ સારો દેખાવ કરનાર વિદ્યાર્થીઓને ઈનામ આપવામાં આવ્યા હતા. કાર્યક્રમ બાદ વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો અને

માનસિક સ્વાસ્થ્યનું ધ્યાન રાખવું પણ જરૂરી છે

આ દરમિયાન યુનિવર્સિટીના એન્ટી રેગિંગ સેલના નોડલ ઓફિસર પ્રો. બાલાજી રંગનાથને જણાવ્યું હતું કે રેગિંગ વિદ્યાર્થીઓના માનસિક સ્વાસ્થ્ય પર ઊંડી અસર કરે છે. આવી સ્થિતિમાં વિદ્યાર્થીઓએ પણ સમયાંતરે તેમના સાથીદારો અને શિક્ષકો સાથે તેમની સમસ્યાઓ વિશે ચર્ચા કરવી જોઈએ. તેમણે કહ્યું કે માનસિક હતાશા વર્તમાન સમયમાં ચોક્કસ વ્યક્તિ પર ઊંડી અસર કરે છે. યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થી કલ્યાણના ડીન પ્રો. જે. એન. અમીને કહ્યું કે વિદ્યાર્થીઓએ પોતાની વચ્ચે કોઈ ભેદભાવ ન રાખવો જોઈએ. કાર્યક્રમ અંતર્ગત સ્લોગન લેખન સ્પર્ધામાં પ્રિયન વર્મા, નિબંધ લેખનમાં દેવાંગ રાવલ અને પોસ્ટર મેકિંગ

Mafia Weekly 21.0823

રેગિંગ વિરોધી સપ્તાહ અંતર્ગત વિદ્યાર્થીઓને જાગૃત કર્યા

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતમાં એન્ટી રેગીંગ વીક અંતર્ગત યોજાઇ સ્પર્ધાઓ

માફીયા, તા.૨૦

ગાંધીનગર. કોઈપણ શૈક્ષણિક સંસ્થાનો ઉદ્દેશ્ય વિદ્યાર્થીઓના સરળ અભ્યાસની વ્યવસ્થા તેમજ તેમની સુરક્ષાની જવાબદારી નિભાવવાનો હોય છે. ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી રેગિંગ જેવી ખરાબ પ્રથાઓને ડામવા અને કેમ્પસને રેગિંગ મુક્ત બનાવવા સતત પ્રયાસો કરી રહી છે. ૧૨ ઓગસ્ટથી શરૂ થયેલ સાત દિવસીય એન્ટી રેગિંગ વીક શુક્રવારે સમાપ્ત થયું. સીયુજીના વાઇસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ જણાવ્યું હતું કે CUG નવા વિદ્યાર્થીઓને કુટુંબ જેવું વાતાવરણ પૂરું પાડે છે. યુનિવર્સિટીમાં એન્ટિ રેગિંગ સેલ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને શક્ય તમામ મદદ પૂરી પાડવામાં આવે છે. એન્ટી રેગીંગ અવેરનેસ વીક અંતર્ગત પોસ્ટર, લોગો, સ્લોગન, નિબંધ લેખન સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમમાં ભાગ લેનાર વિદ્યાર્થીઓ અને તેમાં વધુ સારો દેખાવ કરનાર વિદ્યાર્થીઓને ઈનામ આપવામાં આવ્યા હતા. કાર્યક્રમ બાદ વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો અને સ્ટાફને ડોક્યુમેન્ટરી ફિલ્મ દ્વારા એ[illegible]રેગીંગ અંગે વિસ્તૃત માહિતી આપવામાં આવી હતી.

માનસિક સ્વાસ્થ્યનું ધ્યાન રાખવું પણ જરૂરી છે

આ દરમિયાન યુનિવર્સિટીના એન્ટી રેગિંગ સેલના નોડલ ઓફિસર પ્રો. બાલાજી રંગનાથને જણાવ્યું હતું કે રેગિંગ વિદ્યાર્થીઓના માનસિક સ્વાસ્થ્ય પર ઊંડી અસર કરે છે. આવી સ્થિતિમાં વિદ્યાર્થીઓએ પણ સમયાંતરે તેમના સાથીદારો અને શિક્ષકો સાથે તેમની સમસ્યાઓ વિશે ચર્ચા કરવી જોઈએ. તેમણે કહ્યું કે માનસિક હતાશા વર્તમાન સમયમાં ચોક્કસ વ્યક્તિ પર ઊંડી અસર કરે છે. યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થી કલ્યાણના ડીન પ્રો. જે. એન. અમીને કહ્યું કે વિદ્યાર્થીઓએ પોતાની વચ્ચે કોઈ ભેદભાવ ન રાખવો જોઈએ. કાર્યક્રમ અંતર્ગત સ્લોગન લેખન સ્પર્ધામાં પ્રિયન વર્મા, નિબંધ લેખનમાં દેવાંગ રાવલ અને પોસ્ટર મેકિંગ સ્પર્ધામાં પૂજા શ્રીવાસ્તવને પ્રથમ સ્થાન પ્રાપ્ત કરવા બદલ પુરસ્કૃત કરવામાં આવ્યા હતા.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

AhmedabadMirror

98

CUG Hosts Prog For Students As Part Of G-20

Ahmedabad Mirror 18-07-2023 06:00 AM

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

McAfee® Total F
2023
Huge Discounts Available on McAfee's Antivirus, Lin
McAfee

1 / 1

The Engaging Young Minds Programme As Part Of G-20 University Connect Sought The View Of Youth On A Variety Of Important Issues.

Work From Hon
Earn Up To 6k

The Central University of Gujarat (CUG) hosted the Engaging Young Minds programme as part of the G20 Presidency's G-20 University Connect.

Ambassador Sanjay Bhattacharya, Secretary Economic Relations, Ministry of External Affairs, who was the chief guest at the event, said the G20 was born during an economic crisis in the late 1990s.

This he said drew attention to the ability of the G7 to decide the fate of the world economy and resulted in the birth of the G8 and eventually the G20.

"The G-20 represents nearly two-thirds of the world's population and 80% of the world's GDP," Bhattacharya said.

He said the Connect programme has organised interaction with students across the country. The programme was organised jointly by the Ministry of External Affairs and the Research and Information System (RIS).

"These programs are meant to take into account the views of the youth on issues such as green energy transition, global supply chain, space and cyber systems, food security, democratisation of financi
lifestyle," he said.

G-20 University Connect National Steering Committee Member Prof Manish said five ui

Sign Up Now for Wealthy Future with SBI Life's ULIP Plan
SBI Life Insurance | Sponsored

Read Next Story ›

selected for this programme including the CUG. The Vice-Chancellor of CUG, Prof Rama Shanker Dubey said the future belongs to science and technology and stressed the need for the youth to engage proactively in the field of research.

No Upper Age Limit For Health Insurance.
Senior Health Insurance Upto Rs.5Lakh @ Just Rs.8/Day.
Care Health | Sponsored
Get Quote

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

The Average IQ in India is 81. Check if your IQ is higher
WW IQ Test | Sponsored

Her Blood Is Killing Her, & Her Poor Mother Is Out Of Funds
Sanvika's mother has given up everything to save her. Now, she is helpless. Please help!
Ketto | Sponsored
Learn More

Sign Up Now for Wealthy Future with SBI Life's ULIP Plan
SBI Life Insurance | Sponsored

Belly Fat Removal Without Surgery In Gadhada Sn: The Price Might Surprise You
Thanks to the latest technology
Affordable Liposuction | Sponsored
Learn More

Villas In Dubai (See Prices)
Villas In Dubai | Search Ads | Sponsored

Gadhada Sn: Click Here To See The Price Of Solar Panels
Solar Panels | Search Ads | Sponsored

Gadhada Sn: The price (& size) of these hearing aids might surprise you
Hear.com | Sponsored

Government Solar Panel Funds You Don't Have To Repay (See The List)
Don't waste your time just grab it. (Apply For Grants Now)
Low Budget Solar Panel | Search AD | Sponsored
Search Now

Joint Support plus Calcium Complex Combo
This formula is perfect for individuals looking to support their bone and joint health in a convenient and effective way.
NVEDA | Sponsored
Click Here

Flyovers new suicide spots
Ahmedabad Mirror

Varun Dhawan becomes emotional while speaking about Remo's health scare
Ahmedabad Mirror

Sign Up Now for Wealthy Future with SBI Life's ULIP Plan
SBI Life Insurance | Sponsored

Gadhada Sn: Smart Beds Clearance Sale: Prices In Mexico Might Surprise Y

Read Next Story ›

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

NEP being implemented in its entirety at Gandhinagar-based Central University of Gujarat, says its VC

Updated: Jul 26 2023 7:00PM

Ahmedabad, Jul 26 (PTI) On the completion of three years of the National Education Policy (NEP), the Vice-Chancellor of the Central University of Gujarat (CUG) in Gandhinagar, Prof Rama Shanker Dubey, said the policy is being implemented in its entirety at the university.

Addressing a press conference at the CUG campus to mark the occasion, Dubey said that in the past three years, the university implemented many key points of the NEP 2020, such as introduction of multidisciplinary certificate and diploma courses.

Comprehensive education is the key to the holistic development of an individual, he said.

Please log in to get detailed story.

TOP NEWS

'Red diary' latest product of Cong's 'loot ki dukan', will defeat party in elections: PM in Sikar (/news/national/617707.html)

Will take enemy bullets in chest, not back: Kargil martyr's last words to his mother (/news/national/617686.html)

China rolls over USD 2.4 billion loan to its key ally Pakistan (/news/international/617651.html)

Macroeconomic, geopolitical conditions pose severe risks to organisations: Survey (/news/business/617603.html)

Indian crew member killed, 20 injured as cargo ship with 3,000 cars catches fire off Dutch coast (/news/international/617573.html)

Rupee rises 10 paise to 81.91 against US dollar in early trade (/news/national/617560.html)

Pakistan criticises Defence Minister Rajnath Singh's LoC crossing remarks (/news/international/617541.html)

The Press Trust Of India Ltd.
PTI building 4, Parliament Street, New Delhi-110 001

© PTI 2021, All Right Reserved
Designed by: 4c Plus (http://www.4cplus.com/)

संस्थापक-स्व. श्री राजेंद्र के. गोधा

| वर्ष : 44 | अंक : 77 | पेज-12 | मूल्य : 2.50 रु.

समाचार जगत

www.samacharjagat.com

मंगलवार

जयपुर, 18 जुलाई 2023, श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा संवत् 2080

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

अल्काराज शीर्ष पर बरकरार

पृष्ठ 8 पर

'दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा जी-20'

जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम में बोले राजदूत संजय भट्टाचार्य

गांधीनगर, समाचार जगत ब्यूरो. देश भर में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। इसी श्रृंखला में सोमवार को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विदेश मंत्रालय और रिसर्च एंड इंफॉर्मेशन सिस्टम (आरआईएस) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के सचिव और राजदूत संजय भट्टाचार्य बतौर मुख्य

अतिथि शामिल हुए। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जी-20 का जन्म 1990 के दशक के अंत में एक आर्थिक संकट के दौरान हुआ था, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के भाग्य का फैसला करने को जी-7 की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप जी-8 और अंततः जी-20 का जन्म हुआ। उन्होंने कहा कि जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। भट्टाचार्य ने कहा कि कनेक्ट कार्यक्रम के जरिए देशभर में स्टूडेंट्स से संवाद किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन, ग्लोबल सप्लाई चेन, स्पेस एंड साइबर, खाद्य सुरक्षा, वित्तीय शासन का लोकतंत्रीकरण और लाइफस्टाइल जैसे मुद्दों पर युवाओं की राय और उनके विचारों को जोड़ा जा रहा है।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुई। उल्लेखनीय है कि 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश भर में हो रहा है। जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट की नेशनल स्टेयरिंग कमेटी के सदस्य प्रो. मनीष ने बताया कि गुजरात के पांच विश्वविद्यालयों का चयन इसके लिए किया गया था। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय को भी इनमें शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने बताया कि आने वाला समय विज्ञान एवं तकनीक का है, ऐसे में युवाओं को शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की आवश्यकता है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने कहा कि आने वाले समय में जी-20 के परिणामों में तेजी आने से समावेशी विकासात्मक प्रगति की राह सुनिश्चित होगी।

સંદેશ City Life
TUESDAY 18.07.2023
અમદાવાદની આજ અને કાલ...
page no. 1
www.sandesh.com

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्याल
Central University of Gujara

G-૨૦ વિશ્વની લગભગ બે તૃતીયાંશ વસ્તી અને વિશ્વના GDPના ૮૦ ટકાનું પ્રતિનિધિત્વ કરે છે

સિટી લાઇફ । સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત ખાતે G-૨૦ યુનિવર્સિટી કનેક્ટ-એન્ગેજિંગ યંગ માઇન્ડ્સ કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. વિદેશ મંત્રાલય અને સંશોધન અને માહિતી પ્રણાલી (RIS)ના સંયુક્ત ઉપક્રમે આયોજિત આ કાર્યક્રમમાં વિદેશ મંત્રાલયના આર્થિક સંબંધોના સચિવ રાજદૂત સંજય ભટ્ટાચાર્ય મુખ્ય અતિથિ તરીકે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સંજય ભટ્ટાચાર્યએ કહ્યું કે, G-૨૦નો જન્મ ૧૯૯૦ના દાયકાના અંતમાં આર્થિક કટોકટી દરમિયાન થયો હતો. જેણે G-૭ ની વિશ્વ અર્થવ્યવસ્થાનું ભાવિ નક્કી કરવાની ક્ષમતા તરફ ધ્યાન દોર્યું. પરિણામે G-૨૦, -૮ અને આખરે G-૨૦ નો જન્મ થયો. G-૨૦ વિશ્વની લગભગ બે તૃતીયાંશ વસ્તી અને વિશ્વના GDPના ૮૦ ટકાનું પ્રતિનિધિત્વ કરે છે. કનેક્ટ પ્રોગ્રામ દ્વારા દેશભરના વિદ્યાર્થીઓ સાથે વાતચીત કરવામાં આવી રહી છે. આ કાર્યક્રમોમાં ગ્રીન એનર્જી ટ્રાન્ઝિશન, ગ્લોબલ સપ્લાય ચેઇન, સ્પેસ એન્ડ સાયબર, ફૂડ સિક્યુરિટી, ફાઇનાન્શિયલ ગવર્નન્સનું લોકશાહીકરણ અને જીવનશૈલી જેવા મુદ્દાઓ પર યુવાનોના અભિપ્રાય અને તેમના મંતવ્યો ઉમેરવામાં આવી રહ્યા છે.

G-૨૦ કાર્યક્રમ દેશભરમાં 'વન અર્થ, વન ફેમિલી, વન ફ્યૂચર'ની થીમ આયોજિત છે

G-૨૦ કાર્યક્રમ દેશભરમાં 'વન અર્થ, વન ફેમિલી, વન ફ્યુચર'ની થીમ પર આયોજિત કરવામાં આવી રહ્યો છે. જી-૨૦ યુનિવર્સિટી કનેક્ટની રાષ્ટ્રીય સંચાલન સમિતિના સભ્ય પ્રો. મનીષે જણાવ્યું કે આ માટે ગુજરાતની પાંચ યુનિવર્સિટીની પસંદગી કરવામાં આવી હતી. જેમાં ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતનો પણ સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. આ પ્રસંગે યુનિવર્સિટીના વાઇસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ કહ્યું કે આવનારો સમય વિજ્ઞાન અને ટેક્નોલોજીનો છે. આવી સ્થિતિમાં યુવાનોએ સંશોધન ક્ષેત્રે ઉત્તમ કાર્ય કરવાની જરૂર છે. આ પ્રસંગે યુનિવર્સિટીના રજિસ્ટ્રાર પ્રો. એચ.બી.પટેલે કહ્યું હતું કે, આગામી સમયમાં G-૨૦ પરિણામોની ઝડપ સર્વસમાવેશક વિકાસલક્ષી પ્રગતિના માર્ગને સુનિશ્ચિત કરશે.

जयपुर ■ दिल्ली से प्रका...

बिज़नेस रेमेडीज

वर्ष : 10 । अंक : 195 भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए स्वीकृत

व्यापार एवं विकास की आवाज

मूल्य : 3 रुपए । पेज : 8 दैनिक www.businessremedies.com

जयपुर। मंगलवार 18 जुलाई, 2023

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा जी-20 : संजय भट्टाचार्य

बिज़नेस रेमेडीज/गांधीनगर।

देश भर में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। इसी श्रृंखला में सोमवार को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विदेश मंत्रालय और रिसर्च एंड इंफॉर्मेशन सिस्टम (आरआईएस) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के सचिव और राजदूत संजय भट्टाचार्य बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने सभा को संबोधित करते

हुए कहा कि जी-20 का जन्म 1990 के दशक के अंत में एक आर्थिक संकट के दौरान हुआ था, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के भाग्य का फैसला करने को जी-7 की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप जी-8 और अंततः जी-20 का जन्म हुआ। उन्होंने कहा कि जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। भट्टाचार्य ने कहा कि कनेक्ट कार्यक्रम के जरिए देशभर में स्टूडेंट्स से संवाद किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन, ग्लोबल सप्लाई चेन, स्पेस एंड साइबर, खाद्य सुरक्षा, वित्तीय शासन का लोकतंत्रीकरण व लाइफस्टाइल जैसे मुद्दों पर युवाओं की राय और उनके विचारों को जोड़ा जा रहा है।कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुई। उल्लेखनीय है कि 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश भर में हो रहा है। जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट की नेशनल स्टेयरिंग कमेटी के सदस्य प्रो. मनीष ने बताया कि गुजरात के पांच विश्वविद्यालयों का चयन इसके लिए किया गया था। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय को भी इनमें शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने बताया कि आने वाला समय विज्ञान एवं तकनीक का है, ऐसे में युवाओं को शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की आवश्यकता है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने कहा कि आने वाले समय में जी-20 के परिणामों में तेजी आने से समावेशी विकासात्मक प्रगति की राह सुनिश्चित होगी।

पत्रिका

सीयूजी में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम

दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा जी-20 : भट्टाचार्य

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. जी-20 दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा। जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के सचिव और राजदूत संजय भट्टाचार्य ने सोमवार को गांधीनगर स्थित गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम को संबोधित करते समय यह बात कही। देशभर में जी-

20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम विदेश मंत्रालय और रिसर्च एंड इंफोर्मेशन सिस्टम (आरआईएस) के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया।

उन्होंने कहा कि जी-20 का गठन 1990 के दशक के अंत में एक आर्थिक संकट के दौरान हुआ था, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के भाग्य का फैसला करने की जी-7 की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया। इसके चलते जी-8 और अंततः जी-20 का गठन हुआ। जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है।

भट्टाचार्य ने कहा कि कनेक्ट कार्यक्रम के जरिए देशभर में स्टूडेंट्स से संवाद किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन, ग्लोबल सप्लाई चेन, स्पेस एंड साइबर, खाद्य सुरक्षा, वित्तीय शासन का लोकतंत्रीकरण और लाइफस्टाइल जैसे मुद्दों पर युवाओं की राय और उनके विचारों को जोड़ा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश भर में हो रहा है। जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट की नेशनल स्टेयरिंग कमेटी के सदस्य प्रो. मनीष ने कहा कि गुजरात के पांच विश्वविद्यालयों का चयन इसके लिए किया गया था। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय को भी इनमें शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे ने कहा कि आने वाला समय विज्ञान एवं तकनीक का है, ऐसे में युवाओं को शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की आवश्यकता है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने कहा कि आने वाले समय में जी-20 के परिणामों में तेजी आने से समावेशी विकासात्मक प्रगति की राह सुनिश्चित होगी।

Date: 18/07/2023, Edition: Ahmedabad, Page: 4
Source : https://epaper.patrika.com/

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
केंद्रीय विश्वविद्यालय
University of Gujarat

દિવ્ય ભાસ્કર

અમદાવાદ 18-07-2023

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતમાં પ્રવેશ માટે 22 જુલાઈ સુધી નોંધણી થઈ શકશે

એજ્યુકેશન રિપોર્ટર | અમદાવાદ

ગાંધીનગર સ્થિત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતમાં પ્રવેશ માટેની પ્રક્રિયા સોમવારથી શરૂ કરાઈ છે. સોશિયલ મેનેજમેન્ટ, જર્મની, ચાઈનીઝ એમ ત્રણ વિદ્યાશાખાની 99 બેઠકો પરની પ્રવેશ માટે કુલ 19276 વિદ્યાર્થીએ અરજી કરી છે. આ વિદ્યાર્થીઓને માટે પ્રવેશ કાઉન્સિલિંગ 22 જુલાઈ સુધી ચાલશે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

DD News Gujarati
@DDNewsGujarati

ગાંધીનગર ખાતે આવેલ સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત દ્વારા #G20 અંતર્ગત "ENGAGING YOUNG Minds" સંવાદ કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું

કાર્યક્રમમાં ભારતીય એમ્બેસેડર સંજય ભટ્ટાચાર્ય અને યુનિવર્સિટીના વાઇસ ચાન્સેલર પ્રો.રામા શંકર દુબેએ વિદ્યાર્થીઓ સાથે ચર્ચા કરી હતી @PROCUG1

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Translate Tweet

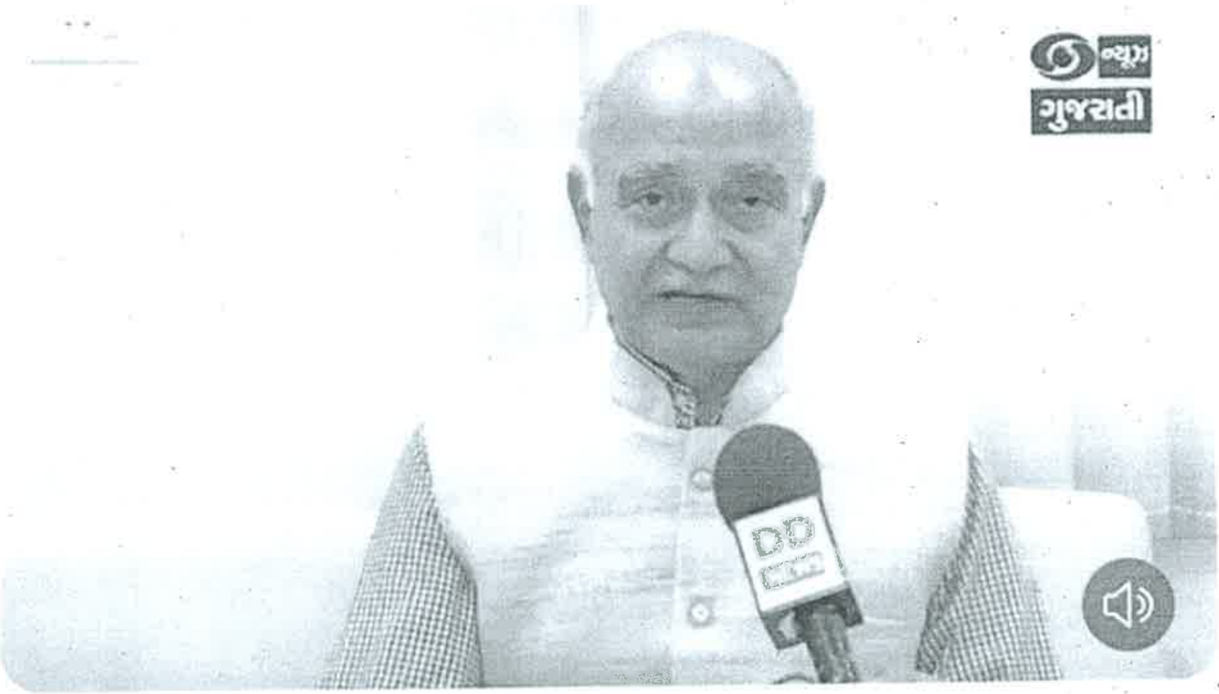

पत्रिका
राजस्थान पत्रिका
य एषु सुप्तेषु जागर्ति
वर्ष 21 | अंक 314 | पृष्ठ 12 | ₹5.00
patrika.com /rajasthanpatrika
अहमदाबाद, मंगलवार, 18 जुलाई, 2023 | श्रावण (अधिक) शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, संवत 2080 पेज संख्या 4

युवा सितारा

फ्री टाइम में गोल्फ और फुटबॉल खेलना पसंद करते हैं अल्काराज

@स्पोर्ट्स &गेमिंग

'दिल्ली अध्यादेश' को राज्यसभा में आसानी से पास करा सकेगी सरकार

@इंडिया &वर्ल्ड

शेयर बाजार में हुआ घाटा! जानें टैक्स बचाने के उपाय

@बिजनेस &वेल्थ

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

सीयूजी में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम

दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा जी-20 : भट्टाचार्य

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. जी-20 दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा। जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के सचिव और राजदूत संजय भट्टाचार्य ने सोमवार को गांधीनगर स्थित गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम को संबोधित करते समय यह बात कही। देशभर में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम विदेश मंत्रालय और रिसर्च एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम (आरआईएस) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

उन्होंने कहा कि जी-20 का गठन 1990 के दशक के अंत में एक आर्थिक संकट के दौरान हुआ था, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के भाग्य का फैसला करने को जी-7 की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया। इसके चलते जी-8 और अंततः जी-20 का गठन हुआ। जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है।

भट्टाचार्य ने कहा कि कनेक्ट कार्यक्रम के जरिए देशभर में स्टूडेंट्स से संवाद किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन, ग्लोबल सप्लाई चेन, स्पेस एंड साइबर, खाद्य सुरक्षा, वित्तीय शासन का लोकतंत्रीकरण और लाइफस्टाइल जैसे मुद्दों पर युवाओं की राय और उनके विचारों को जोड़ा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश भर में हो रहा है। जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट की नेशनल स्टीयरिंग कमेटी के सदस्य प्रो. मनीष ने कहा कि गुजरात के पांच विश्वविद्यालयों का चयन इसके लिए किया गया था। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय को भी इनमें शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे ने कहा कि आने वाला समय विज्ञान एवं तकनीक का है, ऐसे में युवाओं को शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की आवश्यकता है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने कहा कि आने वाले समय में जी-20 के परिणामों में तेजी आने से समावेशी विकासात्मक प्रगति की राह सुनिश्चित होगी।

90

DD News Gujarati
@DDNewsGujarati

ગાંધીનગર ખાતે આવેલ સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત દ્વારા #G20 અંતર્ગત "ENGAGING YOUNG Minds" સંવાદ કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું

કાર્યક્રમમાં ભારતીય એમ્બેસેડર સંજય ભટ્ટાચાર્ય અને યુનિવર્સિટીના વાઇસ ચાન્સેલર પ્રો.રામા શંકર દુબેએ વિદ્યાર્થીઓ સાથે ચર્ચા કરી હતી
@PROCUG1

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Translate Tweet

दैनिक
संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अखबार
जयपुर, मंगलवार, 18 जुलाई 2023

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

दुनिया में एकता की सार्वभौमिकता को बढ़ावा देगा जी-20 : संजय भट्टाचार्य

संजीवनी टुडे

गांधीनगर। देश भर में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। इसी श्रृंखला में सोमवार को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट- इंगेजिंग यंग माइंड्स कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विदेश मंत्रालय और रिसर्च एंड इंफार्मेशन सिस्टम (आरआईएस) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के सचिव और राजदूत संजय भट्टाचार्य बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जी-20 का जन्म 1990 के दशक के अंत में एक आर्थिक संकट के दौरान हुआ था, जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के भाग्य का फैसला करने को जी-7 की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप जी-8 और अंततः जी-20 का जन्म हुआ। उन्होंने कहा कि जी-20 दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी और दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। भट्टाचार्य ने कहा कि कनेक्ट कार्यक्रम के जरिए देशभर में स्टूडेंट्स से संवाद किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन, ग्लोबल सप्लाई चेन, स्पेस एंड साइबर, खाद्य सुरक्षा, वित्तीय शासन का लोकतंत्रीकरण और लाइफस्टाइल जैसे मुद्दों पर युवाओं की राय और उनके विचारों को जोड़ा जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुई। उल्लेखनीय है कि 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश भर में हो रहा है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने कहा कि आने वाले समय में जी-20 के परिणामों में तेजी आने से समावेशी विकासात्मक प्रगति की राह निश्चित होगी।

The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
page no. 3

84

G20 will promote universality of unity in the world: MEA official

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Ahmedabad: G20 will promote the universality of unity in the world, Sanjay Bhattacharya, Secretary of Economic Relations, Ministry of External Affairs, asserted on Monday. "G20 was born during an economic crisis in the late 1990s, which drew attention to the ability of the G7 to decide the fate of the world economy. It resulted in the birth of the G8 and eventually the G20," Bhattacharya said. He was addressing a G20 event. **ENS**

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણ અને સર્વાંગી વિકાસનો માર્ગ મોકળો કરી રહી છે. CUGમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિનો સંપૂર્ણ અમલ કરવામાં આવી રહ્યો છે - પ્રો. રમાશંકર દુબે

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીના ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થવા પર સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતના વાઈસ ચાન્સિલર શ્રી પ્રો.રમાશંકર દુબેએ જણાવ્યુ કે, ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં દેશની સમૃદ્ધ પ્રતિભા અને સંસાધનોનો ઉપયોગ કરીને વ્યક્તિ,સમાજ અને રાષ્ટ્રના વિકાસ માટે કાર્ય કરવામાં આવે છે.ભારત વિશ્વમાં સૌથી યુવા વસ્તી ધરાવતો દેશ છે.દેશના યુવાનોને ગુણવત્તાયુક્ત શૈક્ષણિક તકો પૂરી પાડીને જ આત્મનિર્ભર ભારતની કલ્પના સાકાર થઈ શકે છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ એ આ વિઝનને સાકાર કરવા માટે મજબૂત પાયો નાખ્યો છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિએ સર્વસમાવેશક અને ગુણવત્તા યુક્ત શિક્ષણને સુનિશ્ચિત કરવા અને જીવનભર શીખવાની તકોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે કાર્યક્ષમ માર્ગ મોકળો કરવા માટે કામ કર્યું છે.

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીને ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થયા હોવાથી,ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ NEPના ઘણા મુખ્ય મુદ્દાઓને અમલમાં લાવવામાં સફળતા હાંસલ કરી છે.યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો.રમાશંકર દુબેએ પત્રકાર પરિષદમાં જણાવ્યું હતું કે વ્યક્તિના સંપૂર્ણ વિકાસની કલ્પનાને સર્વગ્રાહી શિક્ષણ દ્વારા જ સાકાર કરી શકાય છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ સમગ્ર વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે વરદાન સાબિત થઈ રહી છે.છેલ્લા ત્રણ વર્ષમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના ઘણા મુદ્દાઓ યુનિવર્સિટી માં લાગુ કરવામાં આવ્યા છે,જેમાં નીચેના મુદ્દાઓનો સમાવેશ થાય છે.

સર્વગ્રાહી શિક્ષણનો સમાવેશ :

વિદ્યાર્થીને શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું જ્ઞાન માત્ર શૈક્ષણિક જ્ઞાન માટે નહીં પરંતુ તેમના શારીરિક,માનસિક,ભાવનાત્મક, નૈતિક અને સામાજિક જ્ઞાનમાં વધારો કરવા માટે અત્યંત જરૂરી છે.ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે દરેક સેમેસ્ટર માટે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કર્યા છે.આની મદદથી વિદ્યાર્થીઓને માત્ર અભ્યાસક્રમનું જ નહીં પરંતુ સમગ્ર શિક્ષણનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન મળી રહ્યું છે.

બે ક્રેડિટના ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરીઅભ્યાસક્રમ:

યુનિવર્સિટી દ્વારા મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.જેમાં નાના વૈકલ્પિક અભ્યાસક્રમોમાં ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.દરેક કાર્યક્રમને ૨ ક્રેડિટનું વેઈટેજ આપવામાં આવ્યું છે. વિદ્યાર્થીઓ તેમની રુચિ મુજબ આ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સમાં પ્રવેશ લઈ રહ્યા છે.

યુનિવર્સિટીની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમ:

ક્લાસ-રૂમ અભ્યાસની સાથે ઑનલાઇન શિક્ષણ ને પ્રોત્સાહન આપવા માટે,યુનિવર્સિટીએ તેની પોતાની LMS) શરૂ કરી છે. આ સાથે વિદ્યાર્થીઓએ ક્રેડિટ ટ્રાન્સફર હેઠળ સ્વયમ્ પોર્ટલ પર પોતાનું રજીસ્ટ્રેશન કરાવ્યું છે.ઓનલાઈન કોર્સ પસંદ કરીને વિદ્યાર્થીઓ પણ પોતાની પસંદગીના વિષયોનો અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

DigiLocker સુવિધા: વિદ્યાર્થીઓને ક્લાઉડમાં એકાઉન્ટ બનાવીને અને તેમને સુરક્ષિત રાખીને શૈક્ષણિક માર્કશીટ અને અન્ય અધિકૃત દસ્તાવેજો અથવા પ્રમાણ પત્રો ઍક્સેસ કરવા માટે ડિજિટલ એકાઉન્ટ આપવામાં આવ્યું હતું.તેના પર યુનિવર્સિટીના તમામ વિદ્યાર્થીઓએ પોતાનું ખાતું ખોલાવ્યું છે.દરેક એકાઉન્ટ નકલો અપલોડ કરવા માટે એક GB સુધીનો સ્ટોરેજ પ્રદાન કરે છે.મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ: ડિગ્રી કોર્સના ફોર્મેટ મુજબ યુનિવર્સિટીમાં મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.વિદ્યાર્થીઓ ખુશીથી તેમની પસંદગી કરી રહ્યા છે અને ડિગ્રી કોર્સ સાથે અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણ અને સર્વાંગી વિકાસનો માર્ગ મોકળો કરી રહી છે. CUGમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિનો સંપૂર્ણ અમલ કરવામાં આવી રહ્યો છે - પ્રો. રમાશંકર દુબે

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીના ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થવા પર સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતના વાઈસ ચાન્સિલર શ્રી પ્રો.રમાશંકર દુબેએ જણાવ્યુ કે, ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં દેશની સમૃદ્ધ પ્રતિભા અને સંસાધનોનો ઉપયોગ કરીને વ્યક્તિ,સમાજ અને રાષ્ટ્રના વિકાસ માટે કાર્ય કરવામાં આવે છે.ભારત વિશ્વમાં સૌથી યુવા વસ્તી ધરાવતો દેશ છે.દેશના યુવાનોને ગુણવત્તાયુક્ત શૈક્ષણિક તકો પૂરી પાડીને જ આત્મનિર્ભર ભારતની કલ્પના સાકાર થઈ શકે છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ એ આ વિઝનને સાકાર કરવા માટે મજબૂત પાયો નાખ્યો છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિએ સર્વસમાવેશક અને ગુણવત્તા યુકત શિક્ષણને સુનિશ્ચિત કરવા અને જીવનભર શીખવાની તકોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે કાર્યક્ષમ માર્ગ મોકળો કરવા માટે કામ કર્યું છે.

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીને ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થયા હોવાથી,ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ NEPના ઘણા મુખ્ય મુદ્દાઓને અમલમાં લાવવામાં સફળતા હાંસલ કરી છે.યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો.રમાશંકર દુબેએ પત્રકાર પરિષદમાં જણાવ્યું હતું કે વ્યક્તિના સંપૂર્ણ વિકાસની કલ્પનાને સર્વગ્રાહી શિક્ષણ દ્વારા જ સાકાર કરી શકાય છે.રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ સમગ્ર વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે વરદાન સાબિત થઈ રહી છે.છેલ્લા ત્રણ વર્ષમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના ઘણા મુદ્દાઓ યુનિવર્સિટી માં લાગુ કરવામાં આવ્યા છે,જેમાં નીચેના મુદ્દાઓનો સમાવેશ થાય છે.

સર્વગ્રાહી શિક્ષણનો સમાવેશ :

વિદ્યાર્થીને શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું જ્ઞાન માત્ર શૈક્ષણિક જ્ઞાન માટે નહીં પરંતુ તેમના શારીરિક,માનસિક,ભાવનાત્મક, નૈતિક અને સામાજિક જ્ઞાનમાં વધારો કરવા માટે અત્યંત જરૂરી છે.ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે દરેક સેમેસ્ટર માટે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કર્યા છે.આની મદદથી વિદ્યાર્થીઓને માત્ર અભ્યાસક્રમનું જ નહીં પરંતુ સમગ્ર શિક્ષણનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન મળી રહ્યું છે.

બે ક્રેડિટના ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરીઅભ્યાસક્રમ:

યુનિવર્સિટી દ્વારા મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.જેમાં નાના વૈકલ્પિક અભ્યાસક્રમોમાં ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.દરેક કાર્યક્રમને ૨ ક્રેડિટનું વેઈટેજ આપવામાં આવ્યું છે. વિદ્યાર્થીઓ તેમની રુચિ મુજબ આ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સમાં પ્રવેશ લઈ રહ્યા છે.

યુનિવર્સિટીની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમ:

ક્લાસ-રૂમ અભ્યાસની સાથે ઓનલાઈન શિક્ષણ ને પ્રોત્સાહન આપવા માટે,યુનિવર્સિટીએ તેની પોતાની LMS) શરૂ કરી છે. આ સાથે વિદ્યાર્થીઓએ ક્રેડિટ ટ્રાન્સફર હેઠળ સ્વયમ્ પોર્ટલ પર પોતાનું રજીસ્ટ્રેશન કરાવ્યું છે.ઓનલાઈન કોર્સ પસંદ કરીને વિદ્યાર્થીઓ પણ પોતાની પસંદગીના વિષયોનો અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

DigiLocker સુવિધાઃ વિદ્યાર્થીઓને ક્લાઉડમાં એકાઉન્ટ બનાવીને અને તેમને સુરક્ષિત રાખીને શૈક્ષણિક માર્કશીટ અને અન્ય અધિકૃત દસ્તાવેજો અથવા પ્રમાણ પત્રો ઍક્સેસ કરવા માટે ડિજિટલ એકાઉન્ટ આપવામાં આવ્યું હતું.તેના પર યુનિવર્સિટીના તમામ વિદ્યાર્થીઓએ પોતાનું ખાતું ખોલાવ્યું છે.દરેક એકાઉન્ટ નકલો અપલોડ કરવા માટે એક GB સુધીનો સ્ટોરેજ પ્રદાન કરે છે.મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સઃ ડિગ્રી કોર્સના ફોર્મેટ મુજબ યુનિવર્સિટીમાં મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે.વિદ્યાર્થીઓ ખુશીથી તેમની પસંદગી કરી રહ્યા છે અને ડિગ્રી કોર્સ સાથે અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

ગુજરાત સમાચાર

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાત કેમ્પસ ૨૦૨૪માં વડોદરામાં શિફ્ટ થશે

સ્ટેટ યુનિ.ઓ માટે સેમ.દીઠ 22 ક્રેડિટ નક્કી કરાઈ છે ત્યારે સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓમાં 20 જ ક્રેડિટ

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતને રાજ્ય સરકાર દ્વારો વડોદરા નજીક ૧૦૦ એકર જમીન અપાયા બાદ હાલ નવુ કેમ્પસ તૈયાર થઈ રહ્યુ છે અને યુનિ.ના કુલપતિના જણાવ્યા મુજબ આગામી શૈક્ષણિક વર્ષ એટલે કે ૨૦૨૪થી વડોદરામાં યુનિ.નું મુખ્ય કેમ્પસ શિફ્ટ થઈ જશે. જ્યારે ચાલુ શૈક્ષણિક વર્ષથી સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાત દ્વારા પણ તમામ યુજી કોર્સ માટે યુજીસી મુજબનું નવું ક્રેડિટ-કરિક્યુલમ ફ્રેમવર્ક લાગુ કરી દેવાયુ છે. નવી શિક્ષણ નીતિ અંતર્ગત નીતિના ત્રણ વર્ષ પુરા થવા આવ્યા છે ત્યારે સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાતના કુલપતિ પ્રૉ.રમાશંકર દુબેએ નવી શિક્ષણ નીતિ અને કરિક્યુલમ-ક્રેડિટ ફ્રેમવર્ક જણાવ્યું કે સીયુજી(સેન્ટ્રલ યુનિ.-ગુજરાત) દ્વારા આમ તો ગત વર્ષથી તો અમલ શરૂ કરી દેવાયો હતો પરંતુ આ વર્ષથી યુજીસી મુજબ સંપૂર્ણ રીતે યુજી કોર્સમાં નવા ક્રેડિટ ફ્રેમવર્કનો અમલ શરૂ થઈ ગયો છે અને યુજી કોર્સમાં હવે વિદ્યાર્થી ચાર વર્ષ ભણી શકશે, જેમાં વિદ્યાર્થી આ વર્ષે પ્રવેશ લઈને આવશે ત્યારે જે તેની પાસે ઓપ્શનલ ફોર્મ ભરાવી દેવાશે.જેમાં વિદ્યાર્થીએ એક વર્ષ(સર્ટિફિકેટ, બે વર્ષ (ડિપ્લોમા), ત્રણ વર્ષ (બેચલર) કે ચાર વર્ષ (ઓનર્સ)માંથી કયું પસંદ કરવુ છે તે નક્કી કરવાનું રહેશે.

સેન્ટ્રલ યુનિ.-ગુજરાત સહિતની તમામ સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓ દ્વારા યુજીસી મુજબ જ સેમેસ્ટર દીઠ ૨૦ ક્રેડિટ જ રખાઈ છે.જો કે ગુજરાતની સ્ટેટ યુનિ.ઓમાં સેમ.દીઠ ૨૨ ક્રેડિટ નક્કી કરાઈ છે. જો કે હાલ સેન્ટ્રલમાંથી સ્ટેટ કે સ્ટેટમાંથી સેન્ટ્રલ યુનિ.માં વિદ્યાર્થી નહીં જઈ શકે. સીયુજીનું નવું કેમ્પસ વડોદરા નજીક તૈયાર થઈ રહ્યુ છે અને કુલપતિના જણાવ્યા મુજબ એડમિન બિલ્ડીંગ સાથેનું મુખ્ય કેમ્પસ જુન ૨૦૨૪થી શરૂ થઈ જશે. સંપૂર્ણ નવું કેમ્પસ બન્યા બાદ મીડિયા-જર્નાલિઝમ ડિપાર્ટમેન્ટ, સ્કૂલ ઓફ ઈન્ડિયન સ્ટડીઝ સહિતના વિવિધ વિભાગો સાથે નવા કોર્સ શરૂ કરાશે અને હાલ સીયુજીમાં જ્યાં યુજી,પીજી અને પીએચડી (300 સ્ટુડન્ટ)ના કુલ મળીને ૧૪૦૦ વિદ્યાર્થીઓ છે ત્યારે નવા કેમ્પસમાં સંખ્યા વધારીને ૨૫૦૦ સુધી લઈ જવાશે. વિદ્યાર્થીઓ હોસ્ટેલ સહિતની ફેસિલિટી વધારાશે. સરકાર પાસે વધુ ૧૨૬ એકર નજીકમાં જ માંગવામાં આવી છે.

ગુજરાત સમાચાર

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાત કેમ્પસ ૨૦૨૪માં વડોદરામાં શિફ્ટ થશે

સ્ટેટ યુનિ.ઓ માટે સેમ.દીઠ 22 ક્રેડિટ નક્કી કરાઈ છે ત્યારે સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓમાં 20 જ ક્રેડિટ

સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાતને રાજ્ય સરકાર દ્વારા વડોદરા નજીક ૧૦૦ એકર જમીન અપાયા બાદ હાલ નવુ કેમ્પસ તૈયાર થઈ રહ્યુ છે અને યુનિ.ના કુલપતિના જણાવ્યા મુજબ આગામી શૈક્ષણિક વર્ષ એટલે કે ૨૦૨૪થી વડોદરામાં યુનિ.નું મુખ્ય કેમ્પસ શિફ્ટ થઈ જશે. જ્યારે ચાલુ શૈક્ષણિક વર્ષથી સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાત દ્વારા પણ તમામ યુજી કોર્સ માટે યુજીસી મુજબનું નવું ક્રેડિટ-કરિક્યુલમ ફ્રેમવર્ક લાગુ કરી દેવાયુ છે. નવી શિક્ષણ નીતિ અંતર્ગત નીતિના ત્રણ વર્ષ પુરા થવા આવ્યા છે ત્યારે સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓફ ગુજરાતના કુલપતિ પ્રૉ.રમાશંકર દુબેએ નવી શિક્ષણ નીતિ અને કરિક્યુલમ-ક્રેડિટ ફ્રેમવર્ક જણાવ્યું કે સીયુજી(સેન્ટ્રલ યુનિ.-ગુજરાત) દ્વારા આમ તો ગત વર્ષથી તો અમલ શરૂ કરી દેવાયો હતો પરંતુ આ વર્ષથી યુજીસી મુજબ સંપૂર્ણ રીતે યુજી કોર્સમાં નવા ક્રેડિટ ફ્રેમવર્કનો અમલ શરૂ થઈ ગયો છે અને યુજી કોર્સમાં હવે વિદ્યાર્થી ચાર વર્ષ ભણી શકશે, જેમાં વિદ્યાર્થી આ વર્ષે પ્રવેશ લઈને આવશે ત્યારે જ તેની પાસે ઓપ્શનલ ફોર્મ ભરાવી દેવાશે.જેમાં વિદ્યાર્થીએ એક વર્ષ(સર્ટિફિકેટ, બે વર્ષ (ડિપ્લોમા), ત્રણ વર્ષ (બેચલર) કે ચાર વર્ષ (ઓનર્સ)માંથી કયું પસંદ કરવુ છે તે નક્કી કરવાનું રહેશે.

સેન્ટ્રલ યુનિ.-ગુજરાત સહિતની તમામ સેન્ટ્રલ યુનિ.ઓ દ્વારા યુજીસી મુજબ જ સેમેસ્ટર દીઠ ૨૦ ક્રેડિટ જ રખાઈ છે.જો કે ગુજરાતની સ્ટેટ યુનિ.ઓમાં સેમ.દીઠ ૨૨ ક્રેડિટ નક્કી કરાઈ છે. જો કે હાલ સેન્ટ્રલમાંથી સ્ટેટ કે સ્ટેટમાંથી સેન્ટ્રલ યુનિ.માં વિદ્યાર્થી નહીં જઈ શકે. સીયુજીનું નવું કેમ્પસ વડોદરા નજીક તૈયાર થઈ રહ્યુ છે અને કુલપતિના જણાવ્યા મુજબ એડમિન બિલ્ડીંગ સાથેનું મુખ્ય કેમ્પસ જુન ૨૦૨૪થી શરૂ થઈ જશે. સંપૂર્ણ નવું કેમ્પસ બન્યા બાદ મીડિયા-જર્નાલિઝમ ડિપાર્ટમેન્ટ, સ્કૂલ ઓફ ઈન્ડિયન સ્ટડીઝ સહિતના વિવિધ વિભાગો સાથે નવા કોર્સ શરૂ કરાશે અને હાલ સીયુજીમાં જ્યાં યુજી,પીજી અને પીએચડી (૩૦૦ સ્ટુડન્ટ)ના કુલ મળીને ૧૪૦૦ વિદ્યાર્થીઓ છે ત્યારે નવા કેમ્પસમાં સંખ્યા વધારીને ૨૫૦૦ સુધી લઈ જવાશે. વિદ્યાર્થીઓ હોસ્ટેલ સહિતની ફેસિલિટી વધારાશે. સરકાર પાસે વધુ ૧૨૬ એકર નજીકમાં જ માંગવામાં આવી છે.

पत्रिका

आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन वर्ष पूरे, पूर्ववती नीतियों से भिन्न है यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

राष्ट्र प्रेम को जागृत कर रही है राष्ट्रीय शिक्षा नीति

पत्रिका रीडर्स फेस्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई शिक्षा नीति-2020 पिछले 3 वर्षो में भारतीय शिक्षा जगत का संपूर्ण रूपांतरण कर रही है। निःसंदेह किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा जगत के महान चिंतक मदन मोहन मालवीय प्रासंगिक हैं जिनका मानना था कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की सबसे बड़ी पूंजी है। वे शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर न रहे। उनके अनुसार देश की दुर्दशा को समाप्त करने का एकमात्र साधन साक्षरता एवं शिक्षा है। व्यक्तित्व विकास के साथ ही मानव के लिए शिक्षा जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का होना अति आवश्यक है। भारत वैश्विक मंच पर अपनी शिक्षा और ज्ञान के बल पर ही सभी ऊंचाईयों को हासिल कर सकता है। भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश है। देश के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाने से ही हम आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार कर सकेंगे। इस कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की शुरुआत की गई। देश के नागरिकों के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक वरदान साबित हो रही है। शिक्षा नीति को तीन वर्ष पूरे हो चुके है। देशभर में आंचलिक एवं ग्रामीण स्तर तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है ताकि देश के नागरिकों को परिवर्तित हो रहे वैश्विक परिदृश्य का ज्ञान भी सुलभ हो सके।

शोध एवं नवाचारों को प्रोत्साहन

उच्च शिक्षण संस्थान ज्ञान सृजन के केंद्र होते हैं तथा ज्ञान का सृजन शोध से ही संभव हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए नवाचार युक्त शोध आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से छात्रों को अधिकतम स्तर पर ज्ञान अर्जित करने के लिए शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उच्च स्तरीय विद्यार्थी बनने का मौका मिल रहा है।

प्रो. रमा शंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

समग्र शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है यह नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, विद्यार्थी को शिक्षा संस्थानों में महज पाठ्यक्रम का ही ज्ञान न देकर समग्र शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। यह नीति छात्रों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखती है।

Date: 29/07/2023, Edition: Ahmedabad, Page: 5
Source : https://epaper.patrika.com/

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

पत्रिका

आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन वर्ष पूरे, पूर्ववती नीतियों से भिन्न है यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

राष्ट्र प्रेम को जागृत कर रही है राष्ट्रीय शिक्षा नीति

पत्रिका रीडर्स फेस्ट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

नई शिक्षा नीति-2020 पिछले 3 वर्षों में भारतीय शिक्षा जगत का संपूर्ण रूपांतरण कर रही है। निःसंदेह किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा जगत के महान चिंतक मदन मोहन मालवीय प्रासंगिक हैं जिनका मानना था कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की सबसे बड़ी पूंजी है। वे शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर न रहेद्य। उनके अनुसार देश की दुर्दशा को समाप्त करने का एकमात्र साधन साक्षरता एवं शिक्षा है। व्यक्तित्व विकास के साथ ही मानव के लिए शिक्षा जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का होना अति आवश्यक है। भारत वैश्विक मंच पर अपनी शिक्षा और ज्ञान के बल पर ही सभी ऊंचाईयों को हासिल कर सकता है। भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश है। देश के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाने से ही हम आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार कर सकेंगे। इस कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की शुरुआत की गई। देश के नागरिकों के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक वरदान सावित हो रही है। शिक्षा नीति को तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं। देशभर में आंचलिक एवं ग्रामीण स्तर तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है ताकि देश के नागरिकों को परिवर्तित हो रहे वैश्विक परिदृश्य का ज्ञान भी सुलभ हो सके।

शोध एवं नवाचारों को प्रोत्साहन

उच्च शिक्षण संस्थान ज्ञान सृजन के केंद्र होते हैं तथा ज्ञान का सृजन शोध से ही संभव है। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए नवाचार युक्त शोध आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से छात्रों को अधिकतम स्तर पर ज्ञान अर्जित करने के लिए शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उच्च स्तरीय विद्यार्थी बनने का मौका मिल रहा है।

प्रो. रमा शंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

समग्र शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है यह नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, विद्यार्थी को शिक्षा संस्थानों में महज पाठ्यक्रम का ही ज्ञान न देकर समग्र शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। यह नीति छात्रों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखती है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Date: 29/07/2023, Edition: Ahmedabad, Page: 5
Source : https://epaper.patrika.com/

पत्रिका

आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन वर्ष पूरे, पूर्ववती नीतियों से भिन्न है यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

राष्ट्र प्रेम को जागृत कर रही है राष्ट्रीय शिक्षा नीति

पत्रिका रीडर्स फेस्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई शिक्षा नीति-2020 पिछले 3 वर्षों में भारतीय शिक्षा जगत का संपूर्ण रूपांतरण कर रही है। निःसंदेह किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा जगत के महान चिंतक मदन मोहन मालवीय प्रासंगिक हैं जिनका मानना था कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की सबसे बड़ी पूंजी है। वे शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर न रहे। उनके अनुसार देश की दुर्दशा को समाप्त करने का एकमात्र साधन साक्षरता एवं शिक्षा है। व्यक्तित्व विकास के साथ ही मानव के लिए शिक्षा जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का होना अति आवश्यक है। भारत वैश्विक मंच पर अपनी शिक्षा और ज्ञान के बल पर ही सभी ऊंचाईयों को हासिल कर सकता है। भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश है। देश के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाने से ही हम आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार कर सकेंगे। इस कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की शुरुआत की गई। देश के नागरिकों के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक वरदान साबित हो रही है। शिक्षा नीति को तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं। देशभर में आंचलिक एवं ग्रामीण स्तर तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है ताकि देश के नागरिकों को परिवर्तित हो रहे वैश्विक परिदृश्य का ज्ञान भी सुलभ हो सके।

शोध एवं नवाचारों को प्रोत्साहन

उच्च शिक्षण संस्थान ज्ञान सृजन के केंद्र होते हैं तथा ज्ञान का सृजन शोध से ही संभव हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए नवाचार युक्त शोध आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से छात्रों को अधिकतम स्तर पर ज्ञान अर्जित करने के लिए शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उच्च स्तरीय विद्यार्थी बनने का मौका मिल रहा है।
प्रो. रमा शंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

समग्र शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है यह नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, विद्यार्थी को शिक्षा संस्थानों में महज पाठ्यक्रम का ही ज्ञान न देकर समग्र शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। यह नीति छात्रों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखती है।

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

Date: 29/07/2023, Edition: Ahmedabad, Page: 5
Source : https://epaper.patrika.com/

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

CELEBRATING 3RD ANNIVERSARY OF NEP TODAY

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 AND TRANSFORMATION OF INDIAN EDUCATION SYSTEM

Prof Rama Shanker Dubey

The writer is the Vice Chancellor, Central University of Gujarat, Gandhinagar

National Education Policy has been transforming the Indian education system since its implementation in 2020. Undoubtedly, education is the most important aspect for the development of any nation. One of the pioneers of education systems, Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya believed that education is the most influential power. He fostered the opinion that education is the source of India's cultural, social, political, and economic impact. He used to say, "If you want the progress of the country, then make every effort to ensure that no boy or girl in the country remains illiterate." According to him, education is the only means to end the country's adversity, and literacy and education are the way to achieve it.

RESEARCH AND Innovations

Higher education institutions are centered for knowledge creation which is only possible through research. Innovative and research-oriented approaches are essential for addressing various national and international challenges and finding solutions to them. As per the National Education Policy, students get the opportunity to become highly skilled researchers to attain maximum knowledge in their studies. The establishment of 'Research and Development Cell' centres in higher education institutions has been promoted in the National Education Policy.

Through these cells, support will be provided for various research projects and opportunities for research and innovation. The aim is to empower students with updated and specialized knowledge and enable them to find solutions to local, national, and international problems. Special research programs, research projects, special lectures, seminars, etc., are being conducted and monitored through Research and Development Cells. This education policy supports the students with the necessary resources to conduct research and support new ideas.

Besides this, policy also encourages Indian higher education institutions to collaborate with foreign institutions to enrich research with innovation. With only innovative research in various fields, including science and technology, India can become self-reliant. Structured innovative research has played a significant role in strengthening India's robust economy in the recent years.

NEP HIGHLIGHTS THE SIGNIFICANCE OF HOLISTIC EDUCATION

According to the National Education Policy 2020, students should be imparted with comprehensive education rather than just the curriculum knowledge at each grade level. NEP focuses on the complete development of students, catering not only to their academic knowledge but also nurturing their physical, mental, emotional, ethical, and social growth. Holistic education put emphasis on the overall development of children, enhancing their ability to think and problem-solving skills. This education process provides students with an opportunity to understand social and moral values, aiding them in becoming responsible citizens.

Holistic education supports physical activities that encourage students' healthy physical development along with enhancing the spiritualism among them. Besides, the educational approach also develops creative thinking and encourages students' progress. The goal of Central University of Gujarat is to promote complete transformation of students enabling them competent with moral, social, and emotional development in the light of NEP. In the direction of implementing the National Education Policy 2020, over the past three years, various higher education institutions and universities in the country have included subjects such as human values, life skills, ethics, Indianness, physical education policy, personality development, and other topics in the curriculum for the holistic development of students. Positive results are being observed as a result of this implementation.

THE NEP 2020 AND THE INDIAN KNOWLEDGE TRADITION

The Indian Knowledge Tradition is one of the crucial elements of the National Education Policy 2020. To enable comprehensive development in the field of education, the Indian Knowledge Tradition has been integrated. It helps students in developing a sense of respect and gratitude for their culture, language, and heritage. Keeping this in view, Central University of Gujarat has also introduced MA in Hindu Studies to highlight the Indian value system.

The following aspects have been focused on New Education Policy in order to incorporate Indian knowledge tradition:

- **Balance between Spirituality and Materialistic Values:** This policy strongly establishes balance between materialistic values and spirituality among the students. It incorporates Indian culture, religion, and philosophy in education.
- **Promoting Indian Languages:** According to the policy, support for Indian languages is essential, and their development in the field of education needs to be encouraged. This aims to promote the preservation and usage of languages.
- **Vedic Knowledge and Education:** The policy ensures to integrate Vedic knowledge and education system. This provides students with the opportunity to study Vedic literature, yoga, Vedas, and other ancient knowledge.

NEP 2020 IS DIFFERENT FROM EARLIER POLICIES

NEP 2020 is different from other policies in many ways. First, it is based on the learning outcomes qualification framework with the aim of ensuring the complete development of students. It promotes the measurement criteria and quality improvement of education, focusing on evaluating students' knowledge, skills, and engineering. NEP also encourages experiential learning, providing students with both academic and vocational competencies. It also boosts multidisciplinary courses, enabling students to gain expertise in various fields. Central University of Gujarat has implemented interdisciplinary curricula which broadens horizon of students' thought process.

Incorporation of Digital Techniques in Education: This education policy encourages e-learning and promotes the integration of modern digital techniques in teaching and learning processes. With the implementation of this education policy, various higher education institutions have developed their "Learning Management System" portals in the past three years. Courses are being made available as "e-content" that students are studying with interest. All students from educational institutions are registering and benefiting from online courses on the Government of India's "SWAYAM" portal.

THE ACADEMIC BANK OF CREDIT

The Academic Bank of Credit is a virtual storehouse where the official records of each student's grades are maintained. Colleges and universities need to register in the Academic Bank of Credit scheme. If a student discontinues studies in between, he/she will be awarded a certificate, diploma, or degree based on the earned credits. Upon passing the first year, a certificate will be given; a diploma on passing the second year and a degree upon completing the three-year course. It functions like a commercial bank.

THE VIEWS EXPRESSED BY THE AUTHOR ARE PERSONAL

IN-DEPTH

"ERA OF GLOBAL BOILING" A NEW IN CLIMATE CHANGE

United Nations Secretary-General Antonio Guterres couldn't have made it starker. The era of global warming is over, the era of global boiling has arrived, he said after July, which still has a few days to go, was declared as the hottest month on record. To add to the global concern Guterres said, "And it is just the beginning." To prevent global temperature rise above the pre-industrial era and "avoid the worst of climate change, dramatic, immediate" climate action was needed. That is where sincere human effort is lacking as development pushes climate change on the back-burner. And nobody seems "terrified" beyond routine comments on high temperature and less or more rain not realising that not enough is being done about greenhouse gases and pollution.

The developmental push requires cutting swathes of dense forests which can't be replaced by planting of saplings. What's disconcerting is the marine heat wave with temperature from a buoy in Florida showing 38 degrees Celsius.

PAK PUSHING DRUGS, ARMS IN PUNJAB

That Pakistan was pushing drugs and arms into Punjab was known to the governments of India and Punjab. The troublesome neighbour neither admitted to its role nor did it ever try to stop it. For the first time Prime Minister Shehbaz Sharif's aide Mohd. Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins India border.

With uninhibited peddlers operating from across the border Punjab has become notorious for having the most number of drug addicts among all Indian states. The movie Udta Punjab tried to highlight the problem but nothing much was done to curb it. The drug that lands undetected is believed to be sent to Haryana, Himachal Pradesh, Rajasthan and Jammu. Police and political patronage have ensured that the drug trade in Punjab continues to flourish.

> Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins the India border

This year 260 kg of heroin and 30 Pakistani drones are reported to have been recovered by the BSF along with 19 arms and 470 rounds of ammunition. In the Ferozepur district 795 FIRs were reportedly registered under the NDPS Act between July 2022 and 2023. Pakistan's ulterior motives of destabilising India by pushing drugs and weapons and fanning the Khalistani movement have been exposed. For good neighbourly relations and to win India's trust the Pakistani government must desist from such devious means.

TOP TWEETS

On this #WorldNatureConservationDay, let's celebrate and cherish our beautiful planet today and every day. Together, we can make a positive impact by preserving biodiversity, protecting wildlife, and embracing sustainable practices.

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

Tomorrow, 29th July, is a special day for all of us. Hon. PM @narendramodi ji will inaugurate the Akhil Bharatiya Shiksha Samagam to commemorate #3YearsOfNEP. Three years of NEP has witnessed several firsts and has brought many transformations in our learning landscape. This two-day Samagam, a 'Shiksha Mahakumbh', will bring all stakeholders together in the #yagya of making India a 21st century knowledge economy.

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

SPIRITUAL SPEAK

Calmness, gentleness, silence, self-restraint, and purity: these are the disciplines of the mind.

BHAGAVAD GITA

● Vol 5 ● Issue No. 53 ● RNI NO. RAJENG/2019/77764, Printed and published by Anita Hada Sangwan on behalf of First Express Publishers, Printed at Bhaskar Printing Press, D.B. Corp Limited, Shivdaspura, Tonk Road, Jaipur. Published at 304, 3rd Floor, City Mall, Bhagwan Das Road, C-Scheme, Jaipur-302001, Rajasthan. Phone 0141-4920504. Editor-In-Chief: Dr Jagdeesh Chandra Editor: Anita Hada Sangwan responsible for selection of news under the PRB Act

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

CELEBRATING 3RD ANNIVERSARY OF NEP TODAY

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 AND TRANSFORMATION OF INDIAN EDUCATION SYSTEM

Prof Rama Shanker Dubey

The writer is the Vice Chancellor, Central University of Gujarat, Gandhinagar

National Education Policy has been transforming the Indian education system since its implementation in 2020. Undoubtedly, education is the most important aspect for the development of any nation. One of the pioneers of education systems, Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya believed that education is the most influential power. He fostered the opinion that education is the source of India's cultural, social, political, and economic impact. He used to say, "If you want the progress of the country, then make every effort to ensure that no boy or girl in the country remains illiterate." According to him, education is the only means to end the country's adversity, and literacy and education are the way to achieve it.

NEP HIGHLIGHTS THE SIGNIFICANCE OF HOLISTIC EDUCATION

According to the National Education Policy 2020, students should be imparted with comprehensive education rather than just the curriculum knowledge at each grade level. NEP focuses on the complete development of students, catering not only to their academic knowledge but also nurturing their physical, mental, emotional, ethical, and social growth. Holistic education put emphasis on the overall development of children, enhancing their ability to think and problem-solving skills. This education process provides students with an opportunity to understand social and moral values, aiding them in becoming responsible citizens.

Holistic education supports physical activities that encourage students' healthy physical development along with enhancing the spiritualism among them. Besides, the educational approach also develops creative thinking and encourages students' progress. The goal of Central University of Gujarat is to promote complete transformation of students enabling them competent with moral, social, and emotional development in the light of NEP. In the direction of implementing the National Education Policy 2020, over the past three years, various higher education institutions and universities in the country have included subjects such as human values, life skills, ethics, Indianness, physical education policy, personality development, and other topics in the curriculum for the holistic development of students. Positive results are being observed as a result of this implementation.

NEP 2020 IS DIFFERENT FROM EARLIER POLICIES

NEP 2020 is different from other policies in many ways. First, it is based on the learning outcomes qualification framework with the aim of ensuring the complete development of students. It promotes the measurement criteria and quality improvement of education, focusing on evaluating students' knowledge, skills, and engineering. NEP also encourages experiential learning, providing students with both academic and vocational competencies. It also boosts multidisciplinary courses, enabling students to gain expertise in various fields. Central University of Gujarat has implemented interdisciplinary curricula which broadens horizon of students' thought process.

Incorporation of Digital Techniques in Education: This education policy encourages e-learning and promotes the integration of modern digital techniques in teaching and learning processes. With the implementation of this education policy, various higher education institutions have developed their "Learning Management System" portals in the past three years. Courses are being made available as "e-content" that students are studying with interest. All students from educational institutions are registering and benefiting from online courses on the Government of India's "SWAYAM" portal.

THE ACADEMIC BANK OF CREDIT

The Academic Bank of Credit is a virtual storehouse where the official records of each student's grades are maintained. Colleges and universities need to register in the Academic Bank of Credit scheme. If a student discontinues studies in between, he/she will be awarded a certificate, diploma, or degree based on the earned credits. Upon passing the first year, a certificate will be given; a diploma on passing the second year and a degree upon completing the three-year course. It functions like a commercial bank.

THE VIEWS EXPRESSED BY THE AUTHOR ARE PERSONAL

THE NEP 2020 AND THE INDIAN KNOWLEDGE TRADITION

The Indian Knowledge Tradition is one of the crucial elements of the National Education Policy 2020. To enable comprehensive development in the field of education, the Indian Knowledge Tradition has been integrated. It helps students in developing a sense of respect and gratitude for their culture, language, and heritage. Keeping this in view, Central University of Gujarat has also introduced MA in Hindu Studies to highlight the Indian value system.

The following aspects have been focused on New Education Policy in order to incorporate Indian knowledge tradition:

- **Balance between Spirituality and Materialistic Values:** This policy strongly establishes balance between materialistic values and spirituality among the students. It incorporates Indian culture, religion, and philosophy in education.
- **Promoting Indian Languages:** According to the policy, support for Indian languages is essential, and their development in the field of education needs to be encouraged. This aims to promote the preservation and usage of languages.
- **Vedic Knowledge and Education:** The policy ensures to integrate Vedic knowledge and education system. This provides students with the opportunity to study Vedic literature, yoga, Vedas, and other ancient knowledge.

RESEARCH AND Innovations

Higher education institutions are centered for knowledge creation which is only possible through research. Innovative and research-oriented approaches are essential for addressing various national and international challenges and finding solutions to them. As per the National Education Policy, students get the opportunity to become highly skilled researchers to attain maximum knowledge in their studies. The establishment of 'Research and Development Cell' centres in higher education institutions has been promoted in the National Education Policy.

Through these cells, support will be provided for various research projects and opportunities for research and innovation. The aim is to empower students with updated and specialized knowledge and enable them to find solutions to local, national, and international problems. Special research programs, research projects, special lectures, seminars, etc., are being conducted and monitored through Research and Development Cells. This education policy supports the students with the necessary resources to conduct research and support new ideas.

Besides this, policy also encourages Indian higher education institutions to collaborate with foreign institutions to enrich research with innovation. With only innovative research in various fields, including science and technology, India can become self-reliant. Structured innovative research has played a significant role in strengthening India's robust economy in the recent years.

IN-DEPTH

"ERA OF GLOBAL BOILING" A NEW IN CLIMATE CHANGE

United Nations Secretary-General Antonio Guterres couldn't have made it starker. The era of global warming is over, the era of global boiling has arrived, he said after July, which still has a few days to go, was declared as the hottest month on record. To add to the global concern Guterres said, "And it is just the beginning." To prevent global temperature rise above the pre-industrial era and "avoid the worst of climate change, dramatic, immediate" climate action was needed. That is where sincere human effort is lacking as development pushes climate change on the back-burner. And nobody seems "terrified" beyond routine comments on high temperature and less or more rain not realising that not enough is being done about greenhouse gases and pollution.

The developmental push requires cutting swathes of dense forests which can't be replaced by planting of saplings. What's disconcerting is the marine heat wave with temperature from a buoy in Florida showing 38 degrees Celsius.

PAK PUSHING DRUGS, ARMS IN PUNJAB

That Pakistan was pushing drugs and arms into Punjab was known to the governments of India and Punjab. The troublesome neighbour neither admitted to its role nor did it ever try to stop it. For the first time Prime Minister Shehbaz Sharif's aide Mohd. Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins India border.

With uninhibited peddlers operating from across the border Punjab has become notorious for having the most number of drug addicts among all Indian states. The movie Udta Punjab tried to highlight the problem but nothing much was done to curb it. The drug that lands undetected is believed to be sent to Haryana, Himachal Pradesh, Rajasthan and Jammu. Police and political patronage have ensured that the drug trade in Punjab continues to flourish.

This year 260 kg of heroin and 30 Pakistani drones are reported to have been recovered by the BSF along with 19 arms and 470 rounds of ammunition. In the Ferozepur district 795 FIRs were reportedly registered under the NDPS Act between July 2022 and 2023. Pakistan's ulterior motives of destabilising India by pushing drugs and weapons and fanning the Khalistani movement have been exposed. For good neighbourly relations and to win India's trust the Pakistani government must desist from such devious means.

> Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins India border

TOP TWEETS

On this #WorldNature ConservationDay, let's celebrate and cherish our beautiful planet today and every day. Together, we can make a positive impact by preserving biodiversity, protecting wildlife, and embracing sustainable practices.

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

Tomorrow, 29th July, is a special day for all of us. Hon. PM @narendramodi ji will inaugurate the Akhil Bharatiya Shiksha Samagam to commemorate #3YearsOfNEP. Three years of NEP has witnessed several firsts and has brought many transformations in our learning landscape. This two-day Samagam, a 'Shiksha Mahakumbh', will bring all stakeholders together in the #yagya of making India a 21st century knowledge economy.

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

SPIRITUAL SPEAK

Calmness, gentleness, silence, self-restraint, and purity: these are the disciplines of the mind.

BHAGAVAD GITA

• Vol 5 • Issue No. 53 • RNI NO. RAJENG/2019/77764. Printed and published by Anita Hada Sangwan on behalf of First Express Publishers. Printed at Bhaskar Printing Press, D.B. Corp Limited, Shivdaspura, Tonk Road, Jaipur. Published at 304, 3rd Floor, City Mall, Bhagwan Das Road, C-Scheme, Jaipur-302001, Rajasthan. Phone 0141-4920504. Editor-In-Chief: Dr Jagdeesh Chandra Editor: Anita Hada Sangwan responsible for selection of news under the PRB Act

Thursday
27.07.2023
*Volume :8 * Issue No.01
*Email.: kamalamgujarat@gmail.com
*www.kamalamgujarat.com
*Editor :Mahesh N. Patel- (98249 10606)

ગતિશીલ ગુજરાત ની વિકાસ ગાથા રજૂ કરતું એકમાત્ર અખબાર...

કમલમ્

KAMALAM ગાંધીનગર થી પ્રસિદ્ધ થતું દૈનિક Daily

RNI No.:GUJGUJ/2016/73451
PRINTED MATTER

To,

*Managing Editor: Arjun Sondarva *Office: A-3, Plot No. R - 13, Tanishq Complex, New Greencity, Sector-26, Gandhinagar (Gujarat) 382028 *Page :04 *Rs. 00.25/- *Annual Rs. 90/-

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણ અને સર્વાંગી વિકાસનો માર્ગ મોકળો કરી રહી છેઃ પ્રો. રમાશંકર દુબે

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીના ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થવા પર સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત ખાતે પત્રકાર પરિષદનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું

કમલમ્ ન્યુઝ,
ગાંધીનગર. ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં દેશની સમૃદ્ધ પ્રતિભા અને સંસાધનોનો ઉપયોગ કરીને વ્યક્તિ, સમાજ અને રાષ્ટ્રના વિકાસ માટે કાર્ય કરવામાં આવે છે. ભારત વિશ્વમાં સૌથી યુવા વસ્તી ધરાવતો દેશ છે. દેશના યુવાનોને ગુણવત્તાયુક્ત શૈક્ષણિક તકો પૂરી પાડીને જ આત્મનિર્ભર ભારતની કલ્પના સાકાર થઈ શકે છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ એ આ વિઝનને સાકાર કરવા માટે મજબૂત પાયો નાખ્યો છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિએ સર્વસમાવેશક અને ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણને સુનિશ્ચિત કરવા અને જીવનભર શીખવાની તકોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે કાર્યક્ષમ માર્ગ મોકળો કરવા માટે કામ કર્યું છે. નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીને ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થયા હોવાથી, ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ NEPના ઘણા મુખ્ય મુદ્દાઓને અમલમાં લાવવામાં સફળતા હાંસલ કરી છે. યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ બુધવારે એક પત્રકાર પરિષદમાં જણાવ્યું હતું કે વ્યક્તિના સંપૂર્ણ વિકાસની કલ્પનાને સર્વગ્રાહી શિક્ષણ દ્વારા જ સાકાર કરી શકાય છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ સમગ્ર વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે વરદાન સાબિત થઈ રહી છે. છેલ્લા ત્રણ વર્ષમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના ઘણા મુદ્દાઓ યુનિવર્સિટીમાં લાગુ કરવામાં આવ્યા છે. જેમાં નીચેના મુદ્દાઓનો સમાવેશ થાય છે. સર્વગ્રાહી શિક્ષણનો સમાવેશઃ વિદ્યાર્થીને શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું જ્ઞાન માત્ર શૈક્ષણિક જ્ઞાન માટે જ નહીં પરંતુ તેમના શારીરિક, માનસિક, ભાવનાત્મક, નૈતિક અને સામાજિક જ્ઞાનમાં વધારો કરવા માટે અત્યંત જરૂરી છે. ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે દરેક સેમેસ્ટર માટે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કર્યા છે. આની મદદથી વિદ્યાર્થીઓને માત્ર અભ્યાસક્રમનું જ નહીં પરંતુ સમગ્ર શિક્ષણનું પણ સંપૂર્ણ જ્ઞાન મળી રહ્યું છે. બે ક્રેડિટના ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી અભ્યાસક્રમ : યુનિવર્સિટી દ્વારા મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. જેમાં નાના વૈકલ્પિક અભ્યાસક્રમોમાં ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. વાઇસ ચાન્સેલરે માહિતી આપી હતી કે દરેક કાર્યક્રમને ૨ ક્રેડિટનું વેઇટેજ આપવામાં આવ્યું છે. યુનિવર્સિટીના

-CUGમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિનો સંપૂર્ણ અમલ કરવામાં આવી રહ્યો છે

વિદ્યાર્થીઓ તેમની રુચિ મુજબ આ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સમાં પ્રવેશ લઈ રહ્યા છે. યુનિવર્સિટીની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમઃ ક્લાસ-રૂમ અભ્યાસની સાથે આઓનલાઈન શિક્ષણને પ્રોત્સાહન આપવા માટે, યુનિવર્સિટીએ તેની પોતાની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમ (LMS) શરૂ કરી છે. આ સાથે વિદ્યાર્થીઓએ ક્રેડિટ ટ્રાન્સફર હેઠળ સ્વયમ્ પોર્ટલ પર પોતાનું રજીસ્ટ્રેશન કરાવ્યું છે. કુલપતિ શ્રી એ જણાવ્યું કે, ઓનલાઈન કોર્સ પસંદ કરીને વિદ્યાર્થીઓ પણ પોતાની પસંદગીના વિષયોનો અભ્યાસ કરી રહ્યા છે. DigiLocker સુવિધાઃ વિદ્યાર્થીઓને ક્લાઉડમાં એકાઉન્ટ બનાવીને અને તેમને સુરક્ષિત રાખીને શૈક્ષણિક માર્કશીટ અને અન્ય અધિકૃત દસ્તાવેજો અથવા પ્રમાણપત્રો એક્સેસ કરવા માટે ડિજિટલ એકાઉન્ટ આપવામાં આવ્યું હતું. તેના પર યુનિવર્સિટીના તમામ વિદ્યાર્થીઓએ પોતાનું ખાતું ખોલાવ્યું છે. દરેક એકાઉન્ટ નકલો અપલોડ કરવા માટે એક ૧ સુધીનો સ્ટોરેજ પ્રદાન કરે છે. મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ ડિગ્રી કોર્સના ફોર્મેટ મુજબ યુનિવર્સિટીમાં મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. વિદ્યાર્થીઓ ખુશીથી તેમની પસંદગી કરી રહ્યા છે અને ડિગ્રી કોર્સ સાથે અભ્યાસ કરી રહ્યા છે. સંશોધન અને વિકાસ સેલઃ ઉચ્ચ શિક્ષણમાં સંશોધન અને નવીનતાને પ્રોત્સાહન આપવા માટે, યુનિવર્સિટીમાં સંશોધન અને વિકાસ સેલની સ્થાપના કરવામાં આવી છે. સામાજિક દૃષ્ટિકોણથી સંબંધિત સંશોધનને નવા પરિમાણો આપવા માટે, કોષ સંશોધકો અને વિદ્યાર્થીઓને મૂલ્યવાન સંશોધન માહિતી પ્રદાન કરે છે. ઉચ્ચ અભ્યાસમાં વિદ્યાર્થીઓની સંશોધન સમસ્યાઓ પણ સેલ દ્વારા ઉકેલવામાં આવે છે. પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં અધ્યયન-અધ્યાપનઃ અધ્યયનના સ્તરને સરળ બનાવવા તેમજ ઓછા સમયમાં વધુ ગુણવત્તાયુક્ત માહિતીથી સમૃદ્ધ થવા માટે પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં અભ્યાસ અને અધ્યાપનની પરંપરા વિકસાવવામાં આવી છે. હવે અન્ય ભાષાઓમાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓ પણ અન્ય ભાષાઓ શીખીને તેમના જ્ઞાન અને કૌશલ્યમાં વધારો કરી રહ્યા છે. હિંદુ અભ્યાસમાં અનુસ્નાતકઃ સર્વગ્રાહી શિક્ષણને નક્કર આકાર આપવા માટે, વર્ષ ૨૦૨૨માં, યુનિવર્સિટીએ સેન્ટર ફોર હિંદુ સ્ટડીઝ દ્વારા અનુસ્નાતક ડિગ્રી અભ્યાસક્રમ પણ શરૂ કર્યો છે

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

નવગુજરાત સમય

NAVGUJARAT SAMAY RNI Registration No. GUJGUJ/2014/55529 Year-10, Vol-176 Ahmedabad વિક્રમ સંવત ૨૦૭૯ | અધિક શ્રાવણ સુદ નોમ | ગુરુવાર | ૨૭ જુલાઈ, ૨૦૨૩ | ૫૬ પાના | કિંમત ₹૫.૦૦

...ને રેન્કિંગમાં ફાયદો p14
navgujaratsamay.com
facebook.com/navgujaratsamay
twitter.com/navgujaratsamay
શાકિબના ડેબ્યુમાં શેહનાઝ ગિલ? p15
બાંગ્લાદેશી સ્ટાર શાકિબ ખાનના બોલિવુડ ડેબ્યુમાં શેહનાઝ ગિલ?

નવી એજ્યુકેશન પોલિસી અંતર્ગત સેમેસ્ટર દીઠ 20 ક્રેડિટ નક્કી કરાઈ, 16 મલ્ટિડિસિપ્લનરી કોર્સ શરૂ કરાશેઃ પ્રો. રમાશંકર દૂબે

ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં તમામ ફેકલ્ટીમાં ચાર વર્ષના સ્નાતક કોર્સ શરૂ

નવગુજરાત સમય > અમદાવાદ

દેશની તમામ સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં નવી એજ્યુકેશન પોલિસીનો અમલ કરાયો છે. દરેક સેમેસ્ટર દીઠ 20 ક્રેડિટ રખાશે. રાજ્યની સ્ટેટ યુનિવર્સિટીઓમાં હવે નવી એજ્યુકેશન પોલિસીનો અમલ કેવી રીતે કરવો તે અંગે SOP બહાર પાડવામાં આવી રહી છે ત્યારે સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં છેલ્લા બે વર્ષથી આ દિશામાં કામગીરી શરૂ કરી દેવામાં આવી હોવાથી ચાલુ વર્ષથી તમામ ફેકલ્ટીમાં ચાર વર્ષના કોર્સ શરૂ કરી દેવાયા છે.

વા. ચાન્સેલર રમાશંકર દૂબે

ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી દ્વારા નવી એજ્યુકેશન પોલિસી પર કરાયેલી કામગીરી અંગે માહિતી આપતાં વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દૂબેએ કહ્યું કે દરેક સેમેસ્ટર દીઠ 20 ક્રેડિટ રાખવાનું નક્કી કરાયું છે. એક કે બે ક્રેડિટમાં વધારો-ઘટાડો થઇ શકે છે. સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કરાયા છે. વિદ્યાર્થીઓ પોતાના નિયમિત અભ્યાસની સાથે સાથે અન્ય પસંદગીના વિષયોનું પણ જ્ઞાન મેળવી શકશે. આ ઉપરાંત બે ક્રેડિટના 16 જેટલા મલ્ટીડિસિપ્લનરી અભ્યાસક્રમ પણ શરૂ કરવામાં આવશે. વિદ્યાર્થીઓ પોતાની રૂચી પ્રમાણે મલ્ટીડિસિપ્લનરી કોર્સમાં ભાગ લઇને ક્રેડિટ મેળવી શકશે. વિદ્યાર્થીઓ નિયમિત કલાસરૂમ અભ્યાસની સાથે લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમનો લાભ લઇને ક્રેડિટ ટ્રાન્સફર પણ કરી શકશે. જેમા વિદ્યાર્થીઓ ઓનલાઇન કોર્સ પણ ભણી શકશે.

વિદ્યાર્થીઓ પોતાનું ડિજીલોકરમાં એકાઉન્ટ બનાવીને પોતાની ક્રેડિટ, માર્કશીટ સહિતના અન્ય ડોક્યુમેન્ટ પણ રાખી શકશે. યુનિવર્સિટી દ્વારા દરેક વિદ્યાર્થીઓને ડિજિટલ લોકર શરૂ કરવા માટે સૂચના અપાઈ છે. નવી એજ્યુકેશન પોલિસી અંગે માહિતી આપતાં વાઇસ ચાન્સેલરે કહ્યું કે સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં બે વર્ષથી નવી એજ્યુકેશન પોલિસી લાગુ કરાઈ છે. દરેક કોર્સ ચાર વર્ષનો કરી દેવાયો છે. દરેક સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીમાં કોમન યુનિવર્સિટી અનુસાર 20 ક્રેડિટ પ્રમાણે કોર્સ ડિઝાઇન કરી દેવાયા છે. આ ઉપરાંત સર્વગ્રાહી શિક્ષણ અંતર્ગત સેન્ટર ફોર હિન્દુ સ્ટડીઝ દ્વારા અનુસ્નાતક ડિગ્રી કોર્સ શરૂ કરાયા છે. મહત્ત્વની વાત એ કે, ગુજરાતમાં તમામ યુનિવર્સિટીઓમાં વર્ષ 2026-27 પછી તમામ ત્રણ વર્ષના કોર્સને ચાર વર્ષમાં ટ્રાન્સફર કરાશે જ્યારે સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ ચાલુ વર્ષથી જ તમામ કોર્સ ચાર વર્ષના કરીને 20 ક્રેડિટ પ્રમાણે વિદ્યાર્થીઓને પ્રવેશ ફાળવવાનું શરૂ કરી દીધું છે.

78

एक छोटा सा गलत कदम जीवन को खत्म कर सकता है: [illegible]

जयपुर ▪ दिल्ली से प्रकाशित

बिज़नेस रेमेडीज

वर्ष : 10 । अंक : 203 भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए स्वीकृत

व्यापार एवं विकास की आवाज

मूल्य : 3 रुपए । पेज : 8 दैनिक www.businessremedies.com

जयपुर। गुरूवार 27 जुलाई, 2023

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

'सीयूजी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को संपूर्णता से लागू किया जा रहा है'

बिज़नेस रेमेडीज/गांधीनगर।

उच्च शिक्षण संस्थानों में देश की समृद्ध प्रतिभा एवं संसाधनों का उपयोग कर व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के निर्माण के लिए कार्य किया जा रहा है। भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश है। देश के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाने से ही आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। इस कल्पना को मूर्त रूप देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक मजबूत आधार प्रस्तुत किया है। समावेशी और गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने कुशल मार्ग प्रशस्त करने का काम किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को तीन वर्ष पूरे हो गए है, ऐसे में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय ने एनईपी के कई मुख्य बिंदुओं को लागू करने में सफलता प्राप्त की है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे ने बुधवार को प्रेस वार्ता में बताया कि समग्र शिक्षा से ही व्यक्ति के पूर्ण विकास की कल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकता है। समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वरदान साबित हो रही है। विश्वविद्यालय में पिछले तीन वर्षो में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कई बिंदुओं को लागू किया जा चुका है।

समग्र शिक्षा का समावेश: विद्यार्थी को शिक्षा संस्थानों में महज अकादमिक ज्ञान ही नहीं अपितु उनके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक ज्ञान में अभिवृद्धि करने के लिए समग्र शिक्षा का ज्ञान मिलना परम आवश्यक है। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर दो क्रेडिट का कोर्स हर सेमेस्टर के लिए लागू कर दिया है। इसके सहायता से विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम का ही नहीं अपितु समग्र शिक्षा का सम्पूर्ण ज्ञान भी मिल रहा है।

दो क्रेडिट के 16 बहु विषयक प्रोग्राम : विश्वविद्यालय द्वारा बहु विषयक प्रोग्राम भी शुरू किये गए है। इसमें छोटे वैकल्पिक कोर्सेज में 16 बहु विषयक कार्यक्रम शुरु हुए है। कुलपति ने बताया कि प्रत्येक कार्यक्रम को 2 क्रेडिट का भार दिया गया है। विश्वविद्यालय के छात्र इन बहुविषयक कार्यक्रमों में अपनी रुचि के अनुरूप प्रवेश ले रहे हैं।

विश्वविद्यालय का लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम : कक्षा-कक्ष के अध्ययन के साथ ही अब ऑनलाईन लर्निंग को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय में खुद का लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) शुरु हो चुका है। इसके साथ ही क्रेडिट स्थानांतरण के तहत छात्र 'स्वयं' पोर्टल पर अपना पंजीकरण करवा चुके है। कुलपति महोदय ने बताया कि ऑनलाइन कोर्सेज का चयन कर पसंद के विषयों की पढ़ाई भी छात्र कर रहे हैं।

डिजीलॉकर की सुविधा : छात्रों को शैक्षणिक मार्कशीट और दूसरे प्रामाणिक दस्तावेजों या प्रमाण पत्रों का उपयोग करने के लिए क्लाउड में खाता बनाकर उन्हें सुरक्षित रखने का डिजिटल अकाउंट दिया गया था। विश्वविद्यालय के सभी छात्रों ने अपना खाता उस पर खोल लिया है। प्रत्येक खाते में प्रतियां अपलोड करने के लिए एक जीबी तक का भंडारण प्रदान किया जाता है।

बहु विषयक सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्सेज : डिग्री कोर्सेज के प्रारूप के अनुरूप ही विश्वविद्यालय में बहु विषयक सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्सेज भी शुरू किए जा चुके है। विद्यार्थी सहर्ष इनका चयन कर डिग्री कोर्स के साथ अध्ययन कर रहे हैं।

रिसर्च एवं डेवलपमेंट सेल : उच्च शिक्षा में शोध और नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय में शोध एवं विकास प्रकोष्ठ की स्थापना की जा चुकी है।

❖ તા.૨૭.૦૭.૨૩ અંક:૧૮

તંત્રી:અશોક ડી.રાવલ
❖ સહતંત્રી:નયના એ.રાવલ
❖ મો.:૯૪૦૯૪૨૩૮૨૯
❖ વર્ષ:૧૮ ❖ અંક:૧૮
❖ તા.૨૭.૦૭.૨૩
❖ ગુરૂવાર ❖ કિંમત:૧/- ₹
❖ વા.લવાજમ:૫૦/- ₹
❖ પાના:૪
RNI No.: GUJGUJ/2012/43539

Since 1993

નોર્થ ન્યુઝ

Weekly

Verification Code: GUJGUJ 39854

Email:north.news@yahoo.in

Online - Offline

CRACK NEET-2024

RENEET PHASE-2

Batch started from 1st August (Online/Offline)

સરસાઈ ના પરિણામ કરતા NEET-24 માં મિનિમમ 250+ માર્ક્સ વધારો

9727276002 | 9712346...

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

CUGમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિનો સંપૂર્ણ અમલ કરવામાં આવી રહ્યો છે

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીના ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થવા પર સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટી ઓફ ગુજરાત ખાતે પત્રકારોને સંબોધન

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૬

નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીને ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થવા સાંપડવાથી, ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ NEPના ઘણા મુખ્ય મુદ્દાઓને અમલમાં લાવવામાં સફળતા હાંસલ કરી છે. યુનિવર્સિટીના વાઇસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ બુધવારે એક પત્રકાર પરિષદમાં જણાવ્યું હતું કે વ્યક્તિના સંપૂર્ણ વિકાસની કલ્પનાને સર્વગ્રાહી શિક્ષણ દ્વારા જ સાકાર કરી શકાય છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ સમગ્ર વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે વરદાન સાબિત થઈ રહી છે. છેલ્લા ત્રણ વર્ષમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના ઘણા મુદ્દાઓ યુનિવર્સિટીમાં લાગુ કરવામાં આવ્યા છે, જેમાં નીચેના મુદ્દાઓનો સમાવેશ થાય છે.

સર્વગ્રાહી શિક્ષણનો સમાવેશ: વિદ્યાર્થીને શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું જ્ઞાન માત્ર શૈક્ષણિક જ્ઞાન માટે જ નહીં પરંતુ તેમના શારીરિક, માનસિક, ભાવનાત્મક, નૈતિક અને સામાજિક જ્ઞાનમાં વધારો કરવા માટે અત્યંત જરૂરી છે. ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે દરેક સેમેસ્ટર માટે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કર્યા છે. આની મદદથી વિદ્યાર્થીઓને માત્ર અભ્યાસક્રમનું જ નહીં પરંતુ સમગ્ર શિક્ષણનું પણ સંપૂર્ણ જ્ઞાન મળી રહ્યું છે.

બે ક્રેડિટના ૧૯ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી અભ્યાસક્રમ : યુનિવર્સિટી દ્વારા મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. જેમાં નાના વૈકલ્પિક અભ્યાસક્રમોમાં ૧૯ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. વાઇસ ચાન્સેલરે માહિતી આપી હતી કે દરેક કાર્યક્રમને ૨ ક્રેડિટનું વેઇટેજ આપવામાં આવ્યું છે. યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થીઓ તેમની રુચિ મુજબ આ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સમાં પ્રવેશ લઈ રહ્યા છે.

યુનિવર્સિટીની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમ: ક્લાસ-રૂમ અભ્યાસની સાથે ઓનલાઈન શિક્ષણને પ્રોત્સાહન આપવા માટે, યુનિવર્સિટીએ તેની પોતાની લર્નિંગ મેનેજમેન્ટ સિસ્ટમ (LMS) શરૂ કરી છે. આ સાથે વિદ્યાર્થીઓએ ક્રેડિટ ટ્રાન્સફર સક્ષમ સ્વયમ્ પોર્ટલ પર પોતાનું રજીસ્ટ્રેશન કરાવ્યું છે. કુલપતિ શ્રી એ જણાવ્યું કે, ઓનલાઈન કોર્સ પસંદ કરીને વિદ્યાર્થીઓ પણ પોતાની પસંદગીના વિષયોનો અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

DigiLocker સુવિધા: વિદ્યાર્થીઓને ક્લાઉડમાં એકાઉન્ટ બનાવીને અને તેમને સુરક્ષિત રાખીને શૈક્ષણિક માર્કશીટ અને અન્ય અધિકૃત દસ્તાવેજો અથવા પ્રમાણપત્રો એક્સેસ કરવા માટે ડિજિટલ એકાઉન્ટ આપવામાં આવ્યું હતું. તેના પર યુનિવર્સિટીના તમામ વિદ્યાર્થીઓએ પોતાનું ખાતું ખોલાવ્યું છે. દરેક એકાઉન્ટ નકલો અપલોડ કરવા માટે એક GB સુધીનો સ્ટોરેજ પ્રદાન કરે છે.

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ બાબતે સંબોધન કરતા કુલપતિશ્રી રમાશંકર દુબે

મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ: ડિગ્રી કોર્સના ફોર્મેટ મુજબ યુનિવર્સિટીમાં મલ્ટિડિસિપ્લિનરી સર્ટિફિકેટ અને ડિપ્લોમા કોર્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. વિદ્યાર્થીઓ ખુશીથી તેમની પસંદગી કરી રહ્યા છે અને ડિગ્રી કોર્સ સાથે અભ્યાસ કરી રહ્યા છે.

સંશોધન અને વિકાસ સેલ: ઉચ્ચ શિક્ષણમાં સંશોધન અને નવીનતાને પ્રોત્સાહન આપવા માટે, યુનિવર્સિટીમાં સંશોધન અને વિકાસ સેલની સ્થાપના કરવામાં આવી છે. સામાજિક દૃષ્ટિકોણથી સંબંધિત સંશોધનને નવા પરિમાણો આપવા માટે, શોધ સંશોધકો અને વિદ્યાર્થીઓને મૂલ્યવાન સંશોધન માહિતી પ્રદાન કરે છે. ઉચ્ચ અભ્યાસમાં વિદ્યાર્થીઓની સમસ્યાઓ પણ સેલ દ્વારા ઉકેલવામાં આવે છે.

પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં અધ્યયન અધ્યાપન: અધ્યયનના સ્તરને સરળ બનાવવા તેમજ ઓછા સમયમાં વધુ ગુણવત્તાયુક્ત માહિતીથી સમૃદ્ધ થવા માટે પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં અભ્યાસ અને અધ્યાપનની પરંપરા વિકસાવવામાં આવી છે. હવે અન્ય ભાષાઓમાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓ પણ અન્ય ભાષાઓ શીખીને તેમના જ્ઞાન અને કૌશલ્યમાં વધારો કરી રહ્યા છે. સિંધુ અભ્યાસમાં અનુસ્નાતક સર્વગ્રાહી શિક્ષણને નક્કર આકાર આપવા માટે, વર્ષ ૨૦૨૨માં, યુનિવર્સિટીએ સેન્ટર ફોર સિંધુ સ્ટડીઝ દ્વારા અનુસ્નાતક ડિગ્રી અભ્યાસક્રમ પણ શરૂ કર્યો છે.

શિક્ષણ મંત્રી શ્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંડોરના હસ્તે અને રાજ્યકક્ષાના મંત્રી શ્રી પ્રફુલભાઈ પાનસેરીયાની પ્રેરક ઉપસ્થિતિમાં "કારકિર્દીના પંથે-૨૦૨૩" ડિજિટલ વિશેષાંકનું ગાંધીનગર ખાતે વિમોચન

નોર્થન્યુઝ, તા.૨૬

અમદાવાદ શહેર જિલ્લા શિક્ષણાધિકારીશ્રીની કચેરી દ્વારા નવીન પહેલના ભાગરૂપે રાજ્યના વિદ્યાર્થીઓના ભાવિ નિર્માણમાં સહાયક અને માર્ગદર્શક બને એવા ઉદ્દેશથી "કારકિર્દીના પંથે-૨૦૨૩" ડિજિટલ વિશેષાંક તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે. જેનું ગાંધીનગર ખાતે શિક્ષણ મંત્રી શ્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંડોરના હસ્તે અને રાજ્યકક્ષાના મંત્રીશ્રી પ્રફુલભાઈ પાનસેરીયાની પ્રેરક ઉપસ્થિતિમાં વિમોચન કરવામાં આવ્યું હતું.

ડિજિટલ ઇન્ડિયા અંતર્ગત તૈયાર કરેલ "કારકિર્દીના પંથે-૨૦૨૩" ડિજિટલ વિશેષાંક વિદ્યાર્થીઓ, વાલીઓ અને શિક્ષકોને કારકિર્દીનું સાચું માર્ગદર્શન પૂરું પાડી જ્ઞાનમાં વૃદ્ધિ કરશે. જે કારકિર્દી અને વ્યવસાયનું માર્ગદર્શન પૂરું પાડી વિદ્યાર્થીઓ માટે ઉજ્જવળ ભવિષ્યના નિર્માણનો આધારસ્તંભ બનશે, તેમ શિક્ષણ મંત્રીશ્રી ડૉ. કુબેરભાઈ ડિંડોરે જણાવ્યું હતું.

વધુમાં મંત્રીશ્રીએ કહ્યું હતું કે, વિદ્યાર્થી જીવનમાં ધોરણ ૧૦ અને ધોરણ ૧૨ એ કારકિર્દીના મહત્વના વર્ષો છે, ત્યારે યોગ્ય સમયે યોગ્ય નિર્ણય ભાવકમાં રહેલી સુષુપ્ત શક્તિઓને સાચી દિશા અને ભાવિના જીવનમાં પ્રગતિના પાયા પણ તૈયાર કરે છે. "કારકિર્દીના પંથે-૨૦૨૩" ડિજિટલ વિશેષાંક તમામ વિદ્યાર્થીઓ, વાલીઓ અને શિક્ષણ પ્રેમીઓને નિઃશુલ્ક પ્રાપ્ત થાય તેવા શુભ આશયથી તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે. જે વિદ્યાર્થીઓના ભવિષ્યને સફળ બનાવવા અને રાહ ચીંધવાનો એક નવતર પ્રયાસ નીવડશે.

આ પ્રસંગે સમગ્ર શિક્ષા અભિયાનના સચિવશ્રી ... , અમદાવાદ શહેરના ડી.ઇ.ઓ.શ્રી આર. એમ. ચૌધરી તેમજ સંકલન સમિતિના સભ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

29

CELEBRATING 3RD ANNIVERSARY OF NEP TODAY

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 AND TRANSFORMATION OF INDIAN EDUCATION SYSTEM

Prof Rama Shanker Dubey

The writer is the Vice Chancellor, Central University of Gujarat, Gandhinagar

RESEARCH AND Innovations

Higher education Institutions are centered for knowledge creation which is only possible through research. Innovative and research-oriented approaches are essential for addressing various national and international challenges and finding solutions to them. As per the National Education Policy, students get the opportunity to become highly skilled researchers to attain maximum knowledge in their studies. The establishment of 'Research and Development Cell' centres in higher education institutions has been promoted in the National Education Policy.

Through these cells, support will be provided for various research projects and opportunities for research and innovation. The aim is to empower students with updated and specialized knowledge and enable them to find solutions to local, national, and international problems. Special research programs, research projects, special lectures, seminars, etc., are being conducted and monitored through Research and Development Cells. This education policy supports the students with the necessary resources to conduct research and support new ideas.

Besides this, policy also encourages Indian higher education institutions to collaborate with foreign institutions to enrich research with innovation. With only innovative research in various fields, including science and technology, India can become self-reliant. Structured innovative research has played a significant role in strengthening India's robust economy in the recent years.

National Education Policy has been transforming the Indian education system since its implementation in 2020. Undoubtedly, education is the most important aspect for the development of any nation. One of the pioneers of education systems, Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya believed that education is the most influential power. He fostered the opinion that education is the source of India's cultural, social, political, and economic impact. He used to say, "If you want the progress of the country, then make every effort to ensure that no boy or girl in the country remains illiterate." According to him, education is the only means to end the country's adversity, and literacy and education are the way to achieve it.

NEP HIGHLIGHTS THE SIGNIFICANCE OF HOLISTIC EDUCATION

According to the National Education Policy 2020, students should be imparted with comprehensive education rather than just the curriculum knowledge at each grade level. NEP focuses on the complete development of students, catering not only to their academic knowledge but also nurturing their physical, mental, emotional, ethical, and social growth. Holistic education put emphasis on the overall development of children, enhancing their ability to think and problem-solving skills. This education process provides students with an opportunity to understand social and moral values, aiding them in becoming responsible citizens.

Holistic education supports physical activities that encourage students' healthy physical development along with enhancing the spiritualism among them. Besides, the educational approach also develops creative thinking and encourages students' progress. The goal of Central University of Gujarat is to promote complete transformation of students enabling them competent with moral, social, and emotional development in the light of NEP. In the direction of implementing the National Education Policy 2020, over the past three years, various higher education institutions and universities in the country have included subjects such as human values, life skills, ethics, Indianness, physical education policy, personality development, and other topics in the curriculum for the holistic development of students. Positive results are being observed as a result of this implementation.

THE NEP 2020 AND THE INDIAN KNOWLEDGE TRADITION

The Indian Knowledge Tradition is one of the crucial elements of the National Education Policy 2020. To enable comprehensive development in the field of education, the Indian Knowledge Tradition has been integrated. It helps students in developing a sense of respect and gratitude for their culture, language, and heritage. Keeping this in view, Central University of Gujarat has also introduced MA in Hindu Studies to highlight the Indian value system.

The following aspects have been focused on New Education Policy in order to incorporate Indian knowledge tradition:

- **Balance between Spirituality and Materialistic Values:** This policy strongly establishes balance between materialistic values and spirituality among the students. It incorporates Indian culture, religion, and philosophy in education.
- **Promoting Indian Languages:** According to the policy, support for Indian languages is essential, and their development in the field of education needs to be encouraged. This aims to promote the preservation and usage of languages.
- **Vedic Knowledge and Education:** The policy ensures to integrate Vedic knowledge and education system. This provides students with the opportunity to study Vedic literature, yoga, Vedas, and other ancient knowledge.

NEP 2020 IS DIFFERENT FROM EARLIER POLICIES

NEP 2020 is different from other policies in many ways. First, it is based on the learning outcomes qualification framework with the aim of ensuring the complete development of students. It promotes the measurement criteria and quality improvement of education, focusing on evaluating students' knowledge, skills, and engineering. NEP also encourages experiential learning, providing students with both academic and vocational competencies. It also boosts multidisciplinary courses, enabling students to gain expertise in various fields. Central University of Gujarat has implemented interdisciplinary curricula which broadens horizon of students' thought process.

Incorporation of Digital Techniques in Education: This education policy encourages e-learning and promotes the integration of modern digital techniques in teaching and learning processes. With the implementation of this education policy, various higher education institutions have developed their "Learning Management System" portals in the past three years. Courses are being made available as "e-content" that students are studying with interest. All students from educational institutions are registering and benefiting from online courses on the Government of India's "SWAYAM" portal.

THE ACADEMIC BANK OF CREDIT

The Academic Bank of Credit is a virtual storehouse where the official records of each student's grades are maintained. Colleges and universities need to register in the Academic Bank of Credit scheme. If a student discontinues studies in between, he/she will be awarded a certificate, diploma, or degree based on the earned credits. Upon passing the first year, a certificate will be given; a diploma on passing the second year and a degree upon completing the three-year course. It functions like a commercial bank.

THE VIEWS EXPRESSED BY THE AUTHOR ARE PERSONAL

IN-DEPTH

"ERA OF GLOBAL BOILING" A NEW IN CLIMATE CHANGE

United Nations Secretary-General Antonio Guterres couldn't have made it starker. The era of global warming is over, the era of global boiling has arrived, he said after July, which still has a few days to go, was declared as the hottest month on record. To add to the global concern Guterres said, "And it is just the beginning." To prevent global temperature rise above the pre-industrial era and "avoid the worst of climate change, dramatic, immediate" climate action was needed. That is where sincere human effort is lacking as development pushes climate change on the back-burner. And nobody seems "terrified" beyond routine comments on high temperature and less or more rain not realising that not enough is being done about greenhouse gases and pollution.

The developmental push requires cutting swathes of dense forests which can't be replaced by planting of saplings. What's disconcerting is the marine heat wave with temperature from a buoy in Florida showing 38 degrees Celsius.

PAK PUSHING DRUGS, ARMS IN PUNJAB

That Pakistan was pushing drugs and arms into Punjab was known to the governments of India and Punjab. The troublesome neighbour neither admitted to its role nor did it ever try to stop it. For the first time Prime Minister Shehbaz Sharif's aide Mohd. Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins India border.

With uninhibited peddlers operating from across the border Punjab has become notorious for having the most number of drug addicts among all Indian states. The movie Udta Punjab tried to highlight the problem but nothing much was done to curb it. The drug that lands undetected is believed to be sent to Haryana, Himachal Pradesh, Rajasthan and Jammu. Police and political patronage have ensured that the drug trade in Punjab continues to flourish.

> Ahmad Khan has admitted in a TV interview to a Pakistani journalist that Pakistani drug peddlers were using drones to smuggle drugs into Punjab. He might as well have admitted sending arms via drones but he did not. The downing of drones and seizure of drugs and weapons from Kasur, a constituency which Khan represents and which adjoins the India border

This year 260 kg of heroin and 30 Pakistani drones are reported to have been recovered by the BSF along with 19 arms and 470 rounds of ammunition. In the Ferozepur district 795 FIRs were reportedly registered under the NDPS Act between July 2022 and 2023. Pakistan's ulterior motives of destabilising India by pushing drugs and weapons and fanning the Khalistani movement have been exposed. For good neighbourly relations and to win India's trust the Pakistani government must desist from such devious means.

TOP TWEETS

On this #WorldNatureConservationDay, let's celebrate and cherish our beautiful planet today and every day. Together, we can make a positive impact by preserving biodiversity, protecting wildlife, and embracing sustainable practices.

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

Tomorrow, 29th July, is a special day for all of us. Hon. PM @narendramodi ji will inaugurate the Akhil Bharatiya Shiksha Samagam to commemorate #3YearsOfNEP. Three years of NEP has witnessed several firsts and has brought many transformations in our learning landscape. This two-day Samagam, a 'Shiksha Mahakumbh', will bring all stakeholders together in the #yagya of making India a 21st century knowledge economy.

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

SPIRITUAL SPEAK

Calmness, gentleness, silence, self-restraint, and purity: these are the disciplines of the mind.

BHAGAVAD GITA

• Vol 5 • Issue No. 53 • RNI NO. RAJENG/2019/77764. Printed and published by Anita Hada Sangwan on behalf of First Express Publishers. Printed at Bhaskar Printing Press, D.B. Corp Limited, Shivdaspura, Tonk Road, Jaipur. Published at 304, 3rd Floor, City Mall, Bhagwan Das Road, C-Scheme, Jaipur-302001, Rajasthan. Phone 0141-4920504. Editor-In-Chief: Dr Jagdeesh Chandra Editor: Anita Hada Sangwan responsible for selection of news under the PRB Act

pro@cug.ac.in
जनसंपर्क अधिकारी
Public Relations Officer
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Gujarat

RNI No. GUJGUJ/2011/41611

TG તપોભૂમિ ગુજરાત

TAPOBHUMI GUJARAT (DAILY-AHMEDABAD)

દૈનિક - અમદાવાદ

માલિક, મુદ્રક, પ્રકાશક, તંત્રી : મૌલિક પ્રવિણચંદ્ર ભટ્ટ વર્ષ- 13 અંક- 13 તા. 27-07-2023 ગુરૂવાર કિંમત: ₹ 1/- પાના : 04 E-mail tapobhumigujarat@gmail.com

રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણ અને સર્વાંગી વિકાસનો માર્ગ મોકળો કરી રહી છેઃ પ્રો. રમાશંકર દુબે

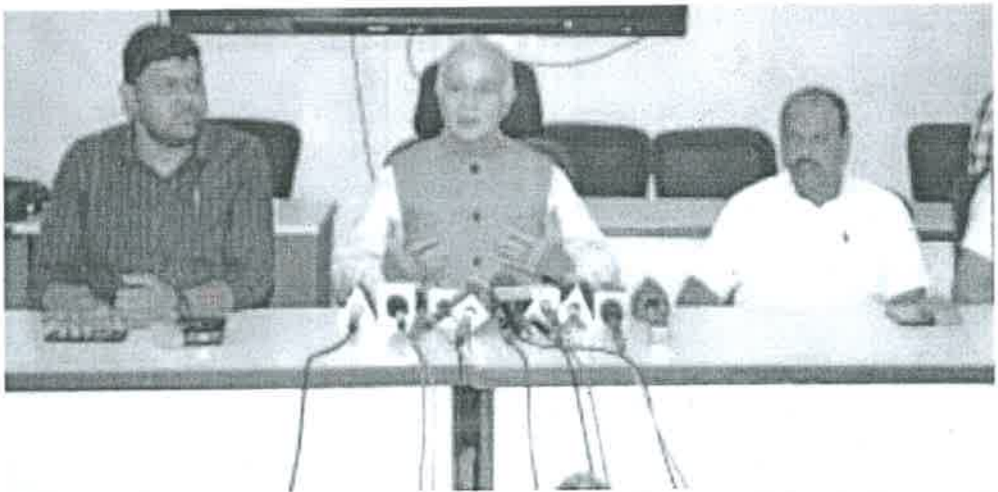

ગાંધીનગર. ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં દેશની સમૃદ્ધ પ્રતિભા અને સંસાધનોનો ઉપયોગ કરીને વ્યક્તિ, સમાજ અને રાષ્ટ્રના વિકાસ માટે કાર્ય કરવામાં આવે છે. ભારત વિશ્વમાં સૌથી યુવા વસ્તી ધરાવતો દેશ છે. દેશના યુવાનોને ગુણવત્તાયુક્ત શૈક્ષણિક તકો પૂરી પાડીને જ આત્મનિર્ભર ભારતની કલ્પના સાકાર થઈ શકે છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ એ આ વિઝનને સાકાર કરવા માટે મજબૂત પાયો નાખ્યો છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિએ સમાવેશક અને ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણને સુનિશ્ચિત કરવા અને જીવનભર શીખવાની તકોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે કાર્યક્ષમ માર્ગ મોકળો કરવા માટે કામ કર્યું છે. નેશનલ એજ્યુકેશન પોલિસીને ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થયા હોવાથી, ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ **NEP**ના ઘણા મુખ્ય મુદ્દાઓને અમલમાં લાવવામાં સફળતા હાંસલ કરી છે.યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. રમાશંકર દુબેએ બુધવારે એક પત્રકાર પરિષદમાં જણાવ્યું હતું કે વ્યક્તિના સંપૂર્ણ વિકાસની કલ્પનાને સર્વગ્રાહી શિક્ષણ દ્વારા જ સાકાર કરી શકાય છે. રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ ૨૦૨૦ સમગ્ર વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે વરદાન સાબિત થઈ રહી છે. છેલ્લા ત્રણ વર્ષમાં રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિના ઘણા મુદ્દાઓ યુનિવર્સિટીમાં લાગુ કરવામાં આવ્યા છે, જેમાં નીચેના મુદ્દાઓનો સમાવેશ થાય છે.સર્વગ્રાહી શિક્ષણનો સમાવેશઃ વિદ્યાર્થીને શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું જ્ઞાન માત્ર શૈક્ષણિક જ્ઞાન માટે જ નહીં પરંતુ તેમના શારીરિક, માનસિક, ભાવનાત્મક, નૈતિક અને સામાજિક જ્ઞાનમાં વધારો કરવા માટે અત્યંત જરૂરી છે. ગુજરાતની સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીએ સ્નાતક અને અનુસ્નાતક સ્તરે દરેક સેમેસ્ટર માટે બે ક્રેડિટ કોર્સ લાગુ કર્યા છે. આની મદદથી વિદ્યાર્થીઓને માત્ર અભ્યાસક્રમનું જ નહીં પરંતુ સમગ્ર શિક્ષણનું પણ સંપૂર્ણ જ્ઞાન મળી રહ્યું છે.

બે ક્રેડિટના ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી અભ્યાસક્રમ : યુનિવર્સિટી દ્વારા મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સ પણ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. જેમાં નાના વૈકલ્પિક અભ્યાસક્રમોમાં ૧૬ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ શરૂ કરવામાં આવ્યા છે. વાઈસ ચાન્સેલરે માહિતી આપી હતી કે દરેક કાર્યક્રમને ૨ ક્રેડિટનું વેઈટેજ આપવામાં આવ્યું છે. યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થીઓ તેમની રુચિ મુજબ આ મલ્ટિડિસિપ્લિનરી પ્રોગ્રામ્સમાં પ્રવેશ લઈ રહ્યા છે.